प्रयागराज, गुरुवार, 8 दिसम्बर, 2022

मार्ग शीर्ष, शुक्ल पक्ष 15, वर्ष 11, अंक 229, पृष्ठ 12, मूल्य : 5.00

परख सच की

जनसंदेश टाइम्स

प्रयागराज, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

अंदर- काम नहीं आई रोहित की पारी रोमांचक मुकाबले में हारा भारत

अंदर- गोदौलिया चौराहे पर गूंजा कैमरा, एक्शन और कट...

नगर संस्करण

E-paper : www.jansandeshtimes.net | Portal : www.jansandeshtimes.news

भाजपा के हाथ से फिसली दिल्ली

अब हुई 'आप' के हवाले, बोले केजरीवाल–हमें पीएम का भी आशीर्वाद चाहिए

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली नगर निगम के चुनाव में बहुमत हासिल कर लिया है. इसके साथ ही एमसीडी में बीजेपी 15 साल बाद बाहर हो गई है। अरविंद केजरीवाल के तीन बार दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने के बाद ये पहला मौका है जब एमसीडी पर भी आप का कब्जा हो गया है।

दिल्ली नगर निगम में पिछले 15 साल से काबिज भाजपा का पत्ता साफ हो गया है। आम आदमी पार्टी ने यहां बहुमत से जीत दर्ज की है। स्टेट इलेक्शन कमीशन के मुताबिक 250 सीटों वाले एमसीडी में आप को 134 सीटें मिली हैं, जो बहुमत से 8 ज्यादा हैं। वहीं भाजपा को 104, कांग्रेस को 9 और 3 सीटों पर निर्दलीय प्रत्याशियों की जीत हुई है। एमसीडी में आप की जीत पर सीएम अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की जनता को बधाई दी। पार्टी ऑफिस में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा- दिल्ली की जनता ने अपने बेटे और भाई को दिल्ली की सफाई

चुनाव परिणाम

कांग्रेस के 188, भाजपा के 10 कैंडिडेट की जमानज जब्त

भाजपा का वोट 0.6% बढ़ा आप का करीब 17%, दिग्गजों के क्षेत्र में आप पिछड़ी

और भ्रष्टाचार खत्म करने की जिम्मेदारी दी है। हमें केंद्र सरकार का भी सहयोग चाहिए। प्रधानमंत्री जी का भी आशीर्वाद चाहिए।

एमसीडी चुनाव में इस बार कांग्रेस का प्रदर्शन पिछले चुनाव की तुलना में बेहद खराब रहा। पार्टी के इस बार 9 प्रत्याशी ही जीत दर्ज कर पाए, जबकि 188 कैंडिडेट्स अपनी जमानत भी नहीं बचा पाएं। पिछले चुनाव में कांग्रेस 30 वार्डों में जीती थी। इसी तरह भाजपा के 10 और आम आदमी पार्टी के 3 उम्मीदवार इस बार अपनी जमानत नहीं बचा पाएं। 370 निर्दलीय उम्मीदवारों की जमानत

जब्त हुई है। इसी तरह बहुजन समाज पार्टी के 128, ठउढ के 25, ओवैसी की पार्टी के 13 उम्मीदवार अपनी जमानत नहीं बचा पाए। मटिया महल विधानसभा के चांदनी महल वार्ड से आम आदमी पार्टी के आले मुहम्मद इकबाल ने 17,134 वोटों के अंतर से चुनाव जीता। यह इस बार के चुनाव में जीत का सबसे बड़ा अंतर है। इकबाल को 19 हजार 199 मत मिले जबकि उनके निकटम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के मोहम्मद हामिद को 2065 मत मिले है। इसी तरह ग्रेटर कैलाश के चितरंजन पार्क वार्ड से आम आदमी पार्टी के आशु ठाकुर ने केवल 44 वोट से चुनाव जीता। आशु ठाकुर को 10 हजार 443 मत मिले जबकि उनकी निकटम प्रतिद्वंदी बीजेपी की कंचन चौधरी को 10 हजार 399 वोट मिले। इस चुनाव में चौंकाने वाली बात ये रही कि भाजपा का वोट पिछले चुनाव के मुकाबले 0.6% बढ़ा लेकिन 77 सीटें कम हो

आप के दफ्तर में पहले मायूसी, फिर जश्न

एग्जिट पोल में आप की जीत के बाद बुधवार सुबह से ही पार्टी के कार्यालय में गहमा–गहमी शुरू हो गई थी। ऑफिस को पीले और नीले गुब्बारों से सजाया गया। पिछली बार इन्हें सफेद और नीले कलर के गुब्बारों से सजाया गया था, पर जैसे ही रुझान आते रहे आप के दफ्तर में पहले जश्न, मायूसी फिर जश्न का माहौल दिखा। सुबह 8 बजे जैसे ही शुरूआती रुझान आए, भाजपा और आप में कड़ी टक्कर देखने को मिली। शुरूआती दो घंटे में दोनों दलों की सीटों में 10 से 20 सीटों का अंतर रहा। कभी भाजपा आगे तो कभी आप आगे दिखी। फिर सुबह 10.30 बजे के बाद हालात बदले और आप ने भाजपा पर बढ़त बना ली। कांग्रेस का दफ्तर सुबह से ही सूना रहा। दफ्तर के गेट पर ताला लगा दिखा। भाजपा कार्यालय में सुबह कोई बड़ा नेता नहीं दिखा।

गईं। पार्टी का वोट शेयर इस बार 39.09% रहा, जबकि पिछले चुनाव में उसे 39.03% लोगों ने वोट दिया था। इसी तरह आम आदमी पार्टी के वोट शेयर में पिछले साल के मुकाबले करीब 17% की बढ़ोतरी हुई। आप को इस बार 42.05% वोट मिले, जबकि पिछले चुनाव में उसे 25.08% मतदाताओं ने वोट दिया था। वहीं कांग्रेस को पिछली बार 21.02% वोट मिले थे, जो इस बार घटकर 11.68% पर पहुंच गया। अन्य ने पिछली बार 14.99% वोट शेयर के साथ 11 सीटें जीती थीं, हालांकि इस बार 7.18% वोट शेयर के साथ इस बार वे 3 सीट ही जीत पाएं। वहीं कुल 57 हजार 545 लोगों ने नोटा का इस्तेमाल किया यानि 0.78%। मनीष सिसोदिया के विधानसभा क्षेत्र में 4 सीटें हैं। भाजपा ने 3 पर जीत दर्ज की। आप के खाते में एक ही सीट आई। उधर, जेल में बंद सत्येंद्र जैन के विधानसभा क्षेत्र में 3 वार्ड हैं।

नोटबंदी के सभी दस्तावेज करें पेश

नई दिल्ली। देश की सर्वोच्च अदालत ने नोटबंदी लागू करने के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए बुधवार(7 दिसंबर) को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार द्वारा छह साल पहले (2016 में) लागू किए गए नोटबंदी के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक से नोटबंदी लागू करने के संबंधी रिकॉर्ड पेश करने को कहा है।

बता दें कि इस मामले की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस एस अब्दुल नजीर, बीआर गवई, एएस बोपन्ना, वी रामासुब्रमण्यम और बीवी नागरत्ना की बेंच ने की। पीठ ने पक्षकारों को 10 दिसंबर तक लिखित दलील पेश करने को कहा है। सुनवाई के दौरान बेंच ने कहा था कि वह सिर्फ इसलिए हाथ बांधकर नहीं बैठेगी क्योंकि यह एक आर्थिक नीति का फैसला है। कोर्ट ने कहा कि वह इस संबंधी फैसला लेने के तरीकों की जांच कर सकती है। बता दें कि इसी साल 12 अक्टूबर को नोटबंदी को लेकर दायर की याचिका पर वरिष्ठ

सुनवाई

आरबीआई और केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट का निर्देश

अधिवक्ता पी चिदंबरम की दलीलों के बाद सुप्रीम कोर्ट की बेंच सुनवाई के लिए सहमति जताई और अब पीठ ने केंद्र सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक को नोटबंदी का फैसला लेने से संबंधित दस्तावेज और रिकॉर्ड पेश करने को कहा है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नोटबंदी से जुड़े सभी रिकॉर्ड सीलबंद कवर में पेश किए जाएं। मालूम हो कि संविधान पीठ ने कहा कि मामले की सुनवाई हो गई और फैसला सुरक्षित रखा गया है। वहीं कोर्ट द्वारा रिकॉर्ड पेश करने पर अटॉर्नी जनरल ने पीठ के सामने कहा कि वह सभी दस्तावेजों को सीलबंद लिफाफे में अदालत में जमा करेंगे। इसके पहले 5 दिसंबर को भारतीय रिजर्व बैंक ने सुप्रीम कोर्ट को जानकारी दी थी कि देश में नोटबंदी लागू करने के दौरान सभी प्रक्रियाओं का पालन किया गया था।

मैनपुरी में किसकी होगी जीत? आज काउंटिंग

लखनऊ। मैनपुरी लोकसभा उपुचनाव के नतीजे आज शाम तक घोषित हो जाएंगे। इस चुनाव पर पूरे प्रदेश की नजर है। सुबह आठ बजे से सबसे पहले पोस्टल बैलेट मतपत्रों की गिनती राजपत्रित अधिकारियों द्वारा की जाएगी। मतगणना पूरी तरह पारदर्शी तरीके से कराई जाएगी। मतगणना की वीडियोग्राफी होगी।

मतगणना के लिए प्रत्येक पंडाल में 14-14 टेबल लगाई गई हैं। पोस्टल बैलेट, ईटीपीबीएस की गणना के लिए 28 टेबल लगाई गई हैं। टेबल पर प्रत्येक उम्मीदवार का एक एक गणना अभिकर्ता मौजूद रहेगा। प्रत्येक पंडाल में वीडियो ग्राफर मौजूद रहकर गणना प्रक्रिया की वीडियो रिकॉर्डिंग करेंगे। सीसीटीवी कैमरे 360 डिग्री पर कवर

उपचुनाव

सुबह आठ बजे से सबसे पहले पोस्टल बैलेट मतपत्रों की गिनती

करेंगे। पूरा गणना पंडाल सीसीटीवी की जद में रहेगा।

मतगणना पूरी तरह निष्पक्षता और पारदर्शी तरीके से कराने के लिए प्रेक्षक मतगणना स्थल पर मौजूद रहेंगे। सुरक्षा व्यवस्था के लिए अर्धसैनिक बलों के जवान, पीएसी के जवान मौजूद रहेंगे। स्ट्रंग रूम खोलते समय प्रत्याशी तथा उनके निर्वाचन अभिकर्ता मौजूद रहेंगे। इससे पूर्व बुधवार को जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह ने मतगणना स्थल का निरीक्षण किया।

हिमाचल रिजल्ट से पहले कांग्रेस की बड़ी कार्रवाई

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 के नतीजे सामने आने से ठीक एक दिन पहले कांग्रेस ने बड़ी कार्रवाई की है। हिमाचल के 30 नेताओं को पार्टी से निष्कासित कर दिया है। हिमाचल प्रदेश विधानसभा के लिए 12 नवंबर को एक चरण में चुनाव हुए थे। जिसमें भाजपा, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच सीधी टक्कर होने की संभावना जतायी जा रहा है। हिमाचल प्रदेश के 30 कांग्रेसी नेताओं को पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित किया गया। हिमाचल कांग्रेस अध्यक्ष ने पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए पार्टी के सभी नेताओं को अगले छह साल के लिए पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया। कांग्रेस पार्टी ने जिन 30 नेताओं को पार्टी से अगले 6 साल के लिए निष्कासित किया है, उसमें चौपाल ब्लॉक से लेकर जिला कांग्रेस कमेटी शिमला ग्रामीण के पदाधिकारी शामिल हैं।

महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमा विवाद पर संसद में हंगामा

सुप्रीम कोर्ट में मामला, विपक्ष न करे मुद्दे पर बात– बीजेपी एमपी

नई दिल्ली। संसद का शीतकालीन सत्र शुरू हो गया है और पहले दिन संसद में महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच जारी सीमा विवाद का मुद्दा भी गूंजा। एनसीपी नेता सुप्रिया सुले के बेलगावी सीमा विवाद का मुद्दा उठाने पर सत्तारूढ़ दल और विपक्ष के बीच घमासान शुरू हो गया। 6 दिसंबर को कथित रूप से महाराष्ट्र नंबर प्लेट की एक गाड़ी पर कर्नाटक सीमा पर हमला किया गया था। उन्होंने महाराष्ट्र के खिलाफ साजिश का आरोप लगाया और कहा कि पड़ोसी राज्य कर्नाटक के सीएम बिना मतलब की बातें कर रहे हैं।

एनसीपी नेता ने कहा कि पिछले दस दिनों में महाराष्ट्र में एक नया विवाद शुरू हो गया है। कल महाराष्ट्र के कुछ लोग कर्नाटक जाना चाहते थे लेकिन उनपर हमला किया गया। उन्होंने

शीतकालीन सत्र

एनसीपी नेता ने कहा कि पिछले दस दिनों में महाराष्ट्र में एक नया विवाद शुरू हुआ

महाराष्ट्र के खिलाफ साजिश का आरोप लगाते हुए कहा कि कर्नाटक के सीएम महाराष्ट्र को तोड़ने की बात कर रहे हैं। सुप्रिया सुले ने कहा कि दोनों ही राज्य बीजेपी द्वारा शासित हैं। महाराष्ट्र के लोगों को कल पीटा गया। इसकी इजाजत नहीं दी जानी चाहिए, यह एक देश है. उन्होंने इस मुद्दे पर गृह मंत्री अमित शाह से इंटरवेंशन की मांग की। सुप्रिया सुले के बयान पर बीजेपी सांसद शिवशंकर उदासी ने कहा कि महाराष्ट्र के विपक्षी नेता हेबिचुअल ऑफेंडर्स हैं,

यह उनकी असरुक्षा है। यह मामला सुप्रीम कोर्ट में है और बीजेपी सांसद ने कहा कि तबतक विपक्ष को इस मुद्दे पर बात करने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। निचले सदन में बहस में शामिल होते हुए शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के सांसद विनायक राउत ने कहा कि जिस तरह से कर्नाटक सरकार मराठी भाषी लोगों पर अत्याचार कर रही है वह अन्याय है। उन्होंने कहा कि वे मंत्रियों को आने से रोक रहे हैं! यह अन्याय है और महाराष्ट्र के लोगों के खिलाफ है। हम इसकी कड़ी निंदा करते हैं।

दुश्मनों पर कहर बरपाएंगे नई मिसाइल से लैस सुखोई–30

नई दिल्ली। भारत के खिलाफ षड्यंत्र करने वाले दुश्मनों की हिमाकत का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए भारतीय वायुसेना सुखोई (एसयू–30) लड़ाकू विमानों को नई मिसाइल से लैस कर रही है। स्वदेशी हाई स्पीड लो ड्रैग मिसाइल से लैस सुखोई (एसयू–30) लड़ाकू विमान दुश्मनों पर कहर बरपाने वाले हैं। यह मिसाइल वायु से सतह पर 250 किलोमीटर से अधिक की दूरी तक लक्ष्यों को मार गिराने में सक्षम है। मिसाइल एसयू–30 लड़ाकू विमानों की क्षमताओं को और बढ़ाएगी। स्वदेशी हाई स्पीड लो ड्रैग मिसाइल को रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन द्वारा विकसित किया जा रहा है। रक्षा सूत्रों ने बताया, 'नई हाई–स्पीड लो ड्रैग मिसाइल 250 किमी से अधिक के लक्ष्य को मार गिराने में सक्षम है।' इस मिसाइल के साथ वायु सेना और अधिक आक्रमक तरीके से दुश्मन के सैन्य शिविरों और आतंकी ठिकाने नेस्तनाबूद कर सकेगी। जैसा कि भारत ने वर्ष 2019 में बालाकोट आपरेशन के दौरान दुश्मन की सीमा में घुसकर उसे सबक सिखाया था। इसके साथ ही वायुसेना एसयू–30 को भी अपग्रेड करने पर भी काम कर रही है। ऐसे 85 विमानों को बेड़े में शामिल किया जाएगा। वायुसेना ने ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों को शामिल करके सुखोई–30 की क्षमताओं को पैमाने पर मजबूत किया है।

यूपी दुनिया के लिए मॉडल : मिलिंडा गेट्स

स्वास्थ्य पोषण और कृषि के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग को और बढ़ाने पर विचार–विमर्श

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके सरकारी आवास पर बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन की सह-संस्थापक मिलिंडा गेट्स ने शिष्टाचार भेंट की। गेट्स ने राज्य सरकार के साथ स्वास्थ्य पोषण और कृषि के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग को और बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया। मिलिंडा गेट्स ने कहा कि भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के लिए मॉडल है यूपी। मिलिंडा गेट्स ने कहा कि हाल के वर्षों में कोविड प्रबंधन और इंसेफेलाइटिस जैसी बीमारी पर नियंत्रण के लिए यूपी ने जैसा काम किया है वह एक अनुकरणीय मॉडल है। कोविड की चुनौतियों के बीच यूपी के सघन जनसंख्या घनत्व और विविध सामाजिक चुनौतियों का सामना यहां के नेतृत्व ने जिस प्रकार किया वह अत्यन्त

शिष्टाचार भेंट

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी से उनके सरकारी आवास पर बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन की सह-संस्थापक मिलिंडा गेट्स ने शिष्टाचार भेंट की

सराहनीय है। इतनी बड़ी और सघन आबादी के बीच वैक्सीनेशन का जैसा काम हुआ उससे दुनिया को सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि अंतिम व्यक्ति को ध्यान में रखकर स्वास्थ्य सुरक्षा वित्तीय समावेशन पोषण शिक्षा महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश की कोशिशें प्रेरणा देने वाली हैं। यूपी न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए मॉडल है। मिलिंडा ने कहा कि

स्वास्थ्य व सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में हम लंबे समय से यूपी में काम कर रहे हैं। यह खुशी की बात है कि समाज के सबसे कमजोर और अंतिम व्यक्ति तक हम सुविधा पहुंचाने में सफल हो पा रहे हैं। आने वाले समय में हम यूपी के साथ अपने संबंधों को और बेहतर करने की मंशा रखते हैं। मिलिंडा गेट्स ने यूपी में प्रभावी ढंग से लागू डिजिटल बैंकिंग सिस्टम की भी सराहना की। मिलिंडा ने कहा कि उत्तर प्रदेश में विकास की अपार संभावनाएं हैं। विगत वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर की बेहतरी के लिए जैसा कार्य किया है वह अभूतपूर्व है। उत्तर प्रदेश का विकास शानदार है उसकी दिशा सही है। इसकी जितनी सराहना की जाए कम है।

इस मौके पर सीएम योगी ने कहा कि यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि भारत की आजादी के अमृत वर्ष में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत को दिसंबर 2022 से दिसंबर 2023 तक विश्व के बड़े राष्ट्रों के समूह जी-20 की अध्यक्षता करने का सुअवसर मिला है। उन्होंने कहा कि बीएमजीएफ के कार्यों को उन्होंने नजदीक से देखा है। स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन का सराहनीय योगदान रहा है। कोविड की चुनौतियों के बीच फाउंडेशन की ओर से यूपी को लॉजिस्टिक्स और टेक्निकल सपोर्ट मिला। हम इसके लिए फाउंडेशन के प्रति आभारी हैं। ***एजेंसी***

धनखड़ के मार्गदर्शन में नए मानक स्थापित करेगा सदन : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्यसभा के सभापति के रूप में उच्च सदन के संचालन की जिम्मेदारी संभालने पर बुधवार को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को शुभकामनाएं दी और उनकी किसान पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सदन का सौभाग्य है कि उसे उनके जैसा जमीन से जुड़ा नेतृत्व मिला है। उप राष्ट्रपति बनने के बाद जगदीप धनखड़ ने संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन बुधवार को पहली बार राज्यसभा की कार्यवाही का संचालन किया। उपराष्ट्रपति राज्यसभा के पदेन सभापति होते हैं। इस अवसर पर धनखड़ का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्वास जताया कि उनके मार्गदर्शन में राज्यसभा अपनी विरासत को न केवल आगे बढ़ाएगी बल्कि उसे नई ऊंचाई भी देगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि

पीएम की उम्मीद

धनखड़ ऐसे समय में जिम्मेदारी संभाल रहे हैं जब भारत को जी-20 की मेजबानी का दायित्व मिला

धनखड़ राज्यसभा के सभापति के रूप में ऐसे समय में जिम्मेदारी संभाल रहे हैं जब भारत को जी-20 की मेजबानी का दायित्व मिला है और वह आजादी के 75 साल के बाद के सफर पर आगे निकला है। उन्होंने कहा कि यह कालखंड विकसित भारत के निर्माण का साक्षी तो बनेगा ही साथ ही भारत इस दौरान विश्व के भविष्य की दिशा तय करने में भी बहुत अहम भूमिका निभाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने उम्मीद जताई कि इस यात्रा में भारतीय संसदीय व्यवस्था की भी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

बाबा साहब के सपनों के भारत का करेंगे निर्माण: बाबू सिंह

करमा ब्लॉक के पगिया गांव में आयोजित श्रंद्धाजंलि सभा में सरकार पर बोला हमला

श्रद्धांजलि सभा

सबके वोट की कीमत बराबर तो एक समान अधिकार व सम्मान भी मिलना चाहिए

जनसंदेश न्यूज

सोनभद्र। जन अधिकार पार्टी की बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण के उपलक्ष्य में करमा ब्लाक के पगिया में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री बाबू सिंह कुशवाहा ने अब तक की सरकारों पर जमकर हमला बोला। कमेरा वर्ग से अपने हक की लड़ाई के लिए आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि जब तक सभी जाति, धर्म, संप्रदाय को उनकी संख्या के अनुपात में हिस्सेदारी मिलनी नहीं शुरू हो जाती, तब तक बाबा साहेब का सपना सही मायने में साकार नहीं हो सकेगा।

मुख्य अतिथि बाबू सिंह कुशवाहा ने कहा कि बाबा साहब को जब मौका मिला तो उन्होंने ऐसे

सोनभद्र में सभा को संबोधित करते जअपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू सिंह कुशवाहा

संविधान का निर्माण किया जिसमें न कोई उंच न कोई नीच बल्कि सबको एक बराबर अधिकार और सम्मान दिया। सबके वोट की कीमत बराबर तय की। राजा का बेटा ही राजा होगा, इस परंपरा को समाप्त कर जनता को अपना राजा चुनने का अवसर दिया लेकिन आजादी के 74 साल व्यतीत होने के बावजूद, अभी तक संविधान निर्माण से जुड़ी उनकी भावना पूर्ण रूप से लागू नहीं हो पाई है। अब तक की सरकारों पर हमला बोलते हुए कहा कि संविधान में अनेकों संशोधन कर लोगो के हक-अधिकारों पर डाका डाला गया। जबकि डा. अंबेडकर की मंशा रही कि लोगों को संख्या के अनुपात में, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हिस्सेदारी मिले। जन अधिकार पार्टी चाहती है कि संख्या के अनुपात में हर जाति, धर्म और संप्रदाय के लोगो को हिस्सेदारी मिले ताकि समाज के आखिरी व्यक्ति के होठों पर भी मुस्कान देखने को मिल सके। बाबा साहब का सपना पूरा करना है तो शोषितों, गरीबों, किसानों, मजदूरों और कमेरा वर्ग को एक साथ एक मंच पर आकर अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। जन अधिकार पार्टी सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं बल्कि सत्ता के साथ व्यवस्था परिवर्तन के लिए संघर्ष कर रही हैं। इस मौके पर निर्वतमान मंडल अध्यक्ष डा. भागीरथी सिंह मौर्य, जिलाध्यक्ष आदित्य मौर्य, महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश महासचिव रानी सिंह, कृष्णा सिंह मौर्य, प्रदीप चौहान, मो. अमीन, नागेंद्र सिंह, प्रदीप मौर्य, राजकुमार, चंद्रमा सिंह, विजय कुमार, राजेंद्र पनिका, अनिल वर्मा, गिरिजा सिंह, सुनील कुमार, कल्लू भारती, प्रशांत भारती, मोतीलाल, राजनाथ, अनिल आदि मौजूद रहे। अध्यक्षता मुलायम सिंह मौर्य ने और संचालन जिला महासचिव रविरंजन शाक्य ने किया।

कांग्रेस की अगुआई वाली बैठक में 'आप' व तृणमूल के नेता

चर्चा

मल्लिकार्जुन खड़गे का बढ़ा उत्साह, आश्चर्यजनक रही आप और टीएमसी की उपस्थिति

नई दिल्ली। संसद का शीतकालीन सत्र शुरू होने से पहले 7 दिसंबर की सुबह कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने विपक्षी नेताओं के साथ बैठक की। यह बैठक सदन में सरकार को घेरने की रणनीति बनाने के लिए थी। बैठक में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के नेता भी पहुंचे। इन नेताओं की बैठक में मौजूदगी हैरान करने वाली थी, क्योंकि ऐसे संकेत थे कि कांग्रेस की किसी पहल में आप या तृणमूल कांग्रेस सहयोगी बनने की इच्छा नहीं रखतीं। खड़गे के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद

यह संसद का पहला सत्र है। ऐसे में जग जाहिर है, उनकी अगुआई में मंत्रणा बैठक में आप और तृणमूल जैसे विपक्षी दलों की मौजूदगी उनका उत्साह बढ़ाने वाला रहा। शीतकालीन सत्र की रणनीति को लेकर बुधवार को संसद में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे के चैंबर में विपक्षी नेताओं की बैठक हुई। लंबे समय के बाद तृणमूल कांग्रेस विपक्ष की बैठक में हिस्सा ले रही है। आम आदमी पार्टी भी बैठक में शामिल हुई। संसद का शीतकालीन सत्र 7 दिसंबर 2022 से शुरू होकर 29 दिसंबर तक चलेगा। गुजरात चुनाव कार्यक्रम के कारण सत्र में एक महीने की देरी हुई थी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने संसद के शीतकालीन सत्र के लिए संयुक्त रणनीति तैयार करने के लिए संसद में विपक्षी दलों की बैठक बुलाई थी, जिसमें आम आदमी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस की उपस्थिति एक आश्चर्य के रूप में सामने आई क्योंकि दोनों दलों ने लंबे समय से संसद में कांग्रेस के नेतृत्व वाले किसी भी मूवमेंट में शामिल होने से इनकार किया है।

विद्यालय परिसर में बिना परमीशन 111 हरे पेड़ काटने से मचा हड़कंप

हड़कंप

- मंडलीय राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय परिसर में काटे गये पेड़
- झाड़ियों की साफ सफाई के नाम पर सैकड़ों हरे शीशम के पेड़ कर दिए गए जमीदोज
- जांच करने पहुंचे जिला समाज कल्याण अधिकारी

पेड़ों के कटने की जानकारी पर जांच करने पहुंचे जिला समाज कल्याण अधिकारी

करछना। झाड़ियों की साफ-सफाई के नाम पर लाखों रूपए के कीमती शीशम के हरे पेड़ों को काट कर बेचने की तैयारी में खेल किया गया बुधवार को ट्रक से लोड करके ठिकेदार द्वारा बाहर भेजने की तैयारी में वहा का प्रधानाचार्य ने जैसे लकड़ी ठिकाने लगाने का काम शुरू किया तभी वहां के गार्ड ने सूचना उच्च अधिकारियों को दी तो मामला गंभीर होने की जानकारी होने पर समाज कल्याण विभाग के अधिकारी तत्काल करछना क्षेत्र स्थित खांई मंडलीय आश्रम पद्धति विद्यालय खाई पहुंचे वहां का नजारा देख स्तंभ रह गए जहां पर साफ-सफाई के नाम पर हरे पेड़ों की कटाई किए जाने से हड़कंप मच गया। इसकी जानकारी ग्रामीणों को हुई तो लोग इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों से की। जानकारी मिलते ही जिला समाज कल्याण अधिकारी त्रिनेत कुमार सिंह विद्यालय पहुंचे और जांच पड़ताल की तो पाया गया कि प्रधानाचार्य द्वारा सफाई के नाम पर 111 हरे पेड़ों की कटाई करवा दी गई है। उन्होने इसकी जानकारी वन विभाग सहित एसडीएम और निदेशक को भी दी। समाज कल्याण अधिकारी ने विद्यालय में पठन-पाठन के बारे में जानकारी लेते हुए बच्चों से मिलने वाली सुविधा आदि के बारे में भी जानकारी ली। जहां बच्चों द्वारा यह बताया गया कि कक्षा 6,7 और 8 की किताबे अभी तक नही उपलब्ध हो पाई है। जिससे उन्हे पठन-पाठन में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। साथ माध्यन भोजन भी ठीक से न मिलने की बात कही।

एसपीएन सिंह के प्रयास से बेदौली और ओनौर के सड़कों पर कार्य शुरू

मेजा। भाजपा नेता व पूर्व प्रत्यासी विधान सभा करछना एसपीएन सिंह के अथक प्रयास से मेजा विधान सभा के दो गाँवो के सम्पर्क मार्ग में कार्य शुरू हो गया । भाजपा नेता के इस प्रयास की ग्रामीणों ने सराहना किया ।

गौरतलब हो कि विधान सभा मेजा के माण्डा ब्लाक स्थित बेदौली गाँव मे और उरुवा ब्लाक के ओनौर गाँव मे सम्पर्क मार्ग का निर्माण होना था लेकिन विवाद के कारण दोनों सड़कों पर कार्य नहीं शुरू हो पा रहा था । इसकी जानकारी जैसे ही करछना के भाजपा नेता एसपीएन सिंह को हुई वह तत्काल विवाद सुलझाने में लग गए उनके अथक प्रयास से विवाद समाप्त हुआ और दोनों सड़कों में कार्य शुरू हो गया । भाजपा नेता के इस प्रयास से क्षेत्रीय लोगों के साथ ग्रामीणों ने सराहना किया कि इनके प्रयास से लोगों को अब आवागमन में दिक्कत नहीं होगी।

'बिना पैसा दिए नहीं मिलेगा सरकारी आवास'

आरोप

- ब्लाक प्रमुख बहरिया ने ग्राम पंचायत अधिकारी के ऊपर कार्यवाही करने के लिए डीपीआरओ को लिखा पत्र

बहरिया। ब्लाक बहरिया में तैनात कुछ भ्रष्ट अधिकारी खुले तौर से यह ग्रामीणों से कहते हैं। कि जब तक वह पैसा नहीं देंगे तब तक उनको आवास नहीं दिया जाएगा। पैसा ना देने पर अपात्र घोषित करके आवास से वंचित रखा जाएगा। ऐसी घटना बराबर ब्लाक बहरिया से संबंधित कुछ भ्रष्ट अधिकारियों के चलते हो रही है। इसी के तहत एक मामला बहरिया विकास खंड के ग्राम पंचायत रामगढ़ कोठारी का आया है। जहां नियुक्त ग्राम पंचायत अधिकारी बिरेंद्र प्रकाश के ऊपर रामगढ़ कोठारी निवासी विनय मिश्रा पुत्र राम मटुक मिश्रा नें आरोप लगाया है। कि बिरेन्द्र प्रकाश नें आवास देने के लिए दस हजार रुपए की मांग की है पैसा न देने पर अपात्र घोषित करनें की धमकी बार-बार दी जा रही है। जिसे आजीज आ कर विनय मिश्रा नें इसकी लिखित तहरीर ब्लाक प्रमुख बहरिया को देकर ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की है। इसी क्रम में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अनिल कुमार पटेल ने ब्लाक प्रमुख बहरिया को एक लिखित प्रार्थना पत्र देते हुए कहा है। कि ग्राम पंचायत अधिकारी ने हमारे ग्राम सभा में आवास संबंधी जांच के लिए गए थे और गांव के कई लाभार्थियों से पैसा मांगा है। जिस संबंध में ब्लॉक प्रमुख शशांक मिश्रा का कहना है। कि हम पूरी तरीके से बहरिया ब्लाक को भ्रष्टाचार मुक्त करना चाहते हैं। रामगढ़ कोठारी में नियुक्त ग्राम पंचायत अधिकारी बिरेंद्र प्रकाश के खिलाफ हमनें लिखित रूप से डीपीआरओ को प्रार्थना पत्र दिया है। जिसकी जांच कराकर ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों के ऊपर कडी से कड़ी कार्यवाही करने के लिए उच्च अधिकारियों से अनुरोध किया है।

ट्रेन की चपेट में आने से वृद्धा की मौत

नैनी। औद्योगिक थाना क्षेत्र के मसिका गांव के समीप बुधवार की सुबह ट्रेन की चपेट में आने से एक वृद्ध महिला की मौत हो गई। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया।

मिली जानकारी के अनुसार औद्योगिक थाना क्षेत्र के मसिका गांव के समीप बुधवार की सुबह तकरीबन 8:00 बजे रेही कला गांव निवासी विमला देवी (65) वर्षीय पत्नी त्रिभुवन नाथ कही जा रही थी। रेलवे क्रॉसिंग के समीप रेलवे लाइन पार करते समय वह ट्रेन की चपेंट में आ गई। जिससे घटनास्थल पर ही उसकी दर्दनाक मौत हो गई। उसके मौत की जानकारी मिलते ही घर में कोहराम मच गया। रोते बिलखते परिजन घटनास्थल पर पहुंचे। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया। पुलिस के अनुसार मृतक के परिजन उसे मानसिक रूप से विक्षिप्त बता रहे थे। वह सारा दिन इधर-उधर भटकती रहती थी।

संक्षेप

महिला को पीटने पर दो के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। घर में घुस कर महिला को मारा पीटा गया। जख्मी महिला ने दो के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम हटिया तिलई बाजार निवासनीय कंचन तिवारी पत्नी अरुण का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर जब वह घर में काम कर रही थी तभी उनके विपक्षी घर में घुस आए और मारे पीटे एंव जान से मारने की धमकी भी दिए और गालियां देते हुए चले गए। कंचन तिवारी ने मऊआइमा थाने में मनोज तिवारी ,देवी प्रसाद तिवारी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है ।

सीढ़ी से फिसलकर गिरने से मौत

सहसों। थरवई थाना क्षेत्र के जगदेवपुर बरेठी गांव निवासी धर्मेंद्र सिंह 42 वर्ष पुत्र शारदा सिंह मंगलवार की रात खाना खाने के पश्चात छत पर सोने के लिए जा रहे थे। अचानक सीढ़ी से फिसल कर गिर गए। जिससे उनके सिर में गंभीर चोट लग गई। चोट लगने के पश्चात परिजन उन्हें लेकर प्रयागराज इलाज के लिए प्रयागराज ले गये जहां पर चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। शारदा सिंह के इकलौते पुत्र होने के नाते पिता तथा मा दहाड़े मार-मार कर रो रही हैं वहीं पर पत्नी नीतू रो रो कर बेहोश हो जा रही थी। अचानक युवक की मौत से परिजन तथा गांव वाले शोक संतप्त हैं।

मजबूत लोकतंत्र हेतु मतदान जरूरी : प्रदीप

करछना। मतदान हमारा सबसे बड़ा नैतिक और संवैधानिक अधिकार है।अपने देश के मजबूत लोकतंत्र हेतु इसके लिए अर्हता प्राप्त सभी लोगों को चाहिए कि मतदान प्रक्रिया में भाग लेकर एक स्वस्थ्य लोकतंत्र में अपनी भागीदारी निभाएं। बच्चे भी अपने घर,पास पड़ोस और गांव के लोगों को मतदान हेतु जागरूक करते हुए इसके सहभागी बनें।यह बातें क्षेत्र के रामपुर स्थित श्री बृज मंगल सिंह इ.का.में बुधवार को आयोजित मतदाता जागरूकता निबन्ध प्रतियोगिता के पूर्व प्रार्थना सभा स्थल पर प्रभारी प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार ने कही।शिक्षक मो.परवेज सिद्दीकी,जगत पाल और सुधा सिंह ने भी बच्चों को मतदान का महत्व बताते हुए जागरूकता के प्रति प्रेरित किया। इसके उपरांत आयोजित प्रतियोगिता में ४६बच्चों ने प्रतिभाग किया। छात्रा चंचल द्विवेदी पहले स्थान पर रही जबकि कक्षा१२की डॉली मिश्रा को दूसरा स्थान मिला। प्रतियोगिता के दौरान प्रवक्ता जीतेन्द्र कुमार,एनसीसी अधिकारी रमेश चंद्र तिवारी,चन्द्र शेखर सिंह,सुरेश कुमार, विजय सिंह समेत शिक्षक और बच्चे मौजूद रहे।

हरिओम हास्पिटल में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर मे 325 ने कराई जांच

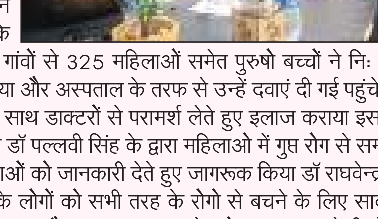

करछना। तहसील क्षेत्र के भरहा गांव स्थित हरिओम हास्पिटल के संचालक डॉ नन्द कुमार गुप्ता के द्वारा बुधवार को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया इस मौके पर क्षेत्र के आसपास गांवों से 325 महिलाओं समेत पुरुषो बच्चों ने निः शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कराया और अस्पताल के तरफ से उन्हें दवाएं दी गई पहुंचे लोगों ने मुक्त जांच के साथ साथ डाक्टरों से परामर्श लेते हुए इलाज कराया इस मौके पर महिला चिकित्सक डॉ पल्लवी सिंह के द्वारा महिलाओ में गुप्त रोग से सम्बंधित रोगो के बारे में महिलाओं को जानकारी देते हुए जागरूक किया डॉ राघवेन्द्र शर्मा के द्वारा बताया गया कि लोगों को सभी तरह के रोगो से बचने के लिए सावधानी बरतने की जरूरत है खास तौर पर इस समय डेंगू रोग का खतरा तेजी से बढ़ा हुआ है उससे बचने के लिए आसपास की जगह को साफ सुथरा रखने की जरूरत है और आसपास गड्ढे में पानी इकट्ठा न होने दें जिससे अनेक तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है इस मौके पर शिविर में बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर योगेंद्र डॉ राकेश राय, डॉ सुनील विश्वकर्मा, डॉ मृत्युंजय सिंह यादव, डॉ राकेश शुक्ला, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ आकांक्षा राय, के साथ हरिओम हॉस्पिटल के निदेशक डॉ नंद कुमार गुप्ता सहित डा, मुकेश कुमार, रिशब तिवारी, महेंद्र प्रताप, अंकित, मोहन गुप्ता, उपेन्द्र,विनय कुमार, अशोक कुमार, प्रदीप कुमार का शिविर में सराहनीय योगदान रहा है कई तरह की बीमारियों की जांच मुफ्त मे की गई और दवा भी मुक्त वितरण किया गया

आर. के.कालेज ऑफ फार्मेसी द्वारा मोटिवेशनल कार्यक्रम आयोजित

नैनी। आर.के.ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के तत्वाधान में आर. के.कालेज ऑफ फार्मेसी द्वारा मोटिवेशनल कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका विषय था 'पावर ऑफ गोल' उक्त विषय पर मोटिवेशनल स्पीकर मुकेश कुमार सिंह द्वारा एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उक्त कार्यक्रम में छात्र छात्राओं के अलावा फार्मेसी प्राचार्य डॉ सी.एस.सिंह, कार्तिकेय मिश्रा, दिलीप कुमार, दीपक यादव, सुरेंद्र सिंह, सत्येंद्र, पंकज, नेहा, हर्षिता, प्रदीप, सैन कुमार, अमन एवं समस्त फार्मेसी स्टाफ उपस्थित रहे।

ब्लॉक दिवस में अनुपस्थित सचिव का बीडीओ ने काटा वेतन

बहरिया। विकासखंड बहरिया के सभागार में बुधवार के दिन ब्लॉक दिवस का आयोजन हुआ। जिसमें दो प्रार्थना पत्र हैंडपंप मरम्मत के विषय में आए तथा एक प्रार्थना पत्र ग्राम सभा बर्जी का आवास संबंधी आया। जिसमें खंड विकास अधिकारी ने संबंधित सचिव को फोन लगाकर उपस्थिति के विषय में पूछा तो पता चला कि वह ब्लॉक दिवस में ना उपस्थित होकर किसी अन्य कार्य बस बिना सूचना के गैर जनपद में है। जिस पर कार्यवाही करते हुए खंड विकास अधिकारी श्रीश गुप्ता ने संबंधित सचिव का एक दिन का वेतन काटने और कारण बताओ नोटिस जारी किया।

ईओ की कार ने ई-रिक्शा को मारी टक्कर, चार गंभीर

क्षतिग्रस्त कार

मऊआइमा। मऊआइमा के ओवरब्रिज पर ई-रिक्शा से अस्पताल जा रहे परिवार को पीछे से आयी ईओ की कार ने टक्कर मार दी। जिससे चार लोग बुरी तरह से जख्मी हो गए। जबकि ई-रिक्शा और कार क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस ने सभी घायलों को उपचार हेतु अस्पताल भेज दिया है ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रतापगढ़ के लल्लू (48) पुत्र इसराईल ग्राम मिजार्पुर चौहारी थाना रानीगंज ई-रिक्शा चालक है। लल्लू अपने ई-रिक्शा पर कन्हैया लाल मौर्या पुत्र निर्भय कुमार, अमरनाथ पुत्र निर्भय, संगीता पत्नी निवासी जलेशरगंज उदहा थाना अन्तू के परिवार को बैठा कर प्रयागराज अस्पताल जा रहे थे। बताते हैं कि जैसे ई-रिक्शा मऊआइमा के ओवरब्रिज पर पहुंचा पीछे से आ रही कर ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे कन्हैया लाल, अमरनाथ, संगीता और ई-रिक्शा चालक लल्लू बुरी तरह जख्मी हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भर्ती कर कटरा गुलाब सिंह प्रतापगढ़ की ईओ अंजू यादव के चालक शिवनारायण जायसवाल को कार सहित हिरासत में ले रखा है। जबकि कार भी क्षतीग्रस्त हो गई है।

नये कोटेदार के लिए खंड विकास अधिकारी से लगाई गुहार

सिकन्दरा। ब्लाक बहरिया के अंतर्गत एक गांव के कुछ ग्रामीणों नें मिलकर कोटेदार को बदलने के लिए खंड विकास अधिकारी से गुहार लगायी है। ग्राम पंचायत हसनपुर मयचक मंसूर निवासी नीरज पाल नें खंड विकास अधिकारी बहरिया के समक्ष लिखित तहरीर देकर यह आरोप लगाया है। कि ग्राम पंचायत में नियुक्त कोटेदार अहमदुन्निशा की मृत्यु हो चुकी हैं। जिसकी वजह से राशन का वितरण इस्तेखार द्वारा किया जा रहा है। जिससे अक्सर ग्रामीण परेशान रहते हैं। कोटेदार समय से राशन देनें में अस्मर्थ रहता है और लोगों से अभद्र भाषा का प्रयोग करता है। इस कारण नये कोटेदार को नियुक्त किया जाना अति आवश्यक है। जिससे ग्रामीणों को समय से राशन मिल सके।

सीएचसी पर लगा भ्रष्टाचार का आरोप

बैठक

- क्षेत्र पंचायत सदस्यों की बैठक
- गैर हाजिर कर्मचारियों के खिलाफ अधिकारियों से हुई शिकायत

बैठक में उपस्थित लोग

मऊआइमा। मऊआइमा विकास खंड के सभागार में खुली बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें बीडीसी और ग्राम प्रधानों तथा खंड विकास अधिकारी एंव ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि ने भाग लिए । विकास खंड में हुई बैठक में सबसे ज्यादा शिकायत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मऊआइमा की उठाई गई। आरोप लगाया गया कि स्वास्थ्य विभाग में डिलीवरी एंव रेबीज इंजेक्शन लगाने के लिए मोटी रकम की मांग की जाती है। बैठक में अनुपस्थित कर्मचारियों की शिकायत जिले के अधिकारियों से की गई। बैठक में 92 बीडीसी के स्थान पर 76 तथा 56 प्रधानों में 40 प्रधान उपस्थित रहे। कृषि विभाग, बिजली विभाग, पुष्टाहार, खाद्य एवं रसद विभाग के कर्मचारी तथा सीडीपीओ अनुपस्थित रहने का हवाला देते हुए स्पष्टीकरण के लिए शिकायत की गई।

अपने संबोधन में ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि इम्तियाज समी ने सभी बीडीसी सदस्यों और प्रधानों को सम्मान देने की बात कही। बैठक में मुख्य रूप से ब्लाक प्रमुख अफसरुन निशां, प्रतिनिधि इम्तियाज समी, बीडीओ श्याम नारायण चतुर्वेदी, सहायक विकास अधिकारी विजय बहादुर यादव, एडीओ आईएसबी राकेश कुमार, ग्राम प्रधान के महामंत्री अमजद अखिल, दिनेश कुमार मौर्य, रामाधार सरोज, रामराज, सद्दाम हुसैन, सरताज, दानिश, दिनेश कुमार, जितेंद्र कुमार मिथिलेश कुमार तथा दीपक यादव आदि मौजूद रहे।

डॉ० नीरज सिंह पटेल पुनः बने सीएचसी रामनगर के अधीक्षक

मेजा। डॉ. नीरज सिंह पटेल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर का पुनः अधीक्षक बनाया गया है। नीरज सिंह पटेल बुधवार को पदभार ग्रहण किया। श्री सिंह के पुनः चार्ज लेने पर क्षेत्रीय लोगों सहित स्टाफ में खुशी का माहौल है।

गौरतलब हो कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामनगर मे पूर्व में कार्यरत अधीक्षक डा० नीरज सिंह पटेल का स्थानान्तरण सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना हो गया था। डा०नीरज सिंह पटेल के स्थानान्तरण के बाद सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामनगर की स्वास्थ्य व्यवस्था प्रभावित हुई थी। डा० नीरज सिंह पटेल के स्थानान्तरण से जन समुदाय एवं समस्त सामु०स्वा० केन्द्र रामनगर का स्टाफ भी दुखी था उपरोक्त स्थिति को देखते हुए जनहित में पुनः डा० नीरज सिंह पटेल को सामु० स्वा0 केन्द्र रामनगर का अधीक्षक बनाया गया है। डा० नीरज सिंह पटेल की वापसी से समस्त सी०एच०सी० स्टाफ एवं जनसमुदाय मे खुशी का माहौल है, इस सम्बंध में ब्लाक कार्यक्रम प्रबंधक आशीष द्विवेदी द्वारा बताया गया की डा० नीरज सिंह पटेल के कुशल नेतृत्व से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामनगर हेल्थ डैसबोर्ड इंडिकेटर मे अप्रैल 2022 से अक्टूबर 2022 तक की अवधि में जनपद मे क्रमिक उपलब्धि मे प्रथम रैंक पर था परन्तु नवम्बर माह मे इनके स्थानान्तरण के उपरांत उपलब्धि मे गिरावट आयी, अधीक्षक महोदय के पुनः वापसी से रामनगर की उपलब्धि पुर्ववत की भांति प्रगतिशील होगी। डा० नीरज सिंह पटेल के पुनः अधीक्षक बनाये जाने पर मुख्य चिकित्साधिकारी प्रयागराज को जनमानस द्वारा आभार व्यक्त किया गया है। समस्त स्टाफ एवं जनमानस मे हर्षोल्लास का माहौल है।

रिपोर्ट लिखाने गए ग्राम प्रधान को एसओ ने डाट कर भगाया

बहरिया। सिलोखरा ग्राम प्रधान के ऊपर दबंगों ने दो बार जानलेवा हमला किया लेकिन पुलिस कोई कार्यवाही नहीं कर रही है। चार दिन से ग्राम प्रधान थाने का चक्कर लगा रहे हैं। लेकिन इसके बाद भी जब सुनवाई नहीं हुई तो ग्राम प्रधान ने इस बात की शिकायत क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल और बहरिया ब्लाक प्रमुख शशांक मिश्रा से की तो थानाध्यक्ष का पारा और गर्म हो गया। बुधवार को ग्राम प्रधान पन्ना लाल कनौजिया जब बहरिया थाने पहुंचे तो आरोप है कि थानाध्यक्ष रमेश सिंह उनको देखते ही भड़क गए और कहा कि थाना मैं चलाता हूं या ब्लाक प्रमुख शशांक मिश्रा। थानाध्यक्ष ने दोबारा न आने की हिदायत देकर ग्राम प्रधान को डांट कर भगा दिया। थानाध्यक्ष की कार्यशैली से ग्राम प्रधानों में आक्रोश है। ग्राम प्रधान संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष सत्येंद्र त्रिपाठी की अगुवाई में ग्राम प्रधान पुलिस कमिश्नर से मिलकर शिकायत करेंगे । सिलोखरा के ग्राम प्रधान पन्नालाल कनौजिया का आरोप है कि रविवार को तिराहे पर कुछ लोगों से बात कर रहा था तभी गांव के आधा दर्जन लोग लाठी डंडा लेकर हमला बोल दिया। लोगों के बीच-बचाव से किसी तरह से जान बची। हमलावर जाति सूचक शब्दों का प्रयोग किया और धमकी देते हुए चले गए। जिसकी शिकायत बहरिया थाने पर की गई। लेकिन पुलिस कार्यवाही के बजाय मामले को रफा-दफा करने में लग गई और सुलह के लिए दबाव बनाया। सुलह न होने पर रिपोर्ट दर्ज करने के बजाय पुलिस ने दबंगों के खिलाफ केवल शांति भंग की कार्यवाही कर अपना पल्ला झाड़ लिया। मंगलवार को दबंगों ने फिर ग्राम प्रधान पर हमला बोलकर धक्का-मुक्की की और जमकर अभद्रता की। ग्राम प्रधान की शिकायत पर पुलिस तीन लोगों को पकड़कर ले आई थी। लेकिन दो लोग पुलिस को चकमा देकर भाग निकले। ग्राम प्रधान का आरोप है कि दोबारा हमला होने के बाद भी पुलिस रिपोर्ट दर्ज नहीं कर रही है। दबंग उसका और उसके परिवार वालों का जीना मुहाल कर दिए हैं।

करछना ब्लॉक दिवस पर नहीं दिखे फरियादी

ब्लॉक दिवस पर उपस्थित अधिकारी

करछना। करछना में बुधवार को आयोजित ब्लॉक दिवस पर नहीं दिखे फरियादी खाली रह गई कुर्सियां उपस्थित अधिकारी खानापूर्ति कर चले गए बता दें कि सरकार की मंशा है कि ग्रामीणों को तहसील, थाना एवं ब्लाक स्तर पर होने वाली समस्याओं को उनके नजदीकी ही समस्याओं का समाधान कर दिये जाए इसीलिए सरकार माह में दो बार तहसील दिवस थाना दिवस व ब्लाक दिवस का आयोजन कराती है। इसी तर्ज पर पिछले महीने ब्लॉक दिवस का आयोजन प्रत्येक ब्लॉकों में कराया जा रहा है लेकिन ग्रामीणों को ब्लॉक दिवस की बहुत कम जानकारी है सूचना और जानकारी के अभाव में ब्लॉक दिवस की उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लग रहा है बुधवार को करछना ब्लॉक सभागार में आयोजित ब्लॉक दिवस पर दो तीन शिकायतें आई बाकी कुर्सियां खाली पड़ी रही जिसमें अध्यक्षता कर रहे एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा एवं एडीओ कोआपरेटिव सोनल शुक्ला पंचायत सचिव संजीव श्रीवास्तव, राज कपूर गौतम, आदित्य कुमार पौडवाल, कमल सिंह, मनीष सिंह, अमित यादव सचिवों के अलावा अतुल कुमार मिश्रा, दुष्यंत प्रताप सिंह ब्लाक कर्मी के अलावा कोई भी अन्य अधिकारी व फरियादी नजर नहीं आए।

मेड़ से आवागमन करते नौनिहालों को सुगम रास्ते की व्यवस्था नही

उरुवा। विकास खंड क्षेत्र उरुवा के प्राथमिक विद्यालय टेसहिया का पूरा प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के आवागमन हेतु सुगम मार्ग की सुविधा नही है। विद्यालय में आने जाने के लिए बच्चों को खेत के मेड़ का सहारा लेना पड़ता है। जिससे गुजरते समय अक्सर बच्चों का गिरना आम हो गया है। उपरोक्त विद्यालय के शिक्षकों को अपना वाहन भी दूसरों के घर पर रखना पड़ता है। प्राथमिक विद्यालय टेसहिया का पूरा के शिक्षक सरफराज हुसैन ने बताया कि पिछले दस वर्षों पूर्व बने इस विद्यालय के लिए रास्ते की मांग लिखित रूप से कई बार की गई है, लेकिन अभी तक कोई सुनवाई नही हुई।

रेलवे ट्रैक के किनारे मिला युवक का शव

बारा। यमुनापार के घूरपुर थाना क्षेत्र में एक युवक का शव रेलवे ट्रैक के किनारे पाया गया। राहगीरों के द्वारा रेलवे ट्रैक के किनारे शव देखे जाने की सूचना पुलिस तक पहुंची तो मौके पर मुकामी पुलिस भी पहुंच गई और छानबीन के बाद शव को कब्जे में लेकर चीरघर भेजा। समाचार प्रेषण तक शव की पहचान नहीं हो पाई थी। घूरपुर पुलिस के मुताबिक बुधवार को स्थानीय लोगों के द्वारा इरादतगंज रेलवे स्टेशन के समीप रेलवे ट्रैक के किनारे एक युवक का शव पाए जाने की सूचना मिली थी। इस सूचना पर मुकामी पुलिस और अधिकारी मौके पर पहुंचे। मामले की छानबीन की गई। मृतक के चेहरे पर चोट के निशान भी पाए गए। मृतक के शरीर पर एक अंडरवीयर के अलावा कोई अन्य कपड़ा नहीं था, जबकि पास ही कुछ सामान भी पड़ा मिला है। घूरपुर के प्रभारी निरीक्षक अश्वनी कुमार ने बताया कि मृतक के शरीर पर अंडरवीयर मिला है। जहां पर युवक का शव मिला, उसके समीप ही कुछ सामान पड़ा था। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि यह सामान उसी का होगा। काफी प्रयास के बाद भी शव की पहचान नहीं हो पाई है। पहचान के लिए आसपास के थानों की मदद ली जा रही है। फिलहाल शव को अज्ञात में ही चीरघर भेज दिया गया है।

एसीपी संग थानाध्यक्ष ने किया फ्लैग मार्च

फ्लैग मार्च करते एसीपी संग थानाध्यक्ष मांडा

माण्डा। नगर पंचायत चुनाव को देखते हुए भारतगंज कस्बें में फ्लैग मार्च किया गया जिसमें एसीपी विमल किशोर मिश्र व थानाध्यक्ष मांडा अरविंद कुमार गौतम ने पुलिस बल संग पैदल गश्त किया। भारतगंज कस्बा समुदाय बाहुल्य होने के कारण चुनाव में प्रशासन सतर्क नजर आ रहा है। प्रयागराज में कुछ पखवाड़े के पहले ही कमिश्नरेट सिस्टम लागू हुआ है जिसमें पुलिस अधिकारियों का पद व क्षेत्र भी बदला जा रहा है सर्कल कम होने के कारण एसीपी की निगरानी बढ गई है। इस अवसर पर वरिष्ठ उपनिरीक्षक रामकेवल यादव, चौकी प्रभारी भारतगंज दुर्गेश सिंह, उपनिरीक्षक अरुण कुमार शुक्ल, उपनिरीक्षक रामायण सिंह, उपनिरीक्षक जितेंद्र सिंह यादव व भारी संख्या में पुलिस प्रशासन मौजूद रहा।

रेलवे भर्ती प्रकोष्ठ
उत्तर मध्य रेलवे
नवाब यूसुफ रोड,बाल्मीकी चौराहा, प्रयागराज- 211001

वर्ष 2022-23 में सांस्कृतिक कोटा के अंतर्गत खुली भर्ती

रोजगार सूचना सं.: CQR 2022-23 दिनांक: 09/12/2022

ऑनलाइन आवेदन प्रारंभ तिथि: 10.12.2022 एवं
ऑनलाइन अंतिम तिथि: 01/01/2023 23:59 बजे तक

उत्तर मध्य रेलवे के प्रधान कार्यालय एवं मंडलों में सांस्कृतिक कोटा वर्ष 2022-23 में खुली भर्ती के तहत ग्रेड पे रु. 1900 एवं 2000/- (7 वें सीपीसी के बाद संशोधित वेतनमान पे मैट्रिक्स लेवल-02 एवं 03) में भर्ती के लिए न्यूनतम शैक्षणिक और सांस्कृतिक योग्यता रखने वाले उम्मीदवारों से नीचे दर्शाये गये विधाओं हेतु ऑनलाइन आवेदन अंतिम तिथि 01/01/2023 रात्रि 23:59 बजे तक आमंत्रित किए जाते हैं।

क्र. सं.	विधा	7 वें सीपीसी के पे मैट्रिक्स लेवल	पदों की संख्या	पदों को आवंटन
1	नर्तक (महिला)	पे मैट्रिक्स लेवल-2 एवं 3 (ग्रेड पे रु. 1900/- एवं 2000/-)	02 (दो)	उत्तर मध्य रेलवे पर

● उपरोक्त कोटा सभी श्रेणी के उम्मीदवारों हेतु हैं बशर्ते वे न्यूनतम योग्यता रखते हों। ● रोजगार सूचना, आवेदन पत्रों का प्रारूप एवं अन्य सभी विवरण, यथा शैक्षणिक योग्यता, आयु, भर्ती प्रक्रिया, परीक्षा शुल्क, आवेदन कैसे करें तथा अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएं रेलवे भर्ती प्रकोष्ठ/उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज के वेबसाइट www.rrcpryj.org एवं www.ncr.indianrailways.gov.in पर दिनांक 09.12.2022 से उपलब्ध है।

अध्यक्ष,
1646/22 (P) रेलवे भर्ती प्रकोष्ठ, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज

त्रैमासिक राजभाषा पत्रिका 'रेल संगम' के वाणिज्य विभाग विशेषांक का विमोचन करते हुए

प्रयागराज

मौसम

अधिकतम :	29.00
न्यूनतम :	15.00
सूर्योदय :	06.19
सूर्यास्त :	05.15

समाज सेवियों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा

करछना। सपा प्रदेश सचिव हिमांशु मिश्रा, प्रदेश सचिव मोहित यादव व पूर्व करछना विधानसभा अध्यक्ष विकास सोनी ने एसडीएम को ज्ञापन देते हुए अवगत कराया कि लिंक सड़क भीरपुर से लेकर भगनपुर तक (जो कि लगभग 15 से 20 गाँवो को आपस में जोड़ती है) और वीरपुर बाजार में बनी नाली की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ, सड़क जो कि काफी लम्बे समय से टूटी फूटी है और जिस पर जगह जगह काफी बड़े- बड़े गढ्ढे मौजूद है, उसकी मरम्मत के नाम पर ठेकेदारों ने सिर्फ बड़ी बड़ी बोल्डर डालकर उसे जर्जर हालत पर छोड़ दिया है और वीरपुर बाजार में बनी नाली का निकासी ना होने के कारण बाजार की हालत बद से बदतर हो गई है ।

निर्माण कार्यों को समयबद्धता एवं गुणवत्ता के साथ करें पूरा : जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में बुधवार को संगम सभागार में निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने यूपीआरएनएसएस, यूपी सिडको, आवास विकास, यूपीपीसीएल, राज्य निर्माण निगम लि0, सेतु निगम, गंगा प्रदूषण, लोक निर्माण विभाग, जल निगम, ग्रामीण अभियंत्रक आदि विभागों के द्वारा कराये जा रहे निर्माण कार्यों की विस्तार से समीक्षा की। जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को निर्माण कार्यों को उपलब्ध धन के सापेक्ष गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं होगी। उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारियों को निरंतर फील्ड भ्रमण कर कराये जा रहे निर्माण कार्यों का अनुश्रवण करने के निर्देश दिए है।

निर्माण कार्यों की समीक्षा करते जिलाधिकारी

जिलाधिकारी ने अधिशाषी अभियंता विद्युत को विभागों से समन्वय बनाकर विद्युत कनेक्शन आदि से सम्बंधित समस्याओं का तत्काल निराकरण कराये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने सरकारी भवन, हाईराइज बिल्डिंग, होटल, कोचिंग संस्थान व अस्पतालों में फायर सेफ्टी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने श्रृंगवेरपुर में बन रहे निषादराज पार्क में श्रमिकों की संख्या को बढ़ाकर कार्य को शीघ्रता से पूरा कराये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने एसटीपी के निर्माण कार्य को शीघ्रता से कराये जाने के लिए टीम गठित करने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी शिपू गिरि, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी जितेन्द्र कुमार सहित सभी सम्बंधित विभागों एवं कार्यदायी संस्था के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने के लिए कराएं रजिस्ट्रेशन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में 19 दिसंबर को आयोजित होने वाले 17 वें दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का कार्य विश्वविद्यालय ने प्रारंभ कर दिया है। मुख्यालय सहित प्रदेश के सभी 12 क्षेत्रीय केंद्रों पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की सुविधा दी गती है। पंजीयन व वेबसाइट समिति के समन्वयक डॉ संजय कुमार सिंह ने बताया कि 17 वें दीक्षांत समारोह में परीक्षा सत्र दिसंबर 2021 और जून 2022 में उत्तीर्ण छात्रों को उपाधियों का वितरण किया जाएगा। इन दोनों सत्रों में उत्तीर्ण परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड किए गए नामांकन पत्र को पूरी तरह से भरकर अपना नामांकन करा लें। उन्होंने बताया कि छात्र यथाशीघ्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नामांकन पत्र में अपना विस्तृत विवरण पूरित कर दें, जिससे उनकी उपाधियां समय के पूर्व तैयार कराई जा सकें। डॉ सिंह ने बताया कि उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है। मीडिया प्रभारी डॉ प्रभात चंद्र मिश्र ने बताया कि कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने मंगलवार को दीक्षांत समारोह की तैयारी की समीक्षा की।

विवाह घरों के पास पार्किंग नहीं, लग रहा सड़कों पर जाम, प्रतिबंध लगाने की मांग

प्रयागराज। पुराने शहर के नूरुउल्ला रोड, करेलाबाग, करेली, गौस नगर में बने विवाह घरों के पास पर्याप्त पार्किंग व्यवस्था नहीं होने के कारण सड़कों पर आए दिन जाम की स्थिति बन रही है। सड़क के दोनों ओर दो पहिया व चार पहिया वाहन बेतरतीब तरीके से खड़े होने के कारण जाम से लोगो को हो रही दिक्कत को लेकर कांग्रेसियों ने बुधवार को विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को पत्र देकर ऐसे शादी घरों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। कांग्रेस के जिला प्रवक्ता हसीब अहमद ने प्राधिकरण के अफसरों को बिना पार्किंग के चल रहे विवाह घरों को बंद करने के लिए दो सूत्रीय पत्र सौपा। हसीब अहमद ने कहा की नूरुउल्ला रोड, करेलाबाग, करेली, गौस नगर में बने शादी घरों के आसपास बारात निकलने के दौरान भारी वाहन आम राहगीरों के लिए और भी अधिक मुसीबत बन जाते हैं। बताया की करेली की मुख्य सड़कों पर दर्जनों विवाह घर संचालित हो रहे हैं, लेकिन किसी भी विवाह घर में पर्याप्त वाहन पार्किंग व्यवस्था नहीं की गई है, जिसके चलते विवाह समारोह में शामिल होने के दौरान अतिथियों को सड़कों के किनारे ही अपने दो व चार पहिया वाहनों को खड़ा करना होता है। यहां तक कि लोग अपने वाहनों को जगह कम होने के कारण और बहुत ज्यादा दूरी से बचने के लिए भी सड़कों के दोनों ओर किनारे पर वाहन रख दिए जाते हैं, जिससे हर दिन जाम के झाम से लोगो को जूझना पड़ रहा है। कांग्रेसियों ने अवैध तरीके से चल रहे शादी घर को तत्काल बंद करने की मांग की है।

ज्ञापन सौंपने वालों में गौरव पाण्डेय, राकेश पटेल, मनोज पासी, उदय यादव, मो०इमरान, कमरुल हुदा, इश्तेयाक खान सहित आदि लोग मौजूद रहे।

संक्षेप

दबंगों ने युवती को पीटा किया छेड़छाड़, मुकदमा दर्ज

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के रहीम पट्टी गांव में अपने घर पर बर्तन धुल रही युवती के साथ छेड़छाड़ किया विरोध करने पर दबंगों ने युवती की जमकर पिटाई कर दी। पिटाई में गंभीर रूप से घायल युवती के भाई ने अस्थानीय थाने पर पहुंचकर दबंगों के खिलाफ मारपीट समेत छेड़छाड़ व अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कराया। उतरांव थाना क्षेत्र के रहीम पट्टी गांव में दबंगों द्वारा इस कदर तांडव मचाया गया कि जहां बर्तन धो रही एक युवती के साथ गांव के ही 2 युवकों द्वारा छेड़छाड़ किया। जब युवती ने विरोध किया तो दबंगों ने जमकर लाठी–डंडे से युवती की पिटाई कर दी। वही बहन की पिटाई होते देख भाई जब बीच बचाव में आया तो दबंगों द्वारा उसको भी पीटा गया। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने छेड़छाड़ मारपीट की धाराओं में डब्बू व रोशन के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच में पुलिस जुटी हुई है। पुलिस ने घायल को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया।

वर्षों से झूल रहा बिजली तार, अधिकारी बने अंजान हादसे का संकेत

लालापुर। क्षेत्र के चिल्ला गौहानी गांव में शिव नारायण मिश्र गौतम के खेत से गौहनिया पावर हाउस से 11000 की सप्लाईआने वाली बसहरा तरहार जाने वाली बिजली के तार वर्षो से झूलकर नीचे लटक रहा है। सप्लाई बिल्कुल गांव के उत्तर नजदीक से जा रही है। ग्रामीणों ने इसकी शिकायत गौहनिया फीडर अवर अभियंता से कई बार की, लेकिन आज कर देंगे कल कर देंगे यही जवाब मिलता रहा।तार उसी तरह 10 फुट जमीन के ऊपर झूल रहा है। ग्रामीणों को उसी तार के नीचे से अपनी खेती से लेकर अन्य दैनिक क्रिया के लिए आना जाना पड़ता है। कही ऐसा न हो खेती का समय चल रहा कही हरा घास का शिर पर रखा बोझ छू न जाय जिससे घटना घटित हो जाय,लगता है विभाग को उसी दिन का इंतजार है।सूचना देने के बाद भी आज तक कान में जू नही डोल रही है।इसी तरह की लापरवाही करने से बिजली से क्षेत्र में कयी मौत लटकते तार से हो चुकी है जिसकी भरपाई आज तक नही हो पाई है। फिर भी विभाग कुंभकर्णी नींद में सोया है।गांव के शिव मिश्रा,राहुल मिश्रा,गोपाल मिश्रा,गजेंद्र सिंह,आदि लोगों ने लटकते तार को जल्द टाइट करने की विभाग से मांग की।

वरिष्ठ जेल अधीक्षक बच्चों को यातायात सुरक्षा की दी जानकारी

नैनी। बुधवार को माधव ज्ञान केंद्र इंटरमीडिएट कॉलेज नैनी प्रयागराज में यातायात सुरक्षा से संबंधित नैनी कारागार के वरिष्ठ जेल अधीक्षक शशिकांत सिंह ने विद्यालय के बच्चों को इससे संबंधित जानकारी विद्यालय के छात्रों को प्रदान की, विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ विंध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि का आभार ज्ञापन किया। यह कार्यक्रम दैनिक जागरण के वरिष्ठ संपादक नरेंद्र श्रीवास्तव जी के माध्यम से संपन्न हुआ इस अवसर पर विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक संजय कुमार मिश्र, विभूति नारायण सिंह ,राधेश्याम तिवारी, सभाजीत पाल ।मकरण सिंह, अमित नायक, अखिलेश कुशवाहा, शरद चंद्र पाल, बनवारी लाल चौरसिया, दिग्विजय पाल इत्यादि उपस्थित रहे।

वर्षों इंतजार के बाद 1087 गरीबों को छत मिलने की जगी आस

करछना। केंद्र व प्रदेश सरकार की सबसे महत्वपूर्ण प्रधानमंत्री आवास योजना व मुख्यमंत्री आवास योजना के माध्यम से ग्रामीण व शहरी इलाके के गरीब,असहाय व बेसहारा व्यक्तियों को 2024 तक सर पर छत देने का लक्ष्य रखा गया है।जिसके लिए शासन स्तर पर दो वर्ष पूर्व में कराये गये सर्वे लिस्ट का एक बार फिर से पात्र व्यक्तियों का चयन कराया जा रहा है।जंहा सेक्टर प्रभारी व ग्राम विकाश अधिकारी गांव गांव जाकर एक एक पात्र व्यक्तियों का चयन कर पात्रता सूची तैयार कर रहे है।तो अपात्र व्यक्तियों को पात्रता सूची से नाम छंटनी किया जा रहा है।विकाश खण्ड करछना के 80 गांवो में कुल 1087 आवास पात्र व्यक्तियों को दिया जाना है।जिसमे एससी कैटेगरी के लिए 482 व अन्य के लिए 605 प्रधानमंत्री आवास दिया जायेगा। वही धरवारा, लखरांवा, गन्धियाव, हिंदूपुर, बसरिया, पचदेवरा आदि 32 गांवो में एक भी व्यक्ति का नाम सूची में न होने से शून्य दिखा रहा है।जो विकाश खण्ड में चर्चा का विषय बना हुआ है।जंहा 48 गांवो में पात्रता चयन प्रक्रिया को युद्ध स्तर पर तीन दिन के अंदर पूरा करने के लिए 11 न्याय पंचायत में 05 सेक्टर प्रभारी व 11 ग्राम विकाश अधिकारीयो द्वारा गांव–गांव जाकर घर– घर सर्वे कर पात्रता सूची विकाश भवन से शासन स्तर तक भेजने पर एक सप्ताह के अंदर पात्र लाभार्थियों के खाते में पहली किस्त भेजी जायेगी।जो ग्रामीणों के लिए एक अच्छा संदेश नये वर्ष के पहले मिल रहा है।

अज्ञात वाहन की टक्कर लगने से बाइक सवार युवक घायल

नैनी। औद्योगिक थाना क्षेत्र के रामपुर तिराहे के समीप मंगलवार की शाम अज्ञात वाहन की टक्कर लगने से बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पाकर इलाकाई पुलिस पहुंची, आनन फानन में इलाज के लिए उसे अस्पताल भिजवाया।

मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार की शाम को तकरीबन 7:00 बजे मेजा थाना क्षेत्र के बसहरा गांव निवासी अनुज कुमार (30) वर्षीय पुत्र राम विनोद बाइक से कहीं जा रहा था। जैसे ही वह रामपुर तिराहे के समीप पहुंचा, तभी किसी अज्ञात वाहन ने उसे जोरदार टक्कर मार दिया। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया । सूचना पाकर इलाकाई पुलिस पहुंची, आनन-फानन में इलाज के लिए उसे अस्पताल भिजवाया। दुर्घटना में उसकी बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गई।

उमरे मुख्यालय में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में महाप्रबंधक सतीश कुमार की अध्यक्षता में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में शामिल सभी अधिकारियों को संबोधित करते हुए सतीश कुमार ने कहा कि सरकारी कार्य राजभाषा में निष्पादित करना हमारा संवैधानिक, राष्ट्रीय एवं नैतिक दायित्व है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन की सभी मदों में पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य किया जाए और सरकार की राजभाषा नीति और निर्देशों के अनुसार हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निरंतर सचेष्ट रहना चाहिए।

सतीश कुमार ने कहा कि हमारी कार्यप्रणाली में निरंतर नए बदलाव हो रहे हैं। हमें इन परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए राजभाषा की प्रगति को बनाए रखना है और अपने सभी कार्यों में इसका प्रयोग-प्रसार सुनिश्चित करना है। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए रूटीन कार्यों के

बैठक की अध्यक्षता करते उमरे महाप्रबंधक

अतिरिक्त मौलिक एवं अभिनव प्रयास भी आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, ताकि एक नई ऊर्जा के साथ हम अपने सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को गति प्रदान कर सकें। इस उद्देश्य से कर्मचारियों की कुशलता में वृद्धि हेतु हर स्तर पर चलाए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में राजभाषा के परंपरागत विषयों के साथ-साथ नई प्रणालियों और कंप्यूटर एप्लिकेशनों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित प्रशिक्षण कार्य को भी शामिल किया जाए और एकरूपता की दृष्टि से युनिकोड फांट का ही प्रयोग किया जाए। सतीश कुमार ने इस बात पर विशेष बल देते हुए सभी संबंधित सदस्य अधिकारियों को निर्देश दिया कि संरक्षा और रेल संचालन से संबंधित सभी आदेश एवं दिशानिर्देश हिंदी में जारी किए जाएं और इनमें सरल, सहज और सुबोध भाषा का प्रयोग किया जाए,साथ ही सभी स्टेशन संचालन नियम और गेट संचालन अनुदेश और इनमें किए जाने वाले संशोधन हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी में होने चाहिए।उन्होनें सभी अधिकारियों को अपनी निरीक्षण रिपोर्ट हिंदी में बनाने के निर्देश दिए, ताकि कर्मचारीगण उन्हें भली-भाँति समझकर उनका समुचित अनुपालन सुनिश्चित कर सकें। स्टेशनों पर सभी सूचनाएं, समय सारणी, किराया सूची, इलेक्ट्रानिक प्रदर्शन बोर्ड इत्यादि में अनिवार्य रूप से हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग होना चाहिए। बैठक के प्रारंभ में महाप्रबंधक श्री सतीश कुमार ने मुख्यालय की त्रैमासिक राजभाषा पत्रिका 'रेल संगम' के वाणिज्य विभाग विशेषांक का विमोचन किया।

बैठक के प्रारंभ में मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक एस.के. सिंह ने समिति के सभी सदस्यों को राजभाषा का प्रयोग प्रसार बढ़ाने के लिए किए गए कार्यों से अवगत कराते हुए कहा कि पिछली बैठक के बाद से कई हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गई तथा कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। साहित्यिक, सांस्कृतिक और लोक विधाओं के कार्यक्रमों के आयोजन की परंपरा में वैगन मरम्मत कारखाना, झाँसी में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्यालय में प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा बुंदेली लोक गीत आल्हा गायन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बैठक में अपर महाप्रबंधक चंद्र प्रकाश गुप्ता और प्रधान कार्यालय के सभी प्रधान विभागाध्यक्ष एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। मंडलों के अपर मंडल रेल प्रबंधक, कारखानों के मुख्य कारखाना प्रबंधकों एवं अन्य सदस्य अधिकारियों ने बैठक में ऑनलाइन सहभागिता की। सभी अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यालयों में हो रही राजभाषा प्रगति से महाप्रबंधक को अवगत कराया। बैठक का संचालन वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी चन्द्र भूषण पाण्डेय द्वारा किया गया। उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी/वित्त एवं बजट शैलेन्द्र कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

नगर निकाय चुनाव को लेकर भाजपा हुई सक्रिय

रणनीति

शीर्ष नेतृत्व जिसको भी टिकट देगा जिताने की जिम्मेदारी हम सभी कार्यकर्ताओं की : संजय मिश्र बनकटा

झूंसी स्थित पार्टी कार्यालय में भाजपा कार्यकर्ताओं की हुई बैठक

प्रयागराज। नगर निकाय चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी काफी सक्रिय है भाजपा ने निकाय चुनाव की तिथि का ऐलान जैसे ही किया कार्यकर्ताओं में सरगर्मियां तेजी से बढ़ गई। हर एक वरिष्ठ नेता कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर रणनीति तैयार करने में जुट गए हैं। बुधवार की दोपहर झूंसी स्थित पार्टी कार्यालय में भाजपा कार्यकताओं की बैठक हुई । बैठक में काफी

बैठक को संबोधित करते संजय मिश्र बनकटा व उपस्थित भाजपाई

संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस अवसर पर भाजपा के प्रभारी वरिष्ठ नेता संजय मिश्र बनकटा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि शीर्ष नेतृत्व जिसको भी नगर निकाय चुनाव में चेयरमैन तथा पार्षद प्रत्याशी बनाएगी हम सभी कार्यकर्ता की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि सभी लोग हम लोग एकजुट होकर कार्यकताओं को जिताने का काम करेंगे । वहीं भाजपा की वरिष्ठ नेता सत्या तिवारी ने कहा कि डोर टू डोर जाकर लोगों से मतदान करने का अपील किया जाएगा। फूलपुर थनवा की प्रधान विजयलक्ष्मी चंदेल ने जीत सुनिश्चित की हुंकार भरते हुए कहा कि महिला कार्यकर्ता नगर निकाय के चुनाव में कंधे से कंधा मिलाकर एड़ी चोटी एक कर- के सत प्रतिशत विजय दिलाने का काम करेगी। बैठक में प्रमोद जायसवाल मनोज योगेश्वर प्रभाकर दुबे पीयूष निषाद शुभम पांडे दिनेश सिंह सहित काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता व महिला मोर्चा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बाइक और साइकिल भिड़ी दो घायल

नैनी। नैनी थाना क्षेत्र के जेल रोड बेथनी कॉन्वेंट के समीप बुधवार की सुबह साइकिल और बाइक में भिड़ंत हो गई। जिसमें दोनों लोग घायल हो गए। आनन फानन में इलाज के लिए दोनों को स्थानीय एक निजी अस्पताल ले जाया गया। मिली जानकारी के अनुसार बुधवार की सुबह तकरीबन 11:00 बजे रीवा रोड बेथनी कॉन्वेंट स्कूल के समीप बाइक और साइकिल में भिड़ंत हो गई। जिसमें साइकिल सवार गुलाब (28) वर्षीय पुत्र इनायत उल्ला निवासी गौस नगर थाना करेली और बाइक सवार संजीव कुमार (30) वर्षीय पुत्र राजेश कुमार निवासी करछना घायल हो गए। आनन-फानन में इलाज के लिए दोनों को स्थानीय एक निजी अस्पताल ले जाया गया।

भाजपा गंगापार महिला मोर्चा आरती अग्रवाल को उम्मीदवार बनाए जाने की मांग

प्रयागराज। नगर निकाय चुनाव को लेकर अधिसूचना जारी होने के बाद चुनाव की रूपरेखा के बाद वार्ड मे उम्मीदवारों के नाम को लेकर मांग उठने लगी है । वार्ड नंबर 75 कोहना झूसी से भाजपा गंगापार महिला मोर्चा अध्यक्ष आरती अग्रवाल को उम्मीदवार बनाए जाने को लेकर समर्थकों ने मांग उठाई है। अधिकांश चाय पान की दुकानदारों का कहना है कि आरती अग्रवाल उनके पति पिंटू अग्रवाल ने कॉलोनी वासियों के हित में जो कार्य किया है उसे वह लोग भूल नहीं सकते पिंटू अग्रवाल समाज सेवी हर सुख दुख में भागीदारी निभाते रहते हैं वही लॉकडाउन के समय में भी राशन सामग्री घरों में उपलब्ध करवाते रहें डेंगू के प्रकोप से बचाने के लिए पूरे कॉलोनी में दवा का छिड़काव साफ सफाई व्यवस्था एवं स्वच्छता के लिए नगर निगम अधिकारियों कर्मचारियों के माध्यम से वार्ड में कराते

आरती अग्रवाल

रहते हैं वार्ड 75 की कॉलोनी वासियों चाय पान की दुकानदारों का का कहना है कि उनके कार्यों को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी से मांग उठाई है कि यदि पार्टी इन्हें वार्ड 75 से उम्मीदवार बनाती है तो इनकी जीत निश्चित है और यहां की जनता भी की व्यक्तिगत व्यवहार से भली-भांति परिचित है शासन प्रशासन माध्यम से आम जनता की मदद के लिए हमेशा तैयार रहती हैं ऐसा स्थानीय लोगों का मानना है।

स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय में इनफर्टिलिटी क्लीनिक का उद्घाटन

उद्घाटन करते प्रोफेसर डॉक्टर एस. पी. सिंह एवं प्रमुख अधीक्षक डॉक्टर अजय सक्सेना

प्रयागराज। स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में बुधवार को इनफर्टिलिटी क्लीनिक का उद्घाटन प्रधानाचार्य प्रोफेसर डॉक्टर एस. पी. सिंह एवं प्रमुख अधीक्षक डॉक्टर अजय सक्सेना ने किया। इस क्लिनिक का प्रारंभ इनफटिलिटी कपल की काउंसलिंग एवं उच्चतम परामर्श के लिए किया गया है। पूर्वतः इनफर्टिलिटी मरीजों को सामान्य गायनी ओ.पी.डी में परामर्श उपलब्ध कराया जाता था लेकिन अब रेज़िडेंट डॉक्टर एवं संकाय सदाय की बढ़ती संख्या के कारण विभागाध्यक्ष प्रो. डॉक्टर अमृता चौरसिया एवं समस्त संकाय सदस्यों द्वारा एक अलग इनफटिलिटी ओ.पी. डी. को कायृतमक करने का निर्णय लिया गया है । जहां इनफटिलिटी के मरीजों को आई. यू. आई., ओवयुलेशन इंडकशन एवं अन्य समस्त उच्चतम उपचार उपलब्ध कराया जाएगा जो की नेशनल मेडिकल कमीशन के तहत गायनी विभाग के लिए एक मानक है।

स्वामी विवेकानंद विद्याश्रम में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

थरवई। स्वामी विवेकानंद विद्याश्रम में दो दिवसीय वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता रखी गई। जिसमें एल के जी से लेकर कक्षा 5 वीं तक के बच्चों ने प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर भाग लिया। प्रतियोगिता में 100 मीटर दौड़ के साथ ही अन्य कई प्रकार की दौड़ रखी गई थी जिसमें सभी ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उसके उपरांत प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान बच्चों ने प्राप्त कर नाम रौशन किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शिवांश कुमार सृजन शिवांशू प्रजापति राज यादव आस्था पटेल आदि बच्चों हुई प्रतियोगिता में अपना स्थान बनाकर गौरव बढ़ाया। खेल कूद प्रतियोगिता का उद्घाटन विजय कुमार तिवारी व शुभारम्भ विद्यालय के प्रधानाचार्य आशीष रायजादा के निर्देशन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन गेम शिक्षिका निशा पाण्डेय व धन्यवाद ज्ञापन प्रा प्रधानाचार्य आशुतोष कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया वहीं मौके पर उपस्थित बालजी मिश्र, रवीन्द्र नाथ, बृजवासी लाल पाण्डेय, राम सूरत शुक्ल, वेदांश मिश्रा उर्मिला त्रिपाठी, संध्या मिश्रा, शोभनाथ शुक्ल, देवराज आदि सभी के द्वारा यह प्रतियोगिता संपन्न कराने में महत्व पूर्ण भूमिका रही।

प्रांत स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में केबीएम के छात्रों का हुआ चयन

बहरिया। कमलानगर माधोपुर में स्थित केवीएम इंटर कॉलेज के खिलाड़ियों ने मंडलीय विद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता चैंपियनशिप में भाग लिया। जोकि दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा मंझनपुर कौशांबी में 5 एवं 6 दिसंबर को संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में केवीएम इंटर कॉलेज कमलानगर के खिलाड़ियों का सराहनीय प्रदर्शन रहा। जिसमें सीनियर वर्ग में 100 गुणें 400 मीटर रिले रेस में अजय कुमार प्रथम स्थान, संगम सिंह 5000 वाक रेस में प्रथम स्थान, सागर सिंह 1500 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान, अतुल कुमार पटेल 4 गुणे 100 मीटर में प्रथम स्थान, संदीप कुमार 100 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान, इसी क्रम में अजय सिंह लंबी कूद में तृतीय स्थान और त्रिकूट में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वही अतुल कुमार पटेल 200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान तथा 400 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान,

विजयी खिलाड़ियों को दी गई चैंपियन ट्रॉफी

सागर सिंह 3000 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सब जूनियर बालक वर्ग में सुधीर हैमर थ्रो में द्वितीय स्थान, शुभम पटेल गोला फेंक में द्वितीय स्थान प्राप्त करते हुए कॉलेज का नाम रोशन किया। इन्हीं प्रदर्शनों को देखते हुए प्रांत स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता जोकि गोरखपुर में संपन्न की जाएगी उसमें केवीएम इंटर कॉलेज के अजय सिंह, संगम सिंह, सागर सिंह, धीरज कुमार और विनोद कुमार पटेल का चयन किया गया है। इन सभी खिलाड़ियों के चयन पर विद्यालय की तरफ से ढेर सारी बधाइयां एवं शुभकामनाएं दी गई।

संक्षेप

दबंगों ने दंपती को पीटकर किया जख्मी

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के शोभना गांव में मंगलवार की दोपहर दबंगों ने पड़ोसी दंपती पर कातिलाना हमला करते हुए लहूलुहान कर दिया। पीड़ित से तहरीर लेकर पुलिस ने तहकीकात शुरू कर दी है।

शोभना निवासी राकेश कुमार का पड़ोसी से जमीन का विवाद चल रहा है। बताया जा रहा है कि मंगलवार की शाम आरोपित भाइयों के साथ मिल राकेश के घर पर आ गया। आरोपितों ने घर पर मौजूद अरविंद व अशोक को पीटकर लहूलुहान कर दिया। मारपीट देख पूनम ने बीच.बचाव किया तो आरोपितों ने उसकी भी पिटाई कर दी। ग्रामीणों के बीच.बचाव करने पर आरोपित धमकी देते हुए भाग निकले। सूचना पर गांव पहुंची चौकी पुलिस ने घायलों का प्राथमिक उपचार कराने के बाद तहरीर लेकर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

सालों पहले रामजानकी ट्रस्ट की टुकड़ों में बेची गई भूमि, आज भी खोजे जा रहे कस्टमर

बने भवनों में भी धन लेने के लिए की जा रही राजनीति

कब्जा

मामला सिराथू तहसील के निधियावां गांव का

एसडीएम ने कोखराज व टेढ़ीमोड़ चौकी पुलिस को जांच कर विधिक कार्यवाही करने का दिया निर्देश

कौशाम्बी। सिराथू तहसील अंतर्गत निधियावां गांव स्थित रामजानकारी मंदिर ट्रस्ट की भूमि टुकड़ों में बच दी गई। वर्तमान में जो कुछ बची है, उसमें भी कस्टर खोजे जा रहे हैं। इतना ही नहीं जो भवन बने हैं उसमें भी एक दूसरे से कब्जा कराकर राजनीति की जा रही है। एक भवन में कब्जा कराने की राजनीति की शिकायत बुधवार को एसडीएम सिराथू राहुल भट्ट के समक्ष पहुंची। हालांकि उन्होंने प्रकरण की जांच करने का निर्देश कोखराज व टेढ़ी मोड़ चौकी पुलिस को दिया है।

यहां बताना जरूरी होगा कि तकरीबन बीस वर्ष पहले तहसील क्षेत्र के निधियावां गांव स्थित रामजानकरी मंदिर जो कि ट्रस्ट के नाम तकरीबन साढ़े सात बीघा भूमि थी। गांव के ही कुछ लोग मंदिर मरम्मत के नाम पर टुकड़ों में भूमि को बेचना शुरू कर दिया। वर्तमान की हालात देखा जाए तो उक्त भूमि में कई दर्जन परिवार भवन बनाकर निवास कर रहे हैं। हालांकि प्रकरण माननीय कोर्ट में भी पहुंचा, जहां विचाराधीन चल रहा है। बुधवार को गांव का ही लल्लू ओझा पुत्र स्व. रामसुमेर ओझा ने एसडीएम को दिए गए शिकायती पत्र में बताया कि उसने भी गांव के राजेंद्र प्रसाद, गनपत प्रसाद तिवारी व साहब लाल, रामलली, ननकी देवी से दस फिट चौड़ा व तीस फिट लंबी भूमि तीन हजार-तीन हजार सभी को देकर क्रय किया था। भूमि क्रय करते समय उक्त लोगों ने जो स्टाम्प लिखा था उसमें दशार्या गया था कि भूमि का धन मंदिर मरम्मत में लिया जाएगा। इसके बाद इसी तरह तमाम लोगों के साथ टुकड़ों में भूमि बेची गई। लल्लू ओझा का आरोप है कि उक्त भूमि में सभी लोगों की तरह उसने भी मकान का निर्माण करा लिया। उसके मुताबिक इसी दौरान उसकी बहन जो प्रयागराज के मउआइमा थाना क्षेत्र के देवापुर गांव व्याही थी उसकी मौत हो गई। इतना ही नहीं कुछ दिनों बाद उसके बहनोई राजकुमार की भी मौत हो गई। उसका भांजा गुडडू तिवारी व उसका भाई निधियावां में रहने लगे। कुछ बड़े हुए तो वह लोग अपने पैतृक गांव देवापुर भी आते जाते थे। देवापुर में उनकी पूरी सम्पत्ति है। गुडडू तिवारी गंवई राजनीति के चलते दो दिन पहले ट्रस्ट की भूमि में बने भवन जिसमें लल्लू ओझा का कब्जा था, ताला तोड़कर उसमें अपना कब्जा जमा लिया। अब जब उक्त पीड़ित व्यक्ति उसे भवन में कब्जा करने से रोका तो वह तमाम तरह की धमकियां देने लगा। हालांकि पंचायत टेढ़ीमोड़ चौकी पुलिस ने कराया लेकिन हल नहीं निकाल सका। शिकायतकर्ता का आरोप है कि उसकी पैतृक सम्पत्ति उसके पैतृक गांव में है। गुड्डू तिवारी का यहां कुछ नहीं है बावजूद इसके वह मकान खाली नहीं कर रहा है। शिकायतकर्ता ने यह भी बताया कि गुड्डू तिवारी के दादा जो नौकरी करते थे, उनकी भी मौत हो गई। इसके बाद उसने अपने कुछ परिवार के साथ मिलकर अपने मृतक दादा सम्पत्ति को हड़प लिए, यह दिखाकर उनकी शादी नहीं है, जबकि उनकी पत्नी व बच्चे भी मौजूद हैं। हालांकि वहां भी अफसरों को शिकायती पत्र मृतक की पत्नी व बच्चों ने दिया है जिसकी जांच कराई जा रही है। हालांकि एसडीएम ने शिकायतकर्ता की शिकायती पत्र को गंभीरता से लेते हुए कोखराज व टेढ़ीमोड़ चौकी पुलिस को जांच कर विधिक कार्यवाही करने का निर्देश दिया है।

कौन होगा सत्तादल में मंझनपुर मेयर का प्रत्याशी

नगर पालिका परिषद चुनाव

आरक्षित महिला सीट होने के बाद कितनों के मंसूबों पर फिरा पानी

किसी दमदार चेहरे की तलाश में भाजपा

कौशाम्बी। सदर नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद का आरक्षण आने के बाद यहां की सियासत बदल सी गई है। हालांकि सत्तादल भाजपा में अध्यक्ष पद के दावेदारों की संख्या काफी ज्यादा थी। लेकिन आरक्षण आरक्षित महिला होने के बाद कहीं न कहीं बड़े-बड़े दिग्गजों के मंसूबों पर पानी सा फिर गया है।

यहां की राजनीतिक सियासत के अंदर खाने में चल रही हवा पर यदि गौर करें तो समाजवादी पार्टी इस सीट पर कब्जा करने के लिए किसी बड़े ओहदे के परिवार में बाजी लगा सकती है। ऐसे में बहुजन समाज पार्टी भी इस सीट पर किसी बड़े चेहरों को मैदान में लाने की कवायद में जुटी दिख रही है। अब यदि सत्तादल भाजपा के अंदर खाने में चल रही चचाओं पर जाएं तो भाजपा सदर पालिका परिषद सीट पर किसी ऐसे बड़े चेहरों को मैदान में लाने की कवायद में जुटी है जो दोनों प्रमुख विपक्षी दलों के प्रत्याशियों को कड़ी टक्कर देकर सीट अपने पाले में कर सके। हालांकि पार्टी हाईकमान स्तर तक कई दावेदारों ने अपने नामों का आवेदन किया है, लेकिन पार्टी के अंदर मंथन का विषय चल रहा है कि आवेदन करने वाले सम्भावित प्रत्याशी चुनावी नैया को कहां तक पार करने में सफल हो सकेंगे या फिर किसी नए चेहरे को तलाश कर उस पर दांव लगाया जाए। बहरहाल कुछ भी हो मंझनपुर नगर पालिका परिषद का चुनाव दिलचस्प होता दिख रहा है।

दो पक्षों में हुई मारपीट, छह लोग जख्मी

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के टेगाई जलालपुर गांव में मंगलवार की शाम दो परिवार के बीच जमकर लाठी.डंडे के साथ फरसा व ईंट.पत्थर चले। मारपीट में छह लोग लहूलुहान हो गए। पुलिस ने एक पक्ष के घायलों को नजदीकी अस्पताल भेज दिया है। जबकि घटना के बाद से दूसरा परिवार फरार है। पुलिस ने एक पक्ष से तहरीर लेकर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

टेगाई जलालपुर निवासी प्रेमचंद्र पुत्र भुग्गा का पड़ोसी रामलाल से विवाद चल रहा है। बताया जा रहा है कि शाम दोनों परिवार के बीच तीखी झड़प हो गई। इसके बाद आरोपित परिजनों व साथियों के साथ प्रेमचंद्र के घर पर पहुंच गया। दोनों परिवार के बीच के जमकर मारपीट हुई। ईंट.पत्थर व लाठी.डंडे से हुए हमले में एक पक्ष से प्रेमचंद्र अनुसुइया देवी पुत्री प्रेमचंद्र सीमा देवी पत्नी प्रेमचंद्र, सुमन देवी पत्नी रमेश कुमार व दूसरे पक्ष से रामलाल व संतोष घायल हो गए। दो परिवार के बीच मारपीट देख घर.परिवार के साथ गांव के अन्य लोग मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों के बीच बचाव करने पर हमलावर प्रेमचंद्र को पूरे परिवार के साथ जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकले। हमले के बाद पीड़ित परिवार के लोग थाने पहुंचे और मामले की शिकायत की। पुलिस ने घायल प्रेमचंद्र, अनुसुइया, सुमन, सीमा को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराते हुए तहरीर लेकर मामले की छानबीन शुरू कर दी है। उधर घटना के बाद से ही दूसरा पक्ष घर छोड़कर फरार है। इंस्पेक्टर तेज बहादुर ने बताया कि एक पक्ष ने तहरीर दी है दूसरा पक्ष घर छोड़कर फरार है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अधेड़ को दी जान से मारने की धमकी

कौशाम्बी। पश्चिमशरी थाना क्षेत्र के पूरबशरीरा निवासी अवध नारायण ने बताया कि पड़ोसी से उसकी रंजिश चल रही है। कई बार दोनों परिवार के बीच मारपीट हो चुकी है। हत्या के आरोप में आरोपित का भाई जेल में है। इसी अदावत में मंगलवार की शाम उसके घर आकर आरोपित के परिजनों ने जान से मारने की धमकी दी। देर शाम पीड़ित ने थाने में मामले की शिकायत की। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

परसरा गांव के तालाब में मिला गायब युवक का शव

हड़कम्प

पिछले पखवारा भर से गायब था युवक, गांव में सनसनी

कौशाम्बी। कोखराज कोतवाली अंतर्गत परसरा गांव स्थित तालाब में बुधवार को एक शव का उतराता मिला। लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव की शिनाख्त कर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनास्थल पर पहुंचे क्षेत्राधिकारी सिराथू ने बताया कि युवक पिछले कई दिनों से लापता था, जिसकी गुमशुदगी कोखराज कोतवाली में दर्ज थी और पुलिस सुराग में जुटी थी।

जिक्र करें तो परसरा गांव निवासी रंगबाज पुत्र बदलू (20) पिछले 26 नवंबर से लापता था। काफी खोजबीन के बाद पता न चलने पर परिजनों ने कोखराज थाना में लिखित सूचना दिया। पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर सुराग में जुट गई। बुधवार को उसका शव तालाब में उतराता देख गांव में सनसनी पसर गई। सूचना पर पहुंचे कोखराज थानाध्यक्ष तेज बहादुर चंदेल ने जानकारी उच्चाधिकारियों को दिया। घटनास्थल पर क्षेत्राधिकारी सिराथू के.जी सिंह पहुंचे। सीओ के निर्देश पर कोखराज पुलिस ने शव को तालाब से बाहर निकलवाकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। हालांकि परिवार के लोगों गांव के ही लोगों पर गायब करने व हत्या करने का शक जाहिर किया है। बहरहाल मामले की हकीकत खंगालने के लिए सीओ सिराथू ने थानाध्यक्ष कोखराज को निर्देशित किया है। सीओ ने कहा कि जल्द ही घटना का खुलासा कर दिया जाएगा।

घटनास्थल पर मौजूद गमजदा परिजन

कड़ा के कुबरी गंगा घाट में जल्द मिलेगी ई-बोट की सुविधा

सुविधा

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य नौ दिसंबर को कर सकते हैं उद्घाटन

प्रशासनिक अधिकारियों ने कड़ा कुबरी घाट का निरीक्षण

दारानगर, कौशाम्बी। जिले के कड़ाधाम के कुबरी घाट में गंगा नदी में सुविधाओ से लैस ई-बोट की जल्द ही लोगो को सुविधा मिलेगी, जिसका उद्घाटन डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य करेंगे। डिप्टी सीएम के कार्यक्रम को लेकर कड़ा कुबरी घाट का निरीक्षण करने सीडीओ रवि किशोर त्रिवेदी, एसडीएम राहुलदेव भट्ट पहुंचे और सुरक्षा तैयारियों का जायजा लिया। इस मौके पर सीओ सिराथू समेत कड़ा धाम पुलिस फोर्स मौजूद रही।

कड़ा कुबरी गंगा घाट पर डिप्टी सीएम के आगमन को लेकर जांच करते सीडीओ व पुलिस के अफसर

मैनेजर साहब को देर से आने की है आदत

हाल कौशांबी के बेरौंचा में संचालित बड़ौदा बैंक का

कनैली, कौशाम्बी। विकास खंड कौशाम्बी के बिरौंचा में संचालित बैंक ऑफ बड़ौदा के साहब का प्रतिदिन बैंक देरे से आने की आदत सी बन गई है। ऐसे में कहीं न कहीं बैंक का भी देर से ही शुरू होता है।

बताना जरूरी होगा कि क्षेत्र के लोगों को बैंकिंग की बेहतर सुविधा प्रदान हो इसके लिए बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा संचालित की गई। यहां पर तैनात शाखा प्रबंधक साहब की बैंक देर से आने की आदत सी है। बुधवार को भी वह दस बजे के बाद ही बैंक पहुंचे। ऐसे में इलाकाई बुद्धिजीवी जो बैंक के ग्राहक हैं वह तमाम तरह की चर्चा करते देखे गए।

खेत गई युवती के साथ किया दुराचार, मुकदमा दर्ज

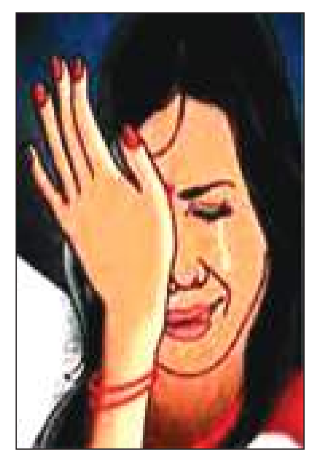

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के एक गांव में मंगलवार की दोपहर खेत की ओर गई युवती से पड़ोसी युवक ने दुराचार किया। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पीड़िता को मेडिकल परीक्षण के लिए भेज दिया है। करारी थाना क्षेत्र के एक गांव की युवती मंगलवार की दोपहर खेत की ओर गई थी। बताया कि पहले से घात लगाकर बैठे पड़ोसी युवक ने युवती को रोका। इसके बाद उसके साथ दुराचार किया। युवती घर पहुंची और आपबीती परिजनों को बताई। देर शाम पीड़िता शिकायत लेकर थाने पहुंची और नामजद तहरीर दी। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित युवक के खिलाफ मुकदमा दर्जकर लिया है। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल परीक्षण के लिए भेज दिया है।

एनसीएस से निकासी एवं प्रत्याहरण का दिया जाएगा प्रशिक्षण

कौशाम्बी। वरिष्ठ कोषाधिकारी मनोज कुमार त्रिपाठी ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया है कि 01.04.2005 से लागू राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली के क्रियान्वयन में जनपद कोषागार एवं आहरण वितरण अधिकारियों को विभिन्न स्तरों पर बहुधा समस्याओ यथा.एनसीएस से निकासी एवं प्रत्याहरण आदि से भिज्ञ कराने के लिए दिनांक 15 दिसंबर को उदयन सभागार में पूर्वान्ह 11 बजे से अपरान्ह 02 बजे तक केन्द्रीय अभिलेखपाल अभिकरण ;सीआरए के प्रबन्धक राकेश चौहान द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा। उन्होंने समस्त कार्यालयाध्यक्षों से उक्त दिवस को उदयन सभागार में प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने के लिए आग्रह किया है।

पड़ोसी दबंग भाइयों ने नाली विवाद में युवक को दी धमकी

कौशांबी। विकास खंड नेवादा के सिकंदरपुर आइमा गांव में बुधवार की सुबह दबंग भाइयों ने नाली में मिट्टी डालकर उसे बंद करने के विरोध पर एक युवक को मारपीट की धमकी दिया। शोर सुनकर मौके पर पहुंचे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। पीड़ित ने उपजिलाधिकारी को मामले की तहरीर दी। एसडीएम ने चरवा पुलिस को शिकायत की जांचकर आवश्यक कार्यवाई करने का आदेश दिया है।

सिकंदरपुर आइमा गांव निवासी विमल सिंह पुत्र हरिशरण किसानी कर परिवार का गुजारा करता है।विमल के अनुसार उसके घर के बाहर सरकारी नाली बनी है।इसी नाली से घर का पानी बहकर तालाब में जाता है।आरोप है कि पड़ोसी दबंग भाई उस नाली में मिट्टी डालकर उसके घर के पानी का बहाव बंद कर देते हैं।बुधवार की सुबह भी दोनों भाइयों ने नाली को बंद कर दिया। विरोध करने पर उन्होंने युवक को मारपीट की धमकी दी। शोर सुनकर मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। पीड़ित युवक ने उपजिलाधिकारी को मामले की तहरीर दी। एसडीएम मनीष कुमार यादव ने चरवा पुलिस को शिकायत की जांचकर आवश्यक कार्यवाई करने का आदेश दिया है।

शाहपुर उपकेंद्र से गांवों को दस घंटे हो रही बिजली आपूर्ति

कौशाम्बी। सरसवां ब्लॉक के शाहपुर उपकेंद्र से जुड़े तराई गांवों में बिजली की कटौती का सिलसिला नहीं थम रहा है। कृषि फीडर में भी पर्याप्त बिजली की आपूर्ति नहीं की जा रही है। किसानों का आरोप है कि गांवों में सिर्फ दस घंटे ही आपूर्ति की जा रही है। लोगों का कहना है कि शिकायत के बाद भी बिजली विभाग के जिम्मेदार आपूर्ति का समय नहीं ठीक कर रहे हैं।

22 लीटर शराब के साथ तीन लोग गिरफ्तार

कौशाम्बी। कोखराज व कड़ाधाम व पिपरी पुलिस ने तीन लोगों को महुआ की शराब के साथ पकड़ लिया। पिपरी पुलिस ने लक्ष्मण निवासी चायल के कब्जे से 10 लीटरए कड़ाधाम पुलिस ने बुधनी देवी निवासी सौरई बुजुर्ग के कब्जे से 12 लीटर व कोखराज पुलिस ने राम नरेश निवासी चित्तापुर के कब्जे से 10 लीटर महुआ की शराब बरामद की है। पुलिस ने जांच पड़ताल करते हुए सभी आरोपितों को जेल भेज दिया है।

छात्रों को दी गई सड़क सुरक्षा की जानकारी

जागरूकता

छात्रों को यातायात चिन्ह चेतावनी चिन्ह, सूचनात्मक चिन्ह के बारे में भी विस्तार के साथ बताया गया

थाना अध्यक्ष चंद भूषण मौर्य द्वारा लगाया गया यातायात जागरूकता कैंप

कनैली,कौशाम्बी। करारी इंटर कालेज में बुधवार को यातायात नियम की जागरूकता को थाना अध्यक्ष चंद भूषण मौर्य द्वारा कैंप आयोजित किया गया। इस दौरान उन्होंने छात्र-छात्राओं को यातायात के नियमों की जानकारी दी। बताया कि स्कूल सड़क किनारे होते हैं तो वहां के छात्र-छात्राओं को ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। छात्र सड़क पर भीड़ के रूप में खड़े न हों तथा सड़क पार करते समय दोनों तरफ देखने के बाद ही सड़क पार करें।

इसके अलावा यातायात चिन्ह चेतावनी चिन्ह, सूचनात्मक चिन्ह के बारे में भी विस्तार के साथ बताया गया। चंद्रभूषण मौर्य ने बताया कि हमेशा बाईं साइड चलें तथा साइकिल, बाइक आदि चलाते समय चमकीले कपड़ें पहनें तथा चारपहिया वाहन से अपने शरीर के अंग बाहर न निकालें। इस दौरान यातायात उपकरण भी दिखाए गए तथा उनके प्रयोग के बारे में जानकारी दी। छात्र.छात्राओं द्वारा संकल्प लिया गया कि वह यातायात के नियमों का पालन करने के साथ ही दूसरे लोगों को भी इस बारे में जागरूक करेंगे। इस मौके पर प्रधानाचार्य सुरेन्द्र सिंह,सहायक अध्यापक मोहम्मद इमरान, कांस्टेबल सुनील, राजकुमार, महिला कास्टेबल बबिता आदि उपस्थित रहे।

करारी इंटर कालेज में यातायात नियमों के बारे में जानकारी लेते छात्र-छात्राएं

मुआवजा व जमीन न मिलने पर किसानों ने की नारेबाजी

मुआवजे व जमीन की मांग को लेकर नारेबाजी करते किसान

प्रतापगढ़। गंगा एक्सप्रेसवे में जा रही अपनी जमीन का मुवाबजा और अपनी बची हुई शेष जमीन पर कब्जा न मिलने से किसानों ने बुधवार को तहसील प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। किसानों का कहना है कि उन्होंने अपनी समस्या को लेकर तहसील से लेकर जिले तक के अधिकारियों से शिकायत की लेकिन कोई भी उनकी समस्या का समाधान करने को तैयार नही है।

कुंडा तहसील में प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी योजना गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण हो रहा है। यूपीडा द्वारा किसानों की बैनामे की जमीन पर मिट्टी डालने का कार्य इस समय तीव्र गति से चल रहा है। लेकिन चेतरा गांव के किसानों ने अपने खेतों में मिट्टी डालने से ठेकेदार को रोक दिया है। किसानों ने आरोप लगाया कि उनकी जमीन का बिना बैनामा कराए ही यूपीडा के अधिकारी जबरिया उनकी जमीन पर मिट्टी डालकर गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण कर रहें हैं। कुछ किसानों का यह भी आरोप है कि बैनामे के बाद जो उनके हिस्से की जमीन बची हुई है, उस शेष बची हुई जमीन पर भी तहसील प्रशासन उनको कब्जा नही दिलवा रहा है। सीआरओ के यहां से नोटिस आने के बाद उन लोगों ने जबाब भी दिया था फिर भी शेष बचे किसानों की जमीन का न तो बैनामा कराकर उनको पैसा दिया गया और न ही किसानों की शेष बची हुई जमीन पर उनको कब्जा दिलाया गया। अधिकारियों के पास शिकायत करने के बाद भी जब किसानों की समस्या को किसी ने नहीं सुना तो उन्होंने अपने खेतों में बांस और बल्ली गाड़कर गंगा एक्सप्रेसवे निर्माण पर मिट्टी डालने से मना कर दिया है। बुधवार को दोपहर में किसानों ने तहसील प्रशासन के खिलाफ जमकर नारे लगाए। किसान सुरेश यादव, हरकेश यादव, नरेश यादव, राजाराम सरोज, मुन्ना सरोज, लखपत सरोज, मोती सरोज आदि का कहना है कि अनुपात के अनुसार उनकी जमीन का बैनामा तो ले लिया गया है। लेकिन उनकी शेष बची हुई जमीन पर तहसील प्रशासन उनको कब्जा नहीं दिला रहा है। जबकि राधेश्याम तिवारी, छेदीलाल सरोज, लालजी सरोज, राम अभिलाष, राम सेवक यादव, लल्लू सहित कई किसानों ने बताया की न तो अभी उनकी जमीन का बैनामा लियाय गया और न ही अभी शेष बची हुई जमीन पर उनको कब्जा दिलाया गया। जिससे वे अपनी शेष बची हुई जमीन पर खेती कर सकें। तहसील प्रशासन के लचर और उदासीन रवैये से किसानों का आक्रोश फूट पड़ा और जमकर नारेबाजी किया। इस संबंध में सीआरओ राकेश सिंह पटेल का कहना है कि एसडीएम कुंडा को किसानों की समास्या को निस्तारण करने के लिए कहा गया है। जल्द ही किसानों की समस्या का निस्तारण कर दिया जाएगा।

टिकट के साथ दलाल गिरफ्तार

प्रतापगढ़। रेलवे सुरक्षा बल ने आरक्षण काउंटर पर सक्रिय दलालों के खिलाफ अभियान चलाकर एक दलाल को टिकट के साथ पकड़ा। उसके पास से बरामद एक टिकट पर तीन यात्रियों का नाम था। टिकट बनारस से मुंबई का था। पकड़ा गया कथित दलाल कंधई का रहने वाला है। इंस्पेक्टर ने बताया कि दलालों के खिलाफ कार्रवाई का अभियान चलाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत एक को पकड़ा गया है। कोई भी दलाली नहीं कर सकता है।

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर प्रस्तुती देते नौनिहाल

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर बच्चों ने भरा देश प्रेम का जोश

लालगंज। धधुआ गाजन स्थित आइन्सटीन पब्लिक स्कूल मे बुधवार को सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर छात्र छात्राओ ने देश के अमर शहीदो की स्मृति मे विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सशस्त्र सेनाओं के शहीदो को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्रीय झण्डे की गरिमा की मजबूती का सामूहिक संकल्प लिया गया। छात्रा अलिश्बा खानम, शिक्षा शुक्ला, जारा इरफान के द्वारा हम सब भारतीय हैं एनसीसी गीत पर खूब तालियां बजी। वहीं तान्या विद्यार्थी ने हिन्दी कविता की भी मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि निदेशिका श्रुति शुक्ला ने कहा कि देश की सशस्त्र सेनाओं के अदम्य साहस पर हम सभी भारतीयो को गर्व है। उन्होने छात्र छात्राओं को सशस्त्र सेनाओं मे भागीदारी को लेकर भी प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में संरक्षक विभवभूषण शुक्ल ने भारतीय सशस्त्र सेनाओं के सीमा रक्षा को लेकर दिये जा रहे योगदान को वंदनीय बताया गया। कार्यक्रम का संचालन उप प्रधानाचार्य मनीष ओझा एवं संयोजन ज्ञानचंद्र राय ने किया। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी सौरभ मिश्र रहे। कार्यक्रम मे बाल कलाकारो को निदेशिका श्रुति ने प्रशस्ति पत्र देकर हौसला आफजाई भी की। इस मौके पर देवेन्द्र प्रताप सिंह, सत्यप्रकाश विद्यार्थी, अर्चना, रमेशपाल तिवारी, योगेन्द्र शुक्ल, अशोक ओझा, सुनील कुमार आदि रहे।

संक्षेप

डीएम ने झंडा दिवस पर शहीदों के परिवार को दी सम्मान राशि

प्रतापगढ़। गौरवशाली सैनिक संगठन के सैनिकों ने सशस्त्र सेना दिवस के अवसर पर जिला अधिकारी डॉ0 नितिन बंसल को झंडा लगाकर शहीदों के परिवार के लिए सहयोग सम्मान राशि लिया। सेना के अफसरों ने जिलाधिकारी के इस सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान कैप्टन प्रमोद पांडेय, ओंकार शर्मा, सुनील शर्मा, सूबेदार आर डी मिश्रा, विजय यादव, दुर्गेश योगी, एवं संगठन के महासचिव आर ए सिंह आदि मौजूद रहे।

एएसपी की फटकार पर हमले मे मुकदमा

लालगंज। एएसपी की फटकार पर कोतवाली पुलिस ने पीडित पर चाकू से हमले की घटना मे आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है। लालगंज के नेवाज खां निवासी देवीदयाल यादव के पुत्र रवीन्द्र कुमार ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती चार अक्टूबर को गांव मे दुर्गा पूजा पाण्डाल पर नौटंकी हो रही थी। रात पौने दो बजे जब वह घर मे सो रहा था तो उसकी पत्नी ने बताया कि किसी ने नौटंकी बंद करा दी है। घर से बाहर निकलने पर सांगीपुर थाना के शुकुलपुर निवासी सददाम पुत्र मकसूद ने उस पर चाकू से हमला बोल दिया। हालांकि पीड़ित बाल बाल बच गया। उस समय सूचना पर पुलिस भी मौके पर पहुंची थी और आरोपी को थाने ले गयी थी। बाद मे पुलिस ने उसे सिरफिरा बताकर छोड दिया था। इधर पुलिस द्वारा पीडित का मुकदमा न लिखने पर उसने जिले के एएसपी पश्चिमी रोहित मिश्र से मिलकर आप बीती सुनाई। एएसपी की फटकार पर पुलिस ने मंगलवार की रात घटना मे मुकदमा दर्ज किया है।

मर्यादा का जीवन ही मनुष्य के लोक मंगल का प्रतीक : अतुल जी महराज

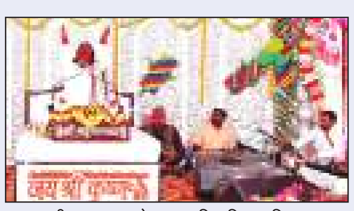

लालगंज। नगर पंचायत के दीवानी वार्ड मनीपुर में हो रही श्रीमदभागवत कथा विश्राम दिवस पर बुधवार को भक्ति संगीत की अनुपम प्रस्तुतियों के बीच गोविन्द राधे की महिमा का बखान हुआ। कथाव्यास प्रयागराज श्रृंगवेरपुर से पधारे अतुल जी महराज ने कहा कि जिस दिन मनुष्य दैहिक मोह तथा अपने विकार से स्वयं को मुक्त कर लेता है उसी दिन उसे परमात्मा की प्राप्ति की अनुभूति हो जाया करती है। उन्होनें कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने जीवन जीने का सबसे बडा संदेश मर्यादा के जीवन का दिया। उन्होने कहा कि मानव शरीर जब तक मयार्दा की रेखा में रहती है तब तक उसका समाज मे गुणगान होता रहता है। मयार्दा की रेखा से बाहर आने पर वह चाहे पुरूष हो अथवा नारी उसका लोक जीवन कलंक के अभिशाप से ग्रसित हो उठता है। उन्होने श्रद्धालुओं को समझाया कि मयार्दा से एक बार बाहर आ जाने पर दोबारा जीवन में उसे मयार्दा का अलंकरण नही मिल पाता। अतुल जी महराज ने कहा कि गोविंद ने रासलीला में भी गोपिकाओं को उनके पतित्व धर्म की मयार्दा का साक्षात बोध कराया है। भगवान की प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव अपने कर्म की सुचिता के प्रति सावधान रहना चाहिए। कथा के दौरान महिलाओं द्वारा प्रभु संकीर्तन और भागवत भगवान की मंगल वंदना से कथास्थली भक्तिभावना मे गुंजायमान हो उठी। कथा के संयोजक पं. भगवत प्रसाद मिश्र एवं उर्मिला मिश्रा ने व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया। पं. गिरीश मिश्र व पं. माताफेर मिश्र तथा देवी प्रसाद मिश्र ने कथाव्यास को सम्मानित किया। इस मौके पर चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, मानसमराल पं. रामफेर पाण्डेय, उमाशंकर मिश्र, नरेन्द्र नारायण तिवारी, साधना तिवारी, नवीन शुक्ला, उदयशंकर दुबे, केडी मिश्र, बृजेश द्विवेदी, मनीष मिश्र, संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल महेश, आचार्य दिवाकर शुक्ल, दयाशंकर तिवारी, कंचनलता, सुधा मिश्रा, ज्योति, मंजू शुक्ला, भाग्यश्री, मुन्ना शुक्ला, शिवदर्शन त्रिपाठी, करूणाशंकर मिश्र, जमुना प्रसाद तिवारी, रमाशंकर मिश्र, आचार्य प्रमोद मिश्र, अजय मिश्र आदि रहे। सह संयोजक अशोक कुमार मिश्र व अनिल मिश्र ने आभार प्रदर्शन किया।

किसानों का सम्मान पहली प्राथमिकता : विधायक

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा नवसृजित नगर पंचायत कोंहड़ौर बाजार में बुधवार को किसान सम्मेलन आयोजित किया गया। भाजपा किसान मोर्चा प्रतापगढ़ के जिलाध्यक्ष विजय मिश्रा ने किसानों को हर सुख-दुरूख में किसान मोर्चा के सहभागी रहने के साथ ही शासन की योजनाओं को हर घर पहुंचाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य ने किसान मोर्चा प्रतापगढ़ को जनपद में पार्टी की आकांक्षानुरूप कायार्नुपालन पर शुभकामना दिया। उन्होंने क्षेत्र की समस्याओं के उन्मूलन के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। भाजपा जिलाध्यक्ष ने उपस्थित जनसमूह से भाजपा प्रत्याशी को नगर पंचायत चुनाव में विजयी बनाने के लिए भाजपा की विचारधारा पर विश्वास करते हुए मतदान करने की अपील की। साथ ही भाजपा सरकार की समावेशी, निष्पक्ष एवं आम जनकेन्द्रित योजनाओं की विस्तृत चर्चा की।कार्यक्रम के आयोजक धनंजय पाण्डेय ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। इस दौरान मंडल अध्यक्ष डॉ सूर्य प्रकाश त्रिपाठी, विजय तिवारी श्नीटू, जिला संयोजक अशोक मिश्र, अभिनव शुक्ल, पंकज मिश्र, समेत पुरुष व महिला किसान उपस्थित रहे।

विकास कार्यों का करें स्थलीय निरीक्षण : बीडीओ

बैठक की अध्यक्षता करते खंड विकास अधिकारी देवराज पटेल

प्रतापगढ़। बाबागंज ब्लाक परिसर में बुधवार को साप्ताहिक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता खंड विकास अधिकारी देव राज पटेल ने की। जिसमें उन्होंने संबंधित एडीओ एवं ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत को निर्देशित करते हुए कहा कि ग्राम पंचायतों में हो रहे विकास कार्यों पर मिली शिकायत को स्थलीय निरीक्षण कार्य को पूर्ण कराएं। इस मौके पर जे आई एम आई राम अजोर पांडे, ग्राम पंचायत अधिकारी अरुण सरोज, आईएसबी एडीओ संजय चंद्रा, कंप्यूटर ऑपरेटर मनरेगा आशु तिवारी, मोहित तिवारी, ग्राम पंचायत अधिकारी राजकुमार मिश्रा, तकनीकी सहायक चंद्रकांत द्विवेदी, ऋषभ तिवारी, अंकुर द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

आरपीएफ ने खाली कराई पद्मावत एक्सप्रेस, हंगामा

हंगामा

- यार्ड में खड़ी थी ट्रेन, इमरजेंसी विंडो सरका कर घुस गए यात्री
- सीडीओ कर्मचारियों पर पैसा लेकर अंदर बैठाने का आरोप
- सीडीओ कर्मचारियों की लापरवाही से आरपीएफ वाले नाराज दिखे

ट्रेन से उतारे गये यात्री

प्रतापगढ़। यार्ड में खड़ी पद्मावत एक्सप्रेस ट्रेन में बैठे यात्रियों को रेलवे सुरक्षा बल ने सेफ्टी के लिहाज से नीचे उतार दिया। इससे हंगामा शुरू हो गया। बाद में ट्रेन को प्लेटफार्म पर लाया गया। तब जाकर यात्री बैठे।

दिल्ली जाने वाली पद्मावत एक्सप्रेस प्लेटफार्म पर आई भी नहीं थी। यार्ड में थी तभी यात्रियों की भीड़ अंदर घुसने लगी। यात्रियों को अंदर बैठा देख रेल कर्मचारियों ने सुरक्षा के लिहाज से शटिंग करना उचित नहीं समझा। उन्होंने इसकी जानकारी एसएस को दी। एसएस ने आरपीएफ को फोन किया लेकिन वे लोग देर से पहुंचें। फिलहाल किसी तरह से ट्रेन को खाली कराया। उसके बाद उसे खींच कर प्लेटफार्म पर लगाया गया। कोच से उतारे गए जनरल कोच के यात्री नाराज थे। उन्होंने हंगामा शुरू कर दिया। हालांकि पुलिस ने सभी को शांत कराया। उनके इस तरह से बैठने को खतरनाक बताया। सीडीओ कर्मचारियों की लापरवाही से आरपीएफ वाले नाराज दिखे। एसएस का कहना है कि उन्होंने आरपीएफ को सूचित किया था। वे लोग देर से आए। सीडीओ स्टाफ ने गेट नही बंद किया था। इससे ट्रेन को प्लेटफार्म पर लाने में दिक्कत हुई। सूत्रों के अनुसार ट्रेन की इमरजेंसी विंडो को सरका कर यात्रियों को चुपके से अंदर बैठाया गया। इसमें सीडीओ के कर्मचारियों ने खेल किया है। मामले की जांच कराई जा रही है। यह खेल पहले भी होता था।

राज्यसभा में प्रमोद तिवारी की गूंजी आवाज, मगन हुआ बेल्हा

राज्यसभा में वक्तव्य देते सांसद प्रमोद तिवारी

लालगंज। राज्यसभा में प्रतापगढ़ की आवाज बुधवार को एक बार जब फिर गूंजी तो जिले भर का कांग्रेसी खेमा खुशी से चहक उठा। संसद सत्र मे राज्यसभा में सभापति एवं उप राष्ट्रपति जगदीप धनकड को आसन ग्रहण करने पर प्रमोद तिवारी भी पार्टी संसदीय दल की ओर से धारदार वक्तव्य के जरिए शुभकामनाएं देते दिखे। वहीं बुधवार को कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी की भी राज्यसभा में आवाज गूंजी तो बेल्हावासी भी मगन हो उठे। सदन मे सभापति जगदीप धनकड को आसन के लिए शुभकामनाएं देते हुए राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कांग्रेस संसदीय दल की ओर से उम्मीद जतायी कि राज्यसभा देश के लोकतांत्रिक मूल्यो की रक्षा तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मे अपने कारगर योगदान का गौरवशाली इतिहास रचती रहेगी। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी द्वारा खुद के यूपी से होने और राजस्थान से राज्यसभा सदस्य निर्वाचित होने का हवाला देते हुए उप सभापति के भी राजस्थान से होने को लेकर विपक्ष को वरीयता के वक्तव्य पर जहां विपक्षी सांसदो ने मेजे थपथपाकर खुशी जतायी। वही सांसद प्रमोद तिवारी का आसन के प्रति शुभकामनाएं देने मे भी तार्किक शैली को सुनकर सभापति जगदीप धनकड के भी चेहरे पर मुस्कान तैर उठी दिखी। राज्यसभा चैनल पर प्रमोद तिवारी का लाइव भाषण सुनकर लालगंज मे क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के कैम्प कार्यालय पर जुटे कार्यकताओं के चेहरे भी खिल उठे दिखे। मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने सांसद प्रमोद तिवारी के राज्यसभा में वक्तव्य की जानकारी देते हुए कहा कि देश के सर्वोच्च सदन में प्रतापगढ़ की आवाज फिर मजबूती से गूंजने पर जिले के विकास तथा नाम को और रोशन होने का गौरव मिला है।

शराब के पैसे नहीं देने पर युवक को लाठी-डंडों से पीटकर किया जख्मी

पट्टी। आरोपियों द्वारा एक युवक से शराब पीने के पैसे की मांग करने पर पीड़ित ने जब इनकार किया तो आरोपियों ने उसे लाठी-डंडों से मारपीट कर जख्मी कर दिया। बीच-बचाव करने आए उसकी पत्नी को पीट दिया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के लबेदा गांव का रहने वाला फूलचंद्र पुत्र हुबलाल अनुसूचित जाति का है। मंगलवार की शाम 8 बजे उसके घर पर गांव के 2 लोग पहुंचे और उससे शराब पीने के पैसे मांगने लगे। असमर्थता जताने पर उसे जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए लाठी-डंडों से मारपीट कर जख्मी कर दिया। बीच-बचाव करने आई उसकी पत्नी को भी आरोपियों ने पीटकर जख्मी कर दिया किसी तरह जान बचाकर बुधवार को पट्टी कोतवाली पहुंचा और आरोपियों के विरुद्ध शिकायती पत्र दिया।

किसानों को दिया गया मुफ्त में चने का बीज

चने के बीज संग किसान

प्रतापगढ़। भाजपा किसान मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष व बाबागंज के मोर्चा प्रभारी योगेंद्र नाथ मिश्र के प्रयास से कालाकाकर ब्लाक के कृषि रक्षा इकाई में किसानों को निशुल्क चने का बीज वितरित किया गया। निशुल्क चने का बीज पाकर किसान खुश नजर आए। जिला उपाध्यक्ष मौला महाराज ने बताया कि भाजपा सरकार किसानों के हित में 100ः काम कर रही है। इस मौके पर भाजपा के डीह बूथ अध्यक्ष अनुज शुक्ला, भाजपा मंडल प्रभारी मानिकपुर संतोष तिवारी, अनुसूचित मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष बबलू सोनकर, कृषि रक्षा प्रभारी जगदंबिका प्रसाद तिवारी, किसान पन्ना, हीरा लाल, शिव कैलाश, प्रकाश, सह प्रभारी राजकुमार प्रजापति आदि मौजूद रहे।

धूमधाम से निकाली गई कलश यात्रा

घुइसरनाथधाम। बाबा घुश्मेश्वर धाम में बुधवार को संगीतमयी श्रीमद्भागवत भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। कथा प्रारम्भ होने से पूर्व भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया। कथा व्यास पं शेषधर महराज ने कथा के प्रथम दिन श्रीमद्भागवत महात्म्य का विस्तृत वर्णन करते हुए कहा कि परमात्मा की प्राप्ति निष्काम भाव व सच्चे मन से आराधना करने पर ही सम्भव होती है। कलयुग में भागवत कथा मानव जीवन के कल्याण का सबसे उपयुक्त माध्यम है। संयोजक राम बहादुर सोनी, विश्वनाथ वर्मा, रोहित श्रीवास्तव, मगन तिवारी, अंजनी शर्मा, राकेश जायसवाल, मनोज सोनी, माता प्रसाद सोनी, संजय पांडेय, अखिलेश मिश्र, राजेन्द्र मिश्र मौजूद रहे।

तीन आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत गंभीर धाराओं मे केस

लालगंज। लालगंज निवासी शिवप्रसाद मिश्र की पत्नी सपना मिश्रा ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती उन्तीस नवंबर को कूडा फेंकने के विवाद मे विपक्षी आशीष तिवारी पुत्र राजेन्द्र तिवारी तथा राजेन्द्र तिवारी पुत्र अज्ञात एवं राजेन्द्र की पुत्री मंजू ने उसके घर मे घुसकर मारपीट की। आरोपियो ने गालीगलौज करते हुए लाठी डंडे व धारदार हथियार से हमले मे पीडिता के पति शिव प्रसाद तथा सास व ससुर को मारपीट कर घायल कर दिया। आरोपी आशीष के हमले मे उसके पति को सिर मे गंभीर चोटे आ गयी और वह बेहोश हो गया। शोर मचाने पर आरोपी गृहस्थी के सामान भी तोडकर नष्ट कर दिये। लोगों को जुटता देख आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। घायलों का ट्रामा सेंटर मे इलाज के बाद जिला चिकित्सालय मे इलाज कराया गया। पीडिता ने समाधान दिवस मे एसपी से मिलकर कार्रवाई की मांग की। एसपी की फटकार पर कोतवाली पुलिस ने मंगलवार की रात आरोपी आशीष समेत तीन के खिलाफ गंभीर धाराओं मे केस दर्ज किया है।

पुरानी पेंशन बहाली को लेकर अटेवा ने निकाला कैंडल मार्च

श्रद्धांजलि

- प्रदेश अध्यक्ष विजय कुमार बंधु के आह्वान पर पूरे प्रदेश के साथ प्रतापगढ के कम्पनी गार्डेन में आयोजित हुई श्रद्धांजलि सभा

श्रद्धांजलि सभा में शामिल लोग

प्रतापगढ। बुधवार को सैकड़ों शिक्षकों, कर्मचारियों ने पेंशन बहाली आंदोलन मे शहीद डा.राम आशीष सिंह को श्रद्धांजलि देकर कैंडलमार्च निकाला। अटेवा पेंशन बचाओ मंच उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष विजय कुमार बंधु के आह्वान पर पूरे प्रदेश के साथ प्रतापगढ के कम्पनी गार्डेन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन अटेवा के जिला संरक्षक डा.विनोद त्रिपाठी व अध्यक्षता मो.अकरम प्रधान शारदा सहायक सिंचाई ने किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में डा. राम आशीष सिंह के संघर्षों व सात दिसंबर के आंदोलन एंव घटनाचक्र को याद करते हुए सभी शिक्षकों, कर्मचारियों ने नम आंखों से याद किया। संकल्प लिया कि जिस तरह से डा.राम आशीष सिंह पेंशन बहाली के लिए अपने को बलिदान दे दिया है। हम प्रत्येक कर्मचारियों का लक्ष्य है कि उनके सपनों को साकार करते हुए जब तक पेंशन बहाल नहीं हो जाएगी उनको सच्ची श्रद्धांजलि नहीं दे पाएंगे। श्रद्धांजलि सभा के बाद अम्बेडकर चौराहे से सैकड़ों की संख्या में कर्मचारी कैंडलमार्च निकालते हुए जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास कार्यालय पहुंच कर कार्यक्रम का समापन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में जनपद के प्रत्येक ब्लाक के पदाधिकारी, विभिन्न विभागों के कर्मचारी व शिक्षकों ने श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर सीपी राव, पार्वती विश्वकर्मा, विनय सिंह, विश्वदीप सिंह, अखिलेश सरोज, जय प्रताप, विद्या देवी, विनीता सरोज, बाल्मीकि सरोज, ओमकार नाथ, विमल राव, अरविंद कुमार विन्द, कृष्ण कुमार, दिनेश वर्मा, सतीश, महेन्द्र, शक्ति प्रकाश, महेश मणि, हीरा लाल मौर्य, प्रमोद कुमार, सन्त कुमार वर्मा, राजेन्द्र प्रसाद वर्मा सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी व शिक्षक उपस्थित रहे।

जनसंपादकीय

गरिमा, स्वतंत्रता और सभी के लिए न्याय

विश्व मानवाधिकार दिवस मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र संघ ने 10 दिसंबर 1948 को की थी। उस समय संयुक्त राष्ट्र संघ के 56 देश सदस्य थे वर्तमान में विश्व के 193 देश सदस्य हैं। यह घोषणा संयुक्त राष्ट्र संघ की सामान्य महासभा ने की थी पर आधिकारिक तौर पर इसके बारे में घोषणा 1950 में की गयी थी। मानवाधिकार का मुख्य उद्देश्य लोगों को उनके मूलभूत अधिकारों के प्रति जागरूक करना है । लोगों के सामाजिक सांस्कृतिक और शारीरिक अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और सभी का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है। इस दिन संयुक्त राष्ट्र सभी के लिए समान अवसर पैदा करने और असमानता का बहिष्कार और भेदभाव के मुद्दों को संबोधित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।एक सर्वे के अनुसार लगभग 80प्रश लोग अपने अधिकारों की पूर्ण जानकारी नहीं रखते हैं। मानवाधिकार में मनुष्य को नस्ल, रंग, धर्म ,लिंग ,भाषा, राष्ट्रीयता और विचारधारा आदि के आधार पर प्रताड़ित नहीं किया जा सकता है ।मानवाधिकार में स्वास्थ्य, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक अधिकार भी शामिल हैं। भारत में शिक्षा का अधिकार इसी गारंटी के तहत आता है ।मानवाधिकार दिवस की हर वर्ष अलग अलग थीम होती है 2019 में इसकी थीम थी 'यूथ इन स्टैंडिंग अप फॉर ह्यूमन राइट्स' इस थीम में माना गया था कि युवाओं की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 2020 की थीम महिलाओं के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय उन्मूलन में अरेंज द वर्ल्डः फंड प्रिवेन्ट कलेक्ट है। 2021 की थीम समानता , आसमानता को कम करना मानव, अधिकारों को बेहतर करना थी। वर्ष 2022 में मानवाधिकार की थीम है गरिमा स्वतंत्रता और सभी के लिए न्याय (डिगनिटी फ्रीडम और जस्टिस फार आल)।

भारत में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए 28 सितंबर 1993 से मानवाधिकार कानून लागू किया गया था । इसके बाद 12 अक्टूबर 1993 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग एक बहु सदस्यीय संस्था है जिसमें एक अध्यक्ष ,5 पूर्णकालिक सदस्य होते हैं इसमें 2 डीम्ड सदस्य होते हैं अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय कमेटी की सिफारिशों के आधार पर की जाती है ।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के कार्य क्षेत्र में बाल विवाह, स्वास्थ्य ,भोजन ,बाल मजदूरी, महिला अधिकार, हिरासत और मुठभेड़ से होने वाली मौत ,अल्पसंख्यकों और अनुसूचित जाति और जनजाति के अधिकार भी आते हैं। मनुष्यों को अधिकारों की पहचान देने और उनके हक की लड़ाई को ताकत देने के लिए ही मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है। विश्व में मानवता के खिलाफ हो रहे अत्याचारों को रोकने और उनके खिलाफ आवाज उठाने की ही मानवाधिकार की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि हम निश्चित रूप से विचार करते हैं तो निम्न बातें आती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की आजादी एवं सुरक्षा का अधिकार है गुलामी व दासता से आजादी का अधिकार है। किसी भी व्यक्ति को गुलामी या दासता की हालत में नहीं रखा जा सकता है। गुलामी प्रथा व्यापार पूरी तरह से निषिद्ध हो गयी है।

यातना ,प्रताड़ना, क्रूरता से आजादी का अधिकार - अर्थात किसी को शारीरिक यातना नहीं दी जा सकती और न किसी के भी प्रति निर्दय अमानवीय या अपमान जनक व्यवहार किया जा सकता है। कानून के सामने समानता का अधिकार अर्थात हर किसी को हर जगह कानून की निगाह में व्यक्ति के रूप में स्वीकृत प्राप्ति का अधिकार है। कानून सभी को समान संरक्षण का अधिकार देता है अर्थात कानून की निगाह में सभी समान हैं। और सभी को भेदभाव के बिना समानता है और सभी को कानूनी सुरक्षा का अधिकार है। हर व्यक्ति को न्याय के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाने का अधिकार है। सभी को संविधान या कानून द्वारा प्राप्त बुनियादी अधिकारों पर किसी के द्वारा अतिक्रमण किए जाने पर समुचित राष्ट्रीय अदालतों की सहायता पाने का अधिकार है। मनमाने ढंग से की गई गिरफ्तारी हिरासत में रखने में या निर्वसन से आजादी का अधिकार है अर्थात किसी को भी मनमाने ढंग से गिरफ्तार ,नजरबंद या देश से निष्कासित नहीं किया जा सकता है। जब तक अदालत किसी भी व्यक्ति को दोषी करार नहीं देती है उस वक्त तक उसे निर्दोष होने का अधिकार है । अर्थात किसी भी व्यक्ति जिस पर अपराध का आरोप चल रहा है वह तब तक निर्दोष माना जाएगा जब तक उसे खुली अदालत ने कानून के अनुसार अपराधी सिद्ध न कर दिया जाए । साथ ही उसे अपनी सफाई देने व सभी आवश्यक सुविधाएं प्राप्ति का अधिकार है । मानवाधिकार में अपने देश में भ्रमण और किसी दूसरे देश में आने -जाने का अधिकार भी है प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश की सीमाओं के अंदर स्वतंत्रता पूर्वक आने-जाने, रहने एवं अपने या दूसरे देश को छोड़ने तथा अपने देश में वापस आने का अधिकार है । किसी भी व्यक्ति को देश में राजनीतिक शरण मांगने का अधिकार भी है। अर्थात किसी व्यक्ति को सताए जाने पर उसे दूसरे देशों में शरण लेने और रहने का अधिकार है परंतु इस अधिकार का लाभ ऐसे मामले में नहीं मिलेगा जो वास्तव में गैर राजनीतिक अपराधों से संबंधित है या संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य और सिद्धांतों के खिलाफ है। घर परिवार और पत्राचार में निजता का अधिकार ,-अर्थात किसी व्यक्ति को एकांतता ,परिवार, घर या पत्र व्यवहार के प्रति कोई भी कोई मनमाना हस्तक्षेप न किया जाए न ही किसी के सम्मान और ख्याति पर कोई आक्षेप हो ।ऐसा आक्षेपों के विरुद्ध प्रत्येक को कानूनी सुरक्षा का अधिकार प्राप्त है। विश्व में कुछ देश ऐसे भी हैं जहां मानवाधिकार नहीं मिल रहे हैं। और अनेक प्रकार की प्रताड़नाएं भी शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद का एक संगठन बनाया गया है अर्थात संयुक्त राष्ट्र निकाय है परिषद का उद्देश्य है कि दुनिया भर में मानवाधिकारों को बढ़ावा दिया जाए इनकी रक्षा की जाए। इसकी स्थापना 15 मार्च 2006 में की गई थी इसका मुख्यालय जिनेवा स्विट्जरलैंड में है संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के 47 देश सदस्य होते हैं इनका चुनाव 3 साल के लिए किया जाता है कोई भी देश 2 बार से अधिक सदस्य नहीं हो सकता है। इन 47 सदस्यों में अफ्रीकी समूह के लिए 13, एशिया -प्रशांत समूह के लिए 13, पूर्वी यूरोपीय समूह के लिए 6, लैटिन अमेरिकी और कैरेबियन समूह को के लिए 8, पश्चिमी यूरोपीय और अन्य समूह के लिए 7 सदस्य होते हैं। परिषद के सदस्य राज्यों में मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोपों की जांच करते हैं। मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए इतनी व्यवस्थाओं के होते हुए भी मानवाधिकारों के मोर्चे पर लड़ाई अभी लंबी है जिसके खत्म होने में लंबा समय लग सकता है। अपने देश में ही मानवाधिकार कानूनी उपाय सभी को प्राप्त है। पर व्यक्ति की हैसियत देखकर ही उसे मानवाधिकार दिये जाते हैं। जिन स्थानों के अधिकांश लोग अशिक्षित है वहां मानवाधिकारों का पूर्णतः हनन होता है। कभी -कभी पुलिस प्रशासन बेकसूर लोगों को मारपीट करने के साथ झूठे मामलों में जेल भेज देता है। न्याय व्यवस्था का लाभ सक्षम, धनी ,उच्च स्तरीय लोगों को ही मिल पाता है । निर्धन, पिछड़े, गरीब लोग न्याय व्यवस्था का लाभ लेने से वंचित हो जाते हैं । इसका कारण महंगी न्याय व्यवस्था तथा लम्बे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है। फिर भी मानवाधिकार दिवस लोगों कों अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करता है सरकारों को भी मानव अधिकारों का शत प्रतिशत तत्परता से पालन कराए।

ओमप्रकाश सुमन
पूर्व प्रवक्ता स्मृति महाविद्यालय भीरा, लखीमपुर खीरी

भारतीय प्रेस व्यावसायिकता के चंगुल में

प्रसार माध्यम

प्रभात किशोर

भारतीय प्रेस की जीवन यात्रा दो सौ से कुछ हीं अधिक वर्षों की है। भारतवर्ष के प्रथम समाचार-पत्र बंगाल गजट की नींव सन् 1780 में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक ब्रिटिश कर्मचारी श्री विलियम ऑगस्टस हिक्की द्वारा डाली गई थी । श्री हिक्की ने कम्पनी के कर्मचारी विरोधी नियमों के विरूद्ध संघर्ष किया, गवर्नर जनरल तथा मुख्य न्यायाधीश पर प्रहार किया, कारावास की सजा पाई और अंत में उनको भारतवर्ष से निर्वासित कर दिया गया । पत्रकारिता के क्षेत्र में तब श्री बकिंघम जैसे दूसरे लोगों ने भी अग्रणी भूमिका निभाई । भारतीयों में ही एक से अधिक भाषाओं में प्रेस का संचालन करने का श्रेय प्रख्यात समाज सुधारक राजा राम मोहन राय को जाता है, जिन्हें भारतीय पुनर्जागरण का अगदूत भी कहा जाता है । कुछ अन्य भारतीय तथा अंग्रेज भी इस क्षेत्र में दिशानिर्देशक की भूमिका में रहे।

भारतीय प्रेस प्रारम्भ से ही एक भाषा तक सीमित नहीं रही । यहाँ अनेक भाषाओं यथा- हिन्दी, मराठी, बंगाली, तमिल, अंग्रेजी, उर्दू आदि के प्रेस सक्रिय रहे । हालांकि इनका उद्भव और विकास अनियमित रहा, परन्तु कुल मिलाकर इनमें अनेकों एक समान विशेषताएं थी । प्रेस दमन से मुक्ति तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के प्रतीक थे । भारतीय प्रेस का इतिहास भारतवर्ष के इतिहास पर तथा भारतवर्ष का इतिहास ब्रिटिश इतिहास पर आश्रित था । ब्रिटेन में लिबरलों के शासन की स्थिति में भारत का ब्रिटिश प्रशासन भी उदार होता था, जैसा कि बेंटिक या रिपन के काल में था, जबकि टोरी या कंजरवेटिव के शासन में भारतीय प्रशासन हब्शी बन जाता था। कम्पनी राज तथा सन् 1858 के पश्चात महारानी के शासन मे कोई अंतर नहीं था। भारतीय राजनीति में नरम तथा गरम दल की भांति समाचार-पत्र भी नरम एवं गरम विचारधारा के पथगामी थे ।

गांधीजी द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन की कमान थामने के उपरान्त प्रेस ने अपने संयमित स्वरूप का परित्याग कर निर्भिक एवं जुझारू रूख अख्तियार कर लिया । जैसे-जैसे राष्ट्रीय आंदोलन परवान चढ़ता गया तथा प्रेस अधिक विद्रोही एवं विप्लवकारी होते गए, वैसे-वैसे प्रेस पर शासन का शिकंजा कसता गया । ब्रिटिश शासन के दौरान प्रेस का इतिहास प्रायः दमन, अत्याचार और प्रेस-कानून का इतिहास ही रहा।

प्रेस के आरंभिक दिनों में समाचार-पत्रों का प्रसार अति-न्यून था, हालांकि प्रेस जनचेतना के प्रभावशाली तंत्र थे । परन्तु शिक्षा के प्रसार, राजनैतिक जागरण एवं परिवहन तंत्र के विकास के साथ पत्रों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई और कुछ समाचार-पत्र तो काफी बड़े बन गए ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय प्रेस के नये युग का श्रीगणेश हुआ । पत्रकारिता अब एक मिशन नहीं रही, बल्कि इसने एक व्यवसाय का रूप ले लिया । जैसे-जैसे समाचार-पत्रों की प्रसार-संख्या में वृद्धि हुई, इसका औद्योगिक शर्तों के आधार पर संचालन किया जाने लगा और समाचार-पत्र तंत्र एक पूर्ण उद्योग में परिणत हो गया । पत्र-उद्योग पर अधिकाधिक पूंजी निवेश किया जाने लगा, मजदूरी एवं वेतन में वृद्धि करनी पड़ी, व्यावसायिक मान्यताएं प्रधान हो गयीं, प्रौद्योगिकी का विकास हुआ, नये-नये तकनीकों का समावेश हुआ तथा प्रेस आर्थिक कानूनों पर आधारित जनसंचार का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई ।

सन् 1952 में भारत सरकार द्वारा प्रेस की स्थिति की जांच हेतु प्रथम प्रेस आयोग की नियुक्ति की गई । अब तक न तो श्रमजीवी पत्रकारों के लिए कोई सेवा शर्त थी और न हीं समाचार-पत्र उपक्रमों का कोई नियम-कानून था। प्रथम प्रेस आयोग (1952-54) जॉच-कानून के अंतर्गत गठित होने वाला प्रथम आयोग था । इसने काफी मात्रा में प्रेस संबंधी तथ्यों का संग्रह किया तथा इस उद्योग में कानून-व्यवस्था की बहाली हेतु कई अनुशंसाएं की । इन अनुशंसाओं के आधार पर सूचना-संग्रह एवं वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशन हेतु एक प्रेस पर्यवेक्षक की नियुक्ति की गई, प्रकाशन की निरंतरता सुनिश्चित करने हेतु पत्र-कानून में संशोधन किया गया , सुरक्षित एवं निष्पक्ष सेवा शर्तों तथा सामयिक वेतन मंडलों की नियुक्ति सुनिश्चित करने हेतु श्रमजीवी पत्रकार एवं अन्य समाचार-पत्र कर्मचारी (सेवा की शर्तें) तथा विविध उपबंध अधिनियम 1955 पारित किया गया, पत्रों की स्वतंत्रता की रक्षा एवं उनका उच्च स्तर बनाये रखने हेतु प्रेस परिषद का गठन किया गया तथा पृष्ठाधार मूल्य निर्धारण की नीति पारित की गई । प्रथम पत्र-आयोग ने पत्र-उद्योग को बड़े औद्योगिक घरानों से विलग कर इसे सहकारिता के आधार पर चलाने पर जोर दिया । पर अधिकांश अनुशंसाएं जहां लागू नहीं की गईं, वहीं पृष्ठाधार मूल्य निर्धारण संबंधी सरकारी आदेश उच्चतम न्यायालय द्वारा असंवैधानिक घोषित कर दिया गया ।

24 मई 1978 को जनता पार्टी सरकार द्वारा न्यायमूर्ति पी0 के0 गोस्वामी की अध्यक्षता में द्वितीय प्रेस आयोग का गठन किया गया तथा 1980 में कांग्रेस के पुनः सत्तासीन हो जाने के पश्चात 21 अप्रैल 1980 को सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति के0 के0 मैथ्यू की अध्यक्षता में नये विचारणीय बिन्दुओं के साथ इसका पुनर्गठन किया गया । गोस्वामी आयोग ने पत्र-संबंधी ढेर-सारे तथ्यों का संग्रह किया था, जिसे मैथ्यू आयोग ने अपने विश्लेषण एवं निष्कर्षों का आधार बनाया । द्वितीय प्रेस आयोग के प्रतिवेदन में भारतीय प्रेस की अब तक की प्रामाणिक तस्वीर उभर कर सामने आई । प्रेस के असाधारण विकास के संदर्भ में कोई शंका नहीं है, फिर भी यह प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है कि विकास, पर किस दिशा में ?

प्रथम प्रेस आयोग द्वारा एकत्र आंकड़ों के अनुसार सन् 1952 के अंत तक पूरे भारतवर्ष में 330 दैनिक, 1189 साप्ताहिक तथा 1733 अन्य सामयिक पत्र प्रकाशित होते थे । परन्तु सन् 1939 एवं 1949 (स्वतंत्रता पूर्व) में छप रहे समाचार-पत्रों से कोई तुलनात्मक विश्लेषण नहीं किया गया था। समाचार-पत्र पंजीयक के कार्यालय से भी वास्तविक प्रसार-संख्या के ऑकड़े प्राप्त करने में सहायता नहीं मिली, क्योंकि प्रेस कानून में स्पष्ट प्रावधानों के बावजूद बहुत से समाचार-पत्रों ने इसे प्रस्तुत नहीं किया ।

24 मई 1978 को जनता पार्टी सरकार द्वारा न्यायमूर्ति पी0 के0 गोस्वामी की अध्यक्षता में द्वितीय प्रेस आयोग का गठन किया गया तथा 1980 में कांग्रेस के पुनः सत्तासीन हो जाने के पश्चात 21 अप्रैल 1980 को सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति के0 के0 मैथ्यू की अध्यक्षता में नये विचारणीय बिन्दुओं के साथ इसका पुनर्गठन किया गया । गोस्वामी आयोग ने पत्र-संबंधी ढेर-सारे तथ्यों का संग्रह किया था, जिसे मैथ्यू आयोग ने अपने विश्लेषण एवं निष्कर्षों का आधार बनाया । द्वितीय प्रेस आयोग के प्रतिवेदन में भारतीय प्रेस की अब तक की प्रामाणिक तस्वीर उभर कर सामने आई ।

कुल पत्रों की संख्या, दैनिकों की संख्या तथा पत्रों की प्रसार-संख्या हर दृष्टि से भारतीय समाचार-पत्रों में वृद्धि का रूख जारी है । साथ हीं, जहां राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रेस अधिक मूल्य एवं अन्य अनगिनत अवरोधों के बावजूद अंग्रेजी प्रेस को मात दे शिखर पर पहुंच चुके हैं, वहीं अन्य भारतीय भाषा वाले प्रेसों का दिन दूना रात चौगुना विकास हुआ है ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय प्रेस के तुलनात्मक स्थिति की समीक्षा हेतु नवीनतम आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं , परन्तु स्थिति पर दृष्टि डालने पर पता चलता है कि दैनिक समाचार-पत्रों की संख्या की दृष्टि से भारतवर्ष एशिया का दूसरा सबसे बड़ा तथा अमरिका, जर्मनी, चीन के बाद विश्व का चौथा बड़ा राष्ट्र बन गया । फिर भी साक्षरता में वृद्धि के बावजूद जनसंख्या की तुलना में भारतवर्ष में समाचार-पत्रों की प्रसार-संख्या काफी कम है ।

भारतीय प्रेस भौगोलिक एवं सामाजिक सीमा से ग्रसित हैं तथा यह जनआकांक्षाओं पर खरी उतरने का प्रयत्न कर रही हैं । साक्षरता, न्यूज प्रिंट आपूर्ति तथा नवीन तकनीकों के पदार्पण के बावजूद पत्रों के प्रगति की राह में अवरोध बरकरार है । वर्तमान माहौल में समाचार-पत्रों के बीच स्वच्छ, सकारात्मक स्पर्द्धा कायम करनी होगी ताकि समाचार-पत्रों के मानक में अपेक्षाकृत सुधार हो सके । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इन पत्रों ने भी स्वतंत्रता का भरपूर उपभोग किया है और जब कभी उनकी स्वतंत्रता पर नियंत्रण का प्रयास हुआ तो प्रेस ने चारित्रिक दृढ़ता का परिचय देते हुए सशक्त तरीके से इसका प्रतिवाद किया।

भारतीय समाचार-पत्र उद्योग का मुख्य दोष यह है कि यह वर्तमान में दूसरे बड़े उद्योगों के नियंत्रणाधीन है । द्वितीय प्रेस आयोग ने अनुशंसा की थी कि समाचार-पत्र व्यवसाय को अन्य उद्योगों से पृथक करने की पहल प्रारंभ की जाय । ट्रेड यूनियन आंदोलन के विकास के परिणामस्वरूप इस उद्योग का सहकारिता के आधार पर संचालन का मार्ग प्रशस्त हुआ है । कुछ अन्य सुधार भी प्रेस को और अधिक स्वावलंबी बनाने तथा सामाजिक हितों को पूरा करने में काफी सहायक हो सकते हैं । सन् 1971 में अहमदाबाद में भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ ने समाज के शोषित, पीड़ित एवं उपेक्षित वर्गों का उत्थान तथा सामाजिक एवं आर्थिक न्याय हेतु कार्य करने का संकल्प लिया था । भारतीय प्रेस दो बड़े-बड़े कुशल संवाद समितियों द्वारा सेवित है तथा यह भूमंडली सूचनातंत्र के सुदृढ़ीकरण तथा गुटनिरपेक्ष समाचार-पुल के तहत एक नये वैश्विक सूचना-प्रबंध की तैयारी में अहम् भूमिका निभा रही है । श्रमजीवी पत्रकारों के माध्यम से भारतीय प्रेस स्वतंत्रता, समानता, शांति तथा न्याय हेतु कृतसंकल्प है ।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

याराना पूंजीवाद की पराकाष्ठा

सामयिकी

संदीप पांडेय

पिछले पांच वर्षों में विभिन्न कम्पनियों द्वारा बैंकों से रु. 10,09,510 करोड़ का जो ऋण लिया गया वह माफ कर दिया गया है। इसे बैंक की भ्रमित करने वाली भाषा में नॉन परफामिंग एसेट (अनुपयोगी सम्पत्ति) कहा जाता है। सिर्फ स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ने अकेले ही रु. 2,04,486 करोड़ का कर्ज माफ किया है। कुल माफ की गई राशि का 13 प्रतिशत ही वसूला जा सका है।

ऋण माफ का लाभ प्राप्त करने वाली कम्पनियों का नाम उजागर नहीं किया जाता। जबकि यदि कोई किसान ऋण लेता है और अदा नहीं कर पाता तो उसका नाम तहसील की दीवार पर लिखा जा सकता है और उसे तहसील में 14 दिनों की हिरासत में भी रखा जा सकता है, जो अवधि बढ़ाई भी जा सकती है। बड़े पूंजीपति बैंकों का पैसा लेकर देश से पलायन कर जाते हैं। उनके भागने की आशंका होते हुए भी सरकार उनका पासपोर्ट कभी नहीं जब्त करती जैसे वह शासक दल से अलग राय रखने वाले उन बुद्धिजीवियों का कर लेती है जिनके खिलाफ फर्जी मुकदमे भी दर्ज हो जाते हैं।

अब राजनीतिक दलों को चुनावी बांड के माध्यम से चंदा देने वाला मामला देखा जाए। चंदा देने वाले का नाम लाभार्थी राजनीतिक दल को चुनाव आयोग व आयकर विभाग को बताने की जरूरत नहीं है। 2018 में जबसे चुनावी बांड योजना शुरू हुई तबसे वित्तीय वष 2020-21 के अंत तक भारतीय जनता पाटी को रु. 4,028 चुनावी बांड में चंदे के रूप में मिले जो उसे मिले कुल चंदे का 63 प्रतिशत है और अज्ञात मिले चंदे का 92 प्रतिशत है। इस दौर में कांग्रेस पाटी को रु. 731 करोड़ चुनावी बांड से चंदा मिला, जिससे इस बात का अंदाजा लगता है कि कांग्रेस खुलकर चुनावी बांड योजना का विरोध क्यों नहीं कर रही। अभी तक रु. 10,791.47 करोड़ के चुनावी बांड खरीदे गए हैं। 2020-21 के अंत तक सभी राष्ट्रीय दलों को चुनावी बांड से मिले चंदे का 80 प्रतिशत चंदा भाजपा को मिला और सभी राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय दलों को मिलाकर मिले चंदे का 65 प्रतिशत भाजपा को मिला। जाहिर है कि भाजपा चुनावी बांड योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी है और उसके कुल चंदे का लगभग दो तिहाई अब चुनावी बांड के माध्यम से आ रहा है।

क्या कम्पनियों का जो ऋण माफ किया जा रहा है उनके नाम गोपनीय रखने व जो कम्पनियां चुनावी बांड के माध्यम से चंदा दे रही हैं उनके नाम गोपनीय रखने में कोई सम्बंध है? सेवा निवृत कमोडोर लोकेश बतरा को सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त एक जवाब से यह मालूम हुआ है कि चुनावी बांड के माध्यम से जो चंदा दिया गया है उसमें से 93.67 प्रतिशत चंदा रु. 1 करोड़ के बांड, जो सबसे बड़ा बांड है, में खरीदा गया है जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि चुनावी बांड के माध्यम से ज्यादातर बड़ी कम्पनियां, जिनमें कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भी हो सकती हैं, चंदा दे रही हैं जो इस देश में आम लोगों की दृष्टि से नीति निर्माण और लोकतंत्र के हित में नहीं है। शक इसलिए भी पैदा होता है कि 2018 से, जबसे चुनावी बांड की योजना लागू हुई है, कम्पनियां जो पहले अपने पिछले तीन साल के औसत मुनाफे का 7.5 प्रतिशत तक ही चुनावी चंदा दे सकती थीं अब उनके लिए कोई पाबंदी नहीं है। यानी अब कोई घाटे में चल रही कम्पनी भी चुनावी बांड से चंदा दे सकती है। जिन कम्पनियों का ऋण माफ किया जा रहा है वे तो शायद घाटे में ही हैं, इसीलिए ऋण अदा नहीं कर पा रही हैं। क्या यह सम्भव है कि कुछ कम्पनियां बैंकों से ऋण लेकर चुनावी बांड के माध्यम से चंदा दे रही हों और अपना ऋण माफ करा ले रही हों? हमें इस बारे में पता ही नहीं चलेगा क्योंकि पूरी व्यवस्था अपारदर्शी है जिसे सूचना के अधिकार के दायरे से भी बाहर रखा गया है। चुनावी बांड से चंदा देने व ऋण माफी की व्यवस्थाएं गोपनीय रखना सूचना के अधिकार अधिनियम की भावना के ही खिलाफ हैं जिसने शासन-प्रशासन के कार्य में 2005 से एक पारदर्शिता लाने की कोशिश की है। बिना सूचना के अधिकार की मदद के कारपोरेट-निजी कम्पनियों की मिलीभगत को उजागर नहीं किया जा सकता। लेकिन भाजपा सरकार ने एक और जन विरोधी जो काम किया है वह सूचना के अधिकार अधिनियम को 2019 में एक संशोधन के माध्यम से कमजोर किया है। अन्यथा संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार में केन्द्रीय सूचना आयोग ने सभी राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दलों को अपने चंदे की जानकारी सार्वजनिक करने का आदेश पारित कर दिया था।

शक इसलिए भी पैदा होता है कि 2018 से, जबसे चुनावी बांड की योजना लागू हुई है, कम्पनियां जो पहले अपने पिछले तीन साल के औसत मुनाफे का 7.5 प्रतिशत तक ही चुनावी चंदा दे सकती थीं अब उनके लिए कोई पाबंदी नहीं है। यानी अब कोई घाटे में चल रही कम्पनी भी चुनावी बांड से चंदा दे सकती है। जिन कम्पनियों का ऋण माफ किया जा रहा है वे तो शायद घाटे में ही हैं, इसीलिए ऋण अदा नहीं कर पा रही हैं। क्या यह सम्भव है कि कुछ कम्पनियां बैंकों से ऋण लेकर चुनावी बांड के माध्यम से चंदा दे रही हों और अपना ऋण माफ करा ले रही हों? हमें इस बारे में पता ही नहीं चलेगा क्योंकि पूरी व्यवस्था अपारदर्शी है जिसे सूचना के अधिकार के दायरे से भी बाहर रखा गया है। चुनावी बांड से चंदा देने व ऋण माफी की व्यवस्थाएं गोपनीय रखना सूचना के अधिकार अधिनियम की भावना के ही खिलाफ हैं जिसने शासन-प्रशासन के कार्य में 2005 से एक पारदर्शिता लाने की कोशिश की है।

तमाम गोपनीयताओं के बावजूद यह जग जाहिर है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के सबसे बड़े लाभार्थी गौतम अडाणी हैं। नरेन्द्र मोदी उनसे अपने सम्बंध छुपाने की कोशिश भी नहीं करते। मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री होते हुए प्रधान मंत्री की शपथ लेने नई दिल्ली आए तो अडाणी के हवाई जहाज से आए। मोदी के प्रधान मंत्री बनने से पहले जिन गौतम अडाणी को गुजरात से बाहर शायद ही कोई जानता हो आज दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यकित बन गए हैं। पहली बार किसी भारतीय प्रधान मंत्री की तस्वीर निजी कम्पनियों जैसे जिओ व पेटीएम के विज्ञापनों में दिखाई दीं। नरेन्द्र मोदी 2014 में मुकेश अंबानी के निजी अस्पताल का उद्घाटन करने गए। संघीय सरकार ने दो चुनी हुई कम्पनियों अडार पूनावाला की सीरम व भारत बायोटेक को करोना का टीका बनाने के नाम पर क्रमशः रु. 3,000 व रु. 1,500 करोड़ रुपए अनुदान दिए। प्रधान मंत्री के विदेशी दौरों में एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी वेदांता, जिसका मुख्यालय लंदन में है, के मालिक अनिल अग्रवाल भी साथ जाते हैं। सिर्फ अंदाजा ही लगाया जा सकता है कि किन कम्पनियों ने चुनावी बांड के माध्यम से भाजपा को चंदा दिया होगा।

नरेन्द्र मोदी अपने आप को एक फकीर के रूप में प्रस्तुत करते हैं किंतु उनका रहन सहन काफी खचीर्ला दिखाई देता है। लोग देख रहे हैं कि कैसे वे एक ही दिन में कई बार अपनी पोशाक बदलते हैं। हरेक पोशाक काफी महंगी होती है। उन्होंने 2015 में जो कोट पहना था, जिसपर उनका नाम कई बार लिखा था, को निलामी में रु. 1.21 करोड़ रुपए में खरीदा गया। वे अपने आप को डॉ. मनमोहन सिंह की तरह ईमानदार बता सकते हैं क्योंकि शायद उनके भी खाते में अधिक पैसा न होगा लेकिन जो आरोप मनमोहन सिंह पर नहीं लग सकता वह यह है कि हम कैसे मान लें कि गौतम अडाणी ने जो सम्पत्ति बनाई है वह बेनामी नहीं है?

(लेखक संदीप पाण्डेय सोशलिस्ट पार्टी इण्डिया के महासचिव हैं, संपर्क 0522 2355978)

व्यंग्य

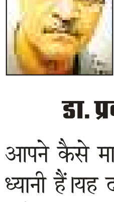

यह कहीं बदला तो नहीं

डा. प्रदीप उपाध्याय

आपने कैसे मान लिया कि वे ज्ञानी - ध्यानी हैं।यह दावा तो उन्होंने भी कभी नहीं किया।उनको भी यहां-वहां से जो ज्ञान मिलता है,उसी का तो बखान करते हैं। मंदिर -मंदिर, मस्जिद -मस्जिद,गिरजा-गिरजा, गुरुद्वारा -गुरूद्वारा घुमने मात्र से या तिलक,टोपी धारण कर लेने से कोई पारंगत नहीं हो जाता। वैसे उन्होंने ऐसा कुछ कहा भी नहीं था । राजनीति के अखाड़े की बात होती तो बात जुदा रहती।उस अखाड़े में तो कोई भी कुद सकता है और बहस के लिए तैयार हो सकता है। किन्तु धर्म और आध्यात्म की बात!

आश्चर्य है कि आप कैसे दोस्त निकले! वैसे किसी ने गलत नहीं कहा है कि दोस्त ही दुश्मन बन जाते हैं।दोस्त ही तो चने के झाड़ पर चढ़ा देते हैं। जिन्हें अपना हितैषी,अपना सबसे बड़ा शुभचिंतक समझते हैं,वे ही ऐसे फंसाने की कोशिश करते हैं! विश्वास नहीं होता है न। लेकिन करना पड़ेगा क्योंकि अपने ही भरोसा तोड़ते हैं।माना कि अभी तक वे नास्तिक रहे और मौके -बेमौके कहीं -कहीं लोगों के धर्म का सम्मान करने का अभिनय करते आए हैं, राजनीति में अभिनय जरूरी है और यह सब करना पड़ता है लेकिन इसका यह मतलब तो कतई नहीं कि धर्म पर बहुत अच्छी पकड़ हो गई हो। वैसे राजनीति में धर्म को कोई पकड़ना भी नहीं चाहता क्योंकि यदि धर्म को पकड़ लिया तो राजनीति ही नहीं कर सकते। हां, धर्म की पूंछ पकड़ कर राजनीति की वैतरणी जरूर पार की जाती है।

कोई भी आवरण ओढ़ना हो या मुखौटा धारण करना हो तो यह सब चुटकी में संभव है।आज तक यही सब तो करते आए हैं। हालांकि अभी तक वे स्वयं को धर्मनिरपेक्ष ही कहते आए हैं लेकिन विरोधी उनकी धर्मनिरपेक्षता का भी मजाक उड़ाते हैं जब वे टोपी पहनकर बात करते हैं।पहले भी जब वे धर्मनिरपेक्ष होने की बात करते थे और लोगों के धर्म का मान रखते थे तो कितनी आलोचना सहनी पड़ती थी और अब जब लम्बी यात्रा पर निकल पड़े, धर्मस्थलों पर मत्था टेकते फिर रहे हैं, धार्मिक प्रतीकों को धारते जा रहे हैं तो इतने भर से यार-दोस्तों ने यह कैसे मान लिया कि धर्म और आध्यात्म में मास्टरी हो गई।

माना कि लोग उनके धार्मिक ज्ञान पर उल्टे सीधे कमेंट करते हैं तो उन्हें करने देते किन्तु यह क्या! ठीक है दोस्त हैं तो सुनकर बुरा लगेगा ही किन्तु दोस्त को यह कहने की क्या आवश्यकता थी कि धर्म और आध्यात्म पर जो भी बहस करना चाहे,उनसे कर सकता है। वे खुद चुनौती क्यों नहीं देते ।यह क्या बात हुई कि उनका ज्ञान दूसरों की तुलना में इतना बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाए । क्या इसी दिन के लिए उनके विश्वसनीय दोस्त बने थे। उन्होंने शायद गलती ही की कि हर जगह साथ में घुमाते रहे।

आपने तो कह दिया किन्तु कभी किसी ने शास्त्रार्थ करने की चुनौती दे डाली तब उनका क्या होगा,एक पल के लिए भी सोचा है आपने। क्या-क्या नहीं कहते थे लोग-बाग उनके बारे में।बड़ी मुश्किल से तो पुराने विशेषणों से मुक्ति पाई है और आपने? उनका तो धर्म और आध्यात्म से दूर -दूर तक का नाता नहीं रहा है।

अब वे गाइड फिल्म के राजू गाइड भी नहीं हैं जो जेल से छूटकर गांव में पहुंचा हुआ संत हो जाए और गांव के पंडितों के शास्त्रार्थ की चुनौती में संस्कृत के श्लोकों का जवाब अंग्रेजी की गिटिर पिटिर से देकर प्रभाव जमा लें। यहां तो मामला बिल्कुल उलट है।

भाई, आखिर किस बात का बदला लिया जो आपने उनकी तारीफ में इस तरह के झूठे कसीदे पढ़ दिए!उनका धरम-करम देखकर आपने कैसे वहम पाल लिया! । यह तो मौसमी बुखार है, अपने आप उतर जाएगा। क्या आपको नहीं मालूम! फिर क्यों उन्हें फंसा रहे हो।एक बात बताओ मैं किसी से नहीं कहूंगा। क्या यह सब उनको परखकर ही कहा है या जोड़-तोड़ की यात्रा में पैदल दौड़ लगवाने का उनसे बदला निकाल रहे हो।

(लेखक व्यंग्यकार हैं, संपर्क 9425030009)

जो हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं

टूट चुका है रथ/ कीचड़ में धँस गए हैं पहिए
लहूलुहान आत्मा पर/ बाणों की बारिश जारी है
फँसे हुए पहिए/ और धँसे हुए बाणों को
निकालने तक का/अवकाश नहीं है
युद्ध और प्यार में/ सब कुछ को/ जायज मानने वाले
किसी नियम या नैतिकता के गुलाम नहीं हैं
हारी हुई लड़ाई लड़ने वालों के लिए/ नियम है/ नैतिकता है विधान है
हारी हुई लडाई लड़ने वाले/ सहानुभूति की भीख नहीं माँगते
समर्पण नहीं करते/ पीठ नहीं दिखाते
वे क्षत-विक्षत अस्त्रों/ और आहत आत्मा से युद्ध करते हैं
वे हार भले जाएँ/ पराजित नहीं होते।

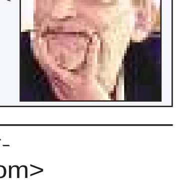

- सदानंद शाही

रचनाएं हमें ई-मेल से भी भेज सकते हैं-
<raisubhash953@gmail.com>

सीडीओ ने पोषण पुनर्वास केंद्र का किया आकस्मिक निरीक्षण

परिसर से कूड़े का तत्काल निस्तारण का निर्देश

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस द्वारा मण्डलीय चिकित्सालय परिसर में स्थित पोषण पुनर्वास केन्द्र का प्रातः 10:00 बजे आकस्मिक निरीक्षण किया गया। पोषण पुनर्वास केन्द्र में साफ-सफाई का अभाव था, वार्ड के बाहर एवं अन्दर अत्यधिक मक्खियॉं पायी गयी।

वार्ड के बाहर जाली लगाने के निर्देश दिये गए। वार्ड में कुल-05 कुपोषित बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं देखभाल का होना पाया गया। बच्चों के परिजनों से साफ-सफाई एवं खान पान की व्यवस्था के सम्बन्ध में पृच्छा करने पर उनके द्वारा संतोषजनक होना बताया गया। कुपोषित बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति की जानकारी मौके पर उपस्थित चिकित्सक एवं नर्सिंग स्टाफ से लिया गया, उनके द्वारा बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति पहले से बेहतर बतायी गयी। स्टोर रूम में अनावश्यक अपशिष्ट एवं सामग्री पायी गयी। स्टोर रूम के सामने ही कुपोषित बच्चों के खेलने का स्थान है, जिसकी तत्काल साफ-सफाई कराने के साथ ही बरामदें एवं अन्य जगहों पर रक्खें कूलरों को हटवाकर अवगत कराने का निर्देश पोषण पुनर्वास केन्द्र प्रभारी को दिया गया।

निरीक्षण करतीं सीडीओ

साथ ही पुनर्वास केन्द्र/भवन पर पेंटिंग एवं अन्य आवश्यक कार्यों का चिन्हांकन कर कार्यवाही करने का निर्देश अपर मुख्य चिकित्साधिकारी को दिया गया। बाथरूम में साफ-सफाई का अभाव पाया गया एवं पानी की निकासी सही नहीं पायी गयी, जिसके सम्बन्ध में पोषण पुनर्वास केन्द्र के व्यवस्थापक को निर्देशित किया गया कि नियमित रूप से आवश्यकतानुसार बाथरूम की साफ-सफाई कराये साथ ही अबिलम्ब पानी की निकासी/सफाई की व्यवस्था कराना सुनिश्चित करें। पुर्नवास केन्द्र के ठीक पहले रास्ते में अत्यधिक मात्रा अपशिष्ट एकत्र है, जिसकी पिछले कुछ दिनों से सफाई नहीं होने से उसमें से बदबू एवं मक्खियॉं उड़ रही है, जिसके सम्बन्ध में अधिशासी अधिकारी, से वार्ता कर निर्देशित किया गया कि उक्त स्थल पर एकत्र अपशिष्ट को तत्काल उठवा लें और भविष्य में नियमित अन्तराल पर सफाई (उठान) कराने की व्यवस्था बनायें। निरीक्षण के समय प्रधानाचार्य आर0बी0 कमल, अन्य स्टाफ मौके पर उपस्थित रहें।

मारपीट के आरोपी को भेजा जेल

मीरजापुर। थाना को0देहात, मीरजापुर पर 18 अक्टूबर 2022 को वादी रवि कुमार सोनकर पुत्र मन्नालाल सोनकर निवासी देवखरा, थाना को0देहात मीरजापुर द्वारा नामजद एवं अज्ञात आरोपियों के विरूद्ध एक राय होकर वादी के परिवार के सदस्य को गंभीर रूप से घायल कर देने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गयी। प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना को0देहात पर 3(2)5 एससी/एसटी एक्ट बनाम कपिल देव आदि 02 नामजद एवं 6 से 7 लोग अज्ञात के विरूद्ध पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गयी। बुधवार को प्रभारी निरीक्षक विपिन सिंह थाना को0देहात मय टीम द्वारा मुकदमा की विवेचना के क्रम में थाना को देहात क्षेत्र से घटना से सम्बन्धित 01 नफर आरोपी कपिल देव बिंद पुत्र स्व. जीतनरायन बिंद निवासी देवखरा थाना को देहात मीरजापुर को गिरफ्तार कर नियमानुसार विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया।

संक्षेप

वासलीगंज बाजार में डिग्गी तोड़कर डेढ़ लाख की चोरी

मीरजापुर। शहर कोतवाली क्षेत्र के वासलीगंज बाजार में मोटर साइकिल की डिग्गी का ताला तोड़कर डेढ़ लाख उच्चके ने गायब कर दिया। स्टेट बैंक से रुपए निकाल कर लालगंज तहसील में तैनात लेखपाल श्यामधर पांडेय बाजार में कुछ सामान खरीदने के लिए रुके थे। मोटर साइकिल खड़ी कर वह दुकान में सामान ले रहे थे। इस बीच उच्चकें ने कारनामा कर दिया। जो सीसीटीवी में कैद हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच में जुटी हैं। शहर कोतवाली के सिविल लाइन स्थित भारतीय स्टेट बैंक से आज सुबह डेढ़ लाख रुपया निकालकर श्यामधर पांडेय वासलीगंज बाजार पहुंचे थे। मोटर साइकिल की डिक्की में रुपए को रखकर ताला बंद किया। बेटे के साथ दुकान से कुछ सामान खरीदने लगे । पहले से ताक लगाए बैठे उचक्के के द्वारा कुछ ही मिनटों में डिग्गी का ताला तोड़कर डेढ़ लाख रुपया निकाल लिया गया। पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है। पीड़ित लालगंज तहसील में लेखपाल पद पर तैनात हैं। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंचे शहर कोतवाली पुलिस और एसपी सिटी श्रीकांत प्रजापति ने मौका का निरीक्षण किया। घटना को लेकर एसपी सिटी का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज मिल गया हैं। जल्द ही आरोपी को पकड़ा जाएगा।

एडीएम वि0/रा0 ने किया धान क्रय केद्रों का निरीक्षण

मीरजापुर। अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 शिव प्रताप शुक्ल ने तहसील सदर क्षेत्रान्तर्गत धान क्रय केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। अपर जिलाधिकारी ने विपणन शाखा सदर प्रथम, द्वितीय, तृतीय- निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी श्री सुरेन्द्र पाल व श्री मसूद उपस्थित रहें। विपणन शाखा के प्रथम केन्द्र पर 68 किसानो से 4280 क्विंटल धान की खरीद हुई तथा 1838 क्विंटल धान का प्रेषण भी किया जा चुका है विपणन शाखा के सदर द्वितीय केन्द्र पर 45 किसानो से 2588 क्विंटल धान खरीद किया गया, साथ ही 32 किसानो को भुगतान भी किया जा चुका है । विपणन शाखा के तृतीय केन्द्र पर 27 किसानो से 1594 क्विंटल खरीद किया गया तथा 24 किसानो को भुगतान भी किया जा चुका है, साथ ही 200 क्विंटल धान का प्रेषण भी किया जा चुका है। एफ0सी0आई0 केन्द्र मण्डी समिति- निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी उपस्थित रहें। केन्द्र पर 49 किसानो से 3010 क्विंटल धान की खरीद हुई। 46 किसानो को भुगतान भी किया गया है तथा 1200 क्विंटल धान का प्रेषण भी किया जा चुका है । केन्द्र प्रभारी को निर्देशित किया जाता है कि अवशेष धान का प्रेषण व कृषकों के भुगतान की कार्यवाही कल तक करायें तथा टोकन के अनुसार पारदर्शी तरीके के क्रय करना सुनिश्चित करें। मण्डी समिति केन्द्र मण्डी- निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी उपस्थित रहें। केन्द्र पर 13 किसानो से 443.20 क्विंटल धान की खरीद हुई। 05 किसानो को भुगतान भी किया गया है। अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 ने समस्त केन्द्र प्रभारी व सम्बन्धित एजेंसी के नोडल अधिकारी को निर्देशित किया गया कि अवशेष धान का प्रेषण व कृषकों के भुगतान की कार्यवाही 72 घण्टें में करायें तथा टोकन के अनुसार पारदर्शी तरीके के क्रय करना सुनिश्चित करें।

आज तक पूरा नहीं हो सका विश्वविद्यालय का सपना

लालगंज। तहसील लालगंज में बुनियादी विकास की जरूरत बनी हुई है। तहसील क्षेत्र में ब्लाक डिग्री कॉलेज के अतिरिक्त आयुर्वेद विश्वविद्यालय की मांग का सपना ग्रामीणों ने चुनाव के समय उठाया था। हालांकि विंध्य विश्वविद्यालय के मानक के अनुसार जमीन नैडी में दी जा चुकी थी। जानकारी के अनुसार सर्वे रिपोर्ट कहीं और का भेजा गया। लालगंज तहसील में चार लाख की आवादी है। आयुर्वेद विश्वविद्यालय बनाए जाने का सपना स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉक्टर रामखेलावन मौर्य ने उठाई थी। जिसके लिए उन्होंने राज्यपाल से मिलकर कॉलेज लालगंज में खोले जाने की मांग भी प्रस्तावित किया था। ऐसी स्थिति में ग्रामीणों ने मध्य प्रदेश से लेकर बनारस और प्रयागराज के बॉर्डर के तहसील के छात्र छात्राओं को शैक्षणिक गुणवत्ता से वंचित रहना पड़ रहा है। भौगोलिक दृष्टिकोण से लालगंज तहसील मड़िहान कोरांव मांडा और मध्य प्रदेश के बॉर्डर तक लीड करती है। बाजार निवासी हूबलाल दूबे का कहना है लालगंज में आयुर्वेद विश्वविद्यालय जरूरी है। बाजार निवासी डॉ. लाल बहादुर मोर्य का कहना है कि राजकीय पीजी कॉलेज में पर्याप्त जगह है जहां आयुर्वेद विश्वविद्यालय का सपना साकार किया जा सकता है। लालगंज के पूर्व प्रधान पति मनोज केशरी का कहना है कि इसका विकास जरूरी है। प्रवक्ता कमलनयन दूबे का कहना है कि लालगंज तहसील मुख्यालय में आयुर्वेद विश्वविद्यालय के बनाए जाने से आर्थिक समृद्धि आएगी।

अहरौरा रोड रेलवे स्टेशन का बदला नाम

फेरबदल

अब नारायणपुर बाजार रेलवे स्टेशन के नाम से जाना जाएगा अहरौरा रोड रेलवे स्टेशन

मीरजापुर। केंद्रीय वाणिज्य व उद्योग राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल के विशेष प्रयास से केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अहरौरा रोड रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर नारायणपुर बाजार रेलवे स्टेशन करने के आग्रह को स्वीकार करते हुए मंजूरी दे दी है।

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने 2 दिसंबर को पत्र के जरिए केंद्रीय मंत्री श्रीमती पटेल को सूचित किया है कि रेलवे स्टेशन का नाम बदलने के प्रस्ताव पर केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया है। केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने कहा है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के इस पहल से जनपदवासियों को काफी राहत मिलेगी। अब मीरजापुर के नारायणपुर बाजार में स्थित रेलवे स्टेशन से यात्रा करने वाले

अनुप्रिया पटेल

जनपदवासियों एवं व्यापारियों में भ्रम की स्थिति नहीं रहेगी। इससे जनपद में कारोबार के लिए आने वाले व्यापारियों को राहत मिलेगी।

श्रीमती पटेल की विशेष अपील का संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री कार्यालय से इस बाबत केंद्रीय गृह मंत्रालय को पत्र प्रेषित किया गया। अब रेलवे स्टेशन का नाम परिवर्तित होने के प्रस्ताव पर केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी कर उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव को पत्र भेज दिया है। माना जा रहा है कि अब रेलवे स्टेशन का नाम परिवर्तन की प्रक्रिया जल्द ही पूरी कर ली जाएगी।

घरेलू सिलेण्डर के दुरूपयोग पर होगी कठोर कार्यवाही : डीएसओ

मीरजापुर। जिला पूर्ति अधिकारी उमेश चन्द्र ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से जानकारी देते हुये बताया है कि नगरपालिका मीरजापुर के सिविल लाइन्स स्थित सागर स्वीट्स हाउस, ओमना स्वीट्स हाउस, ओम साई स्वीट्स हाउस तथा यादव स्वीट्स हाउस प्रतिष्ठानों पर घरेलू गैस सिलेण्डर के दुरूपयोग के सम्बन्ध में छापेमारी की गयी। छापेमारी के दौरान प्रतिष्ठान मालिक, प्रबंधकों को कड़े निर्देश दिए गये कि यदि भविष्य में उनके प्रतिष्ठान पर कामार्शियल सिलेण्डर से मिठाई व अन्य खाद्य पदार्थ बनाते हुए नहीं पाये जाने पर नियमानुसार कण्ट्रोल आर्डर के तहत कार्यवाही की जायेगी। इसी के साथ जनपद के समस्त स्वीट्स हाउस एवं कैटर्स को भी कड़े निर्देश दिए जाते हैं कि यदि उनके प्रतिष्ठान पर अथवा वैवाहिक कार्यक्रमों में घरेलू सिलेण्डर का दुरूपयोग होना पाया जाता है तो उनके विरूद्ध नियमानुसार कठोरतम कार्यवाही की जायेगी।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों, स्वयंसेवी संगठनों, जनप्रतिनिधियों से की अपील

झण्डा दिवस

देश के प्रहरी सैनिकों आश्रितों के भलाई के लिए करें सहयोग

मीरजापुर। सशस्त्र सेना झण्डा दिवस गौरव माह के मनाये जाने का शुभारम्भ हुआ। जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कैप्टन (नौसेना) राजीव रंजन सिन्हा(अ.प्रा.) ने सर्वप्रथम मण्डलायुक्त डॉ मुथुकुमार स्वामी बी., जिला जज, अपर जिलाधिकारी(वि./रा.) शिव प्रताप शुक्ल, मुख्य कोषाधिकारी, को दिवस का स्टीकर लगाकर शुभारंभ किया।

मण्डलायुक्त ने झण्डा के प्रतीकात्मक टिकट की जगह स्वैच्छिक अंशदान दिया और सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास विभाग की ओर से प्रकाशित स्मारिका में भी काफी रूचि दिखाई। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों, स्वयंसेवी संगठनों, जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्धजनों मीडिया के कार्मिको के साथ ही आम नागरिकों से अपील किया है कि सशस्त्र सेना झण्डा दिवस के अवसर पर देश के प्रहरी सैनिकों और उनके आश्रितों के भलाई तथा पुनर्वास के लिए अपेक्षित सहयोग करें। देश के वीरों, जिन्होने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहूति दी है। उनकी निराश्रित पत्नी व बच्चों की मदद सशस्त्र सेना झंडा दिवस के प्रतीकात्मक स्टीकर व झण्डों से प्राप्त रकम से की जाती है। बताया कि प्रतीकात्मक स्टीकर व झण्डों के सापेक्ष स्वैच्छिक रूप से अंश दान करने के साथ ही अपने अपने कार्यालयों की इकट्ठा की अंशदान की धनराशि जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय, फतहॉं, मोर्चाघर को भेजते हुए पुनित कार्य के भागी बने। इस कार्यक्रम के दौरान जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कैप्टन(नौसेना) राजीव रंजन सिन्हा(अ.प्रा.), दशवन्त सिंह, प्रियंका सिंह, तारा शंकर दूबे, असलम सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

एडीएम वित्त को प्रतीकात्मक झंडा लगाते अधिकारी।

दलित के हाथ में जाएगी कमान कइयों का बंद हुआ चाय और पान

जनसंदेश न्यूज

नगर निकाय चुनाव

सुबह से पैर पकड़कर नुक्कड़ पर चाय पिलाने वाले और जबरी पान खिलाने वाले नेताजी हुए गायब!

भरी जवानी में अध्यक्ष बनने की चाहत में नेताजी ने नाली से लेकर कव्वाली तक के कार्यक्रम में भाग लिया

अहरौरा। जख्म इतने मिले फिर सिले भी नहीं, दीप ऐसे बुझे फिर जले ही नहीं। यह लाइन अहरौरा नगर पालिका भावी अध्यक्ष बनने का सपना लिए युवा व वरिष्ठ नेता पर सटीक बैठ रहा है।

भरी जवानी में अध्यक्ष बनने की चाहत में नेताजी ने नाली से लेकर कव्वाली तक के कार्यक्रम में भाग लिया, लेकिन सीट का समीकरण बदलने के बाद नेता जी गायब से हो गए है। अहरौरा नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद को अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित किए जाने के बाद नगर में कई लोगों के चेहरे पर मायूसी छा गई है। पिछले एक वर्ष से काफी लोग अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने का सपना दिल में संजो कर चुनावी तैयारी में लगे हुए थे। कुछ उसी तरह जैसे बियाह के लिये रिश्ता आये और बात चले और लड़का शादी तक का विचार अपने मन में बना ले, लेकिन आगे बात बन ही न सके। भरी जवानी में इस तरह की घटना का दर्द जिस तरह से होता है उसी तरह से अब नेताजी लोगों का हाल हो गया है।

वर्ष 2017 में नगर पालिका चुनाव पिछड़ी जाति के लिए आरक्षित किया गया था, वहीं 2012 में अहरौरा नगरपालिका का अध्यक्ष पद अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित किया गया था। 2012 में दिलदार सोनकर अध्यक्ष बने थे। इस वर्ष सबको उम्मीद थी कि यहां का चुनावी समीकरण बदलेगा और अध्यक्ष पद सामान्य जाति के लिए होगा या पिछड़ी महिला लिए आरक्षित होगा लेकिन सभी के उम्मीदों पर पानी फिर गया। अहरौरा नगर पालिका अध्यक्ष पद अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित कर दी गई।

खैर कुछ भी हो कुछ दिन से चौराहे पर पैर पकड़कर जबरन चाय पिलाने और पान खिलाने वाले नेताजी फिलहाल फोन कवर एरिया से बाहर करके समाज सेवा को खुद को किनारे कर दिया है। अब देखना यह होगा कि अब कौन इस बार दावेदारी करेगा। बादशाह का प्यांदा मैदान में आएगा या फिर कोई नया अध्यक्ष बनकर सामने आएगा।

शहीद केसरी सिंह का मनाया जाएगा 51 वां शहादत दिवस

हलिया। भारत-पाक युद्ध 1971 में दुश्मनों से लोहा लेते हुए शहीद हुए वीर केसरी सिंह का 51वां शहादत दिवस नौ दिसंबर को उनके पैतृक गांव पटेहरा में बने शहीद स्मारक स्थल पर मनाया जाएगा। शहादत दिवस पर आयोजित होने वाले श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भाग लेने हेतु जिला प्रशासन, राजनेताओं व क्षेत्रीय लोगों को आमंत्रण भेजा गया है। हलिया ब्लाक के पटेहरा गांव में जन्मे वीर केसरी सिंह भारत पाकिस्तान युद्ध में दुश्मनों से मोर्चा लेते हुए 9 दिसंबर को वीरगति को प्राप्त हो गए थे। देश के प्रति किए गए उनके बलिदान ने मीरजापुर जिले का नाम रोशन किया था। पटेहरा गांव स्थित शहीद केशरी सिंह हाईस्कूल की अध्यक्ष व शहीद केशरी सिंह की पत्नी छोटी कुंवर सिंह ने बताया शहीद केशरी सिंह के 51वें शहादत दिवस पर बिलरा पटेहरा गांव स्थित शहीद स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन व शहीद केशरी सिंह हाईस्कूल के उद्घाटन समारोह में भाग लेने हेतु जिले की सांसद व केन्द्रीय राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों, जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, एसडीएम व सीओ लालगंज सहित सैन्य अधिकारियों व क्षेत्रीय लोगों को आमंत्रित किया गया है।

बोलेरो की टक्कर से बालक गंभीर रूप से घायल

हादसा

प्राथमिक उपचार के बाद ट्रामा सेंटर किया रेफर

जनसंदेश न्यूज

हलिया। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के भैसोड़ बलाय पहाड़ गांव निवासी संजय केशरी उर्फ छोटू अपने आठ वर्षीय बेटे मोहित केसरी व पत्नी आशा केसरी के साथ अपने बहन के घर किसी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए मंगलवार को मध्य प्रदेश के सीधी जिले गये हुए थे।

बुधवार सुबह बस से अपने घर के लिए वापस लौट रहे थे कि बस जैसे ही भैसोड़ बलाय पहाड़ बार्डर पर पहुंची तो चालक सवारियों को उतारने और बैठाने के चक्कर में गलत रूट से बस चलाने लगा। सामने से आ रही अज्ञात बोलेरो ने सड़क पार कर रहे आठ वर्षीय मोहित को जोरदार टक्कर मार दिया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि टक्कर इतनी तेज थी कि बालक बोलेरो से धक्का लगने के बाद करीब पंद्रह फीट ऊपर उछलते हुए सड़क पर गिर पड़ा।

वहीं धक्का मारने के बाद बोलेरो चालक व बस चालक वाहन छोड़कर फरार हो गये। आनन-फानन में परिजनों ने गंभीर रूप घायल बालक को हनुमना स्वास्थ्य केन्द्र ले गए जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया। घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर जाम लगाना शुरू कर दिया।

घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष अतुल कुमार पटेल, एस आई उदयनारायण सिंह ने ग्रामीणों को समझा बुझाकर जाम समाप्त करवाया। घायल को मंडलीय चिकित्सालय से चिकित्सकों ने हालत नाजुक देखते हुए ट्रामा सेंटर वाराणसी के लिए रेफर कर दिया।

घटना के बाद मौके पर तैनात पुलिस।

दत्तात्रेय जयंती पर हनुमान मंदिर में पूजन

मीरजापुर। दत्तात्रेय जयंती के अवसर पर आयोजित भजन, कीर्तन, पूजन कार्यक्रम में महात्मा रामानुज महाराज ने कहा कि दत्तात्रेय एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम है जो पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक हैं। इस पुराण में भगवान दत्तात्रेय के जन्म तथा प्रभाव की कथा में असंभव को संभव कर देने के दृष्टांत उल्लिखित हैं। खुद दत्तात्रेय की माता अनसूया ने अपने पतिव्रता धर्म के चलते असंभव कार्य को सम्भव किया। कथा के अनुसार एक पतिव्रता पत्नी के शाप के चलते 10 दिनों तक सूर्य भगवान प्रकट नहीं हुए तब देवताओं के अनुरोध पर माता अनसूया ने योग-युक्ति से शाप को समाप्त कराया। प्रारंभ में सलिल पांडेय ने स्वागत किया जबकि धन्यवाद महात्मा दिव्यानन्द ने दिया। सन्चालन विंध्यवासिनी केसरवानी ने किया। इस अवसर पर दिलीप यादव, सुरेश राठौर, राम जी निषाद, सिग्गड निषाद, विजय पटेल, सप्तमी निषाद, लुल्लूर निषाद, दिशि निषाद, देवा खत्री, नागिन साहनी आदि उपस्थित थीं।

खबर छपने के बाद जागा विभाग युद्ध स्तर पर शुरू हुआ निर्माण

पुल के निर्माण में लगे कर्मचारी

जमालपुर। समाचार छपने के बाद पीडब्ल्यूडी विभाग ने मुरदहवा नाले पर अर्धनिर्मित पुल का निर्माण तेज गति से वुधवार को शुरू करा दिया। जिससे क्षेत्रीय लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त किया। लगभग डेढ़ वर्षों से बन रहे भभौरा गांव स्थित मुर्दहवा नाले पर निर्माण का कार्य पूरा नहीं होने से किसानों को मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा था।

ग्रामीणों ने पुलिया के पास अन्नदाता मंच के बैनर तले धरना प्रदर्शन और विभागीय ज्ञापन सौंपकर कर पुल निर्माण की मांग कई बार किया था। वही पुल के बगल में अस्थायी वैकल्पिक कच्चा मार्ग विभाग की ओर से बनवाया गया था लेकिन बरसात और पानी के कारण लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था और किसानों की कृषि कार्य प्रभावित हो रहा था। बुधवार को पुल के पास पंप लगाकर पानी निकालने के बाद अर्धनिर्मित पुल का कार्य शुरू किया गया।

बस्ती में बने मुर्गी फार्म को हटाने के लिए डीएम से लगाई गुहार

हलिया। स्थानीय थाना क्षेत्र के बरी गांव निवासी दिलीप कुमार ने मुख्यमंत्री पोर्टल सहित जिलाधिकारी को पत्रक देखकर बस्ती में घर के पास बने मुर्गी फार्म को हटाने की गुहार लगाई है। दिए गये शिकायती पत्र में कहा है कि इसके पूर्व भी जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक को पत्र दिया था, जिसके बाद दोनों पक्षों को थाने पर बुलाकर एक माह में दुकान हटा लेने की बात पर सुलह समझौता हुआ था। एक माह बीतने के बाद भी उक्त व्यक्ति बस्ती से मुर्गी फार्म नहीं हटा रहा है, जिसकी दुर्गंध से बीमारी फैलने का अंदेशा बना हुआ है। कुछ लोग नशे में धुत होकर फार्म पर पहुँच कर गाली गलौज भी करते हैं जो बहन बेटियों को बर्दाशत करना पड़ रहा है। बस्ती में मुर्गी फार्म के चलते रहना दूभर हो गया है, जिसे बस्ती के बाहर खोला जाए। बुधवार को थाने मे तहरीर दे कर सुलहनामा का पालन न करने व बस्ती से मुर्गी फार्म को हटाने की मांग की है।

गोंड जनजाति के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है सरकार : राष्ट्रीय अध्यक्ष

मांग

आरक्षण का लाभ नही मिलने पर अखिल भारतवर्षीय गोंड महासभा ने सौंपा ज्ञापन

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। अखिल भारतवर्षीय गोंड महासभा ने बुधवार को सीएम को संबोधित ज्ञापन एडीएम वित्त को सौपा। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि इस सरकार में गोंड जनजातियों पर सौतेले व्यवहार कर रही है। जैसे बाबा साहब को पढ़ने के लिए छुआछूत चल रहा था।

उस समय दलित जातियों पर गले में हड्डी और पीछे झाड़ू बांध दिया जाता था। शासनादेश होते हुए भी गोंड जातियों का जाति प्रमाण पत्र नहीं बनाया जा रहा है और निकाय चुनाव में कोई भी आरक्षण नहीं दिया गया। महासभा की महिला राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते मैं सरकार से मांग करती हूं कि इस चुनाव में हमारे आरक्षण दिए जाए नहीं तो जनजाति समुदाय सड़क पर उतरने का काम करेगी।

जिसकी सारी जिम्मेदारी सरकार की होगी। इस दौरान अखिल भारतवर्षीय गोंड महासभा के जिला अध्यक्ष कृष्ण मुरारी गोंड, रामप्यारे गोंड, रामसागर गोंड, महेश गोंड, कल्लू गोंड, रमेश गोंड, अवनीश गोंड, आकाश गोंड, महेंद्र गोंड, शिव शंकर गोंड, राजू गोंड, बद्री प्रसाद गोंड, धीरेंद्र कुमार गोंड, मुन्ना गोंड, सुभाष गोंड, सीमा गोंड ,भरत लाल गोंड आदि लोग मौजूद रहे।

अपर जिलाधिकारी को पत्रक देती महिला अध्यक्ष।

सूमो में बैठाकर, गजब बेइज्जती करा रहे साहब

मीरजापुर। नगर के के.बी. महाविद्यालय में मंगलवार को सामाजिक समरसता कार्यक्रम में हंगामा के दौरान पहुंची पुलिस ने मामला शांत कराया। इसी बीच अपने आप को इलाहाबाद विश्व विद्यालय का छात्र बताने वाला युवक एसपी सिटी श्रीकांत प्रजापति से ही उलझ गया। एसपी सिटी ने कहा कि प्यार की भाषा हो रही प्यार से समझो।

लेकिन युवक अपने हीरो में बहता रहा। कहा कि आपको याद दिला दें यह रामपुर या मैनपुरी नहीं है। इस पर एसपी सिटी ने उससे रामपुर मैनपुरी क्या है का मतलब जानना चाहा। वह यही रट लगाए रहा। एसपी सीटी ने उसे मातहतों को उसे ले जाने का निर्देश दिया। जब पुलिस के जवान उसे लेकर आगे बढ़े तो उसने लाठी का प्रयोग करने की मांग की। वह लाठी खाने के लिए इस कदर बेताब था कि पैर छूकर लाठी मांगा। पुलिस के जवान उसे लेकर बाहर पहुंचे। पुलिस के सूमो वाहन में बैठाया जा रहा था। वाहन देख कहा कि अरे सूमो में बैठाकर गजब बेज्जती करा रहे हैं। इस दौरान मीडिया को देख वह खड़ा होकर केबी कॉलेज में हंगामे की बात करने लगा। पुलिस ने जब उसे जबरन बैठाने का प्रयास किया तो कहा कि सर मेरा बढ़िया फोटो आएगा। डा. भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण पर कालेज में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने सामाजिक समरसता कार्यक्रम का आयोजन किया था। कार्यक्रम आरम्भ होने के पहले ही समाजवादी छात्र सभा के कार्यकर्ताओं ने हंगामा कर दिया। दोनों पक्षों में मारपीट के चलते कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर मामला शांत कराया। उपद्रव करने वाले पुलिस के पहुंचते ही खिसक लिए। जब पुलिस कालेज से मामला शांत होने के बाद निकलने वाली थी।

तब नेता बनने की ललक में पहुंचे युवक ने बहस करते हुए कभी लाठी माँगा तो कुछ देर बाद पुलिस के वाहन में बैठते उसे बेइज्जती महसूस हुई। जिसे कुछ देर बाद छोड़ दिया गया था। कालेज का माहौल गर्म होने के कारण दो दिन के लिए बंद कर दिया गया है। जिसका वीडीओ तेजी से वायरल हो रहा है।

मेहदी ने शतक लगाकर बनाया रिकार्ड

ढ़ाका। बांग्दादेश के बल्लेबाज मेहदी हसन मिराज ने भारतीय टीम के खिलाफ यहां दूसरे एकदिवसीय क्रिकेट मुकाबले में शानदार बल्लेबाजी करते हुए शतक लगाया। मिराज ने यह शतक लगाते ही एक अहम रिकार्ड भी अपने नाम कर लिया। वह 8वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए एकदिवसीय में शतक बनाने वाले बांग्लादेश के पहले और दुनिया के केवल दूसरे बल्लेबाज बने हैं। इससे पहले आयरलैंड के सिमी सिंह के नाम यह रिकार्ड था। मेहदी हसन ने भारत के खिलाफ लगातार दूसरे मैच में भी बेहतरीन प्रदर्शन किया है। आज जब टीम ने पहले खेलते हुए 69 रन पर ही 6 विकेट गंवा दिए थे तब मिराज और महमुदुल्लाह ने 7वें विकेट के लिए 148 और 8वें विकेट के लिए 54 रन की साझेदारी कर अपनी टीम को 271 रन तक पहुंचाया।

काम नहीं आई रोहित की पारी, रोमांचक मुकाबले में हारा भारत; 0-2 से सीरीज भी गंवाई

भारत और बांग्लादेश के बीच शेर-ए-बांग्ला नेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए दूसरे वनडे मैच में बांग्लादेश ने टीम इंडिया को 5 रन से हरा दिया

नई दिल्ली। भारत और बांग्लादेश के बीच शेर-ए-बांग्ला नेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए दूसरे वनडे मैच में बांग्लादेश ने रोमांचक मुकाबले में टीम इंडिया को 5 रन से हरा दिया। जीत के लिए टीम इंडिया के सामने 272 रन का लक्ष्य था, लेकिन टीम केवल 266 रन ही बना पाई। रोहित शर्मा ने 28 गेंद पर 51 रन की पारी खेली, लेकिन वह टीम को जीत नहीं दिला पाए।

इससे पहले बांग्लादेश ने बल्लेबाजी करते हुए मेहदी हसन मिराज की शतकीय पारी के दम पर भारत के सामने 272 रन का लक्ष्य रखा। मेहदी हसन ने 87 गेंद पर 100 जबकि महमदुल्लाह ने 77 रन की पारी खेली।

भारत की तरफ से सर्वाधिक 82 रन की पारी श्रेयस अय्यर ने खेली। उन्होंने अक्षर के साथ मिलकर 5वें विकेट के लिए 107 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी की। बाद में रोहित शर्मा ने भी ताबड़तोड़ अर्धशतक जड़ा, लेकिन वह टीम को हार से नहीं बचा पाए। इससे पहले 272 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरूआत अच्छी नहीं रही और केवल 7 रन के स्कोर पर विराट कोहली आउट हो गए। उन्हें इबादत हुसैन ने बोल्ड कर दिया। जल्द ही भारत को धवन के रूप में दूसरा झटका लगा। उन्हें 8 रन के निजी स्कोर पर मुस्तफिजुर ने मेहदी हसन के हाथों कैच कराया। तीसरे विकेट के रूप में वाशिंगटन सुंदर 11 रन बनाकर आउट हुए। उसके बाद भारत ने 65 के स्कोर पर केएल राहुल का भी विकेट गंवा दिया। लेकिन पहले अय्यर और अक्षर ने 5वें विकेट के लिए 107 रन जोड़े और फिर रोहित की अर्धशतकीय पारी ने टीम की वापसी करा दी।

बांग्लादेश की पारी, मिराज शतक

69 रन के स्कोर पर 6 विकेट गंवाने वाली बांग्लादेश के लिए 7वें विकेट के लिए महमदुल्लाह और मिराज ने 148 रन की साझेदारी की और बांग्लादेश को शुरूआती झटकों से उबार लिया। हसन ने 87 गेंद पर शानदार शतकीय पारी खेली। बांग्लादेश की तरफ से अनामुल हक और लिटन दास ने पारी की शुरूआत की, लेकिन मोहम्मद सिरज ने जल्द ही अनामुल को आउट कर भारत को पहली सफलता दिला दी। उन्होंने 11 रन की पारी खेली। दूसरे विकेट के रूप में सिराज ने लिटन दास को 7 रन के निजी स्कोर पर आउट किया। तीसरे विकेट के रूप में शंतो को उमरान मलिक ने क्लीन बोल्ड किया। उन्होंने 21 रन बनाए। चौथे विकेट के रूप में शाकिब आउट हुए। 8 रन के निजी स्कोर पर उन्हें वाशिंगटन सुंदर ने धवन के हाथों कैच कराया।

भारत ने गंवाई लगातार दूसरी सीरीज

इसके साथ ही बांग्लादेश ने 3 मैच की सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। लगातार दूसरी बार बांग्लदेश ने अपने घर में भारत के खिलाफ वनडे सीरीज जीती है। इससे पहले जब टीम इंडिया 2015 में धौनी की कप्तानी में गई थी, तब टीम इंडिया को 1-2 से हार का सामना करना पड़ा था।

भारत दो, जबकि बांग्लादेश में एक बदलाव

इस मैच में भारतीय टीम 2 और बांग्लादेश की टीम एक बदलाव के साथ उतरी थी। बांग्लादेश की टीम ने हसन महमुद की जगह पर नसुम अहमद को मौका दिया जबकि भारतीय टीम में शहबाज अहमद के स्थान पर अक्षर पटेल और कुलदीप सेन के स्थान पर उमरान मलिक को शामिल किया गया था।

भारत की प्लेइंग इलेवन

रोहित शर्मा (कप्तान), शिखर धवन, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, शार्दुल ठाकुर, दीपक चाहर, मोहम्मद सिराज, उमरान मलिक।

बांग्लादेश की प्लेइंग इलेवन

नजमुल हुसैन शंतो, लिटन दास (कप्तान), अनमुल हक, शाकिब अल हसन, मुश्फिकुर रहीम (विकेटकीपर), महमुदुल्लाह, अफीफ हुसैन, मेहदी हसन मिराज, नसुम अहमद, इबादत हुसैन, मुस्तफिजुर रहमान।

फीफा वर्ल्ड कप में देश की शान बढ़ाएंगी दीपिका, स्टेडियम में ट्रॉफी से हटाएंगी पर्दा

दीपिका पादुकोण बॉलीवुड की बोहतारीना अभिनेत्री हैं। उन्होंने हिंदी के साथ-साथ हॉलीवुड फिल्मों में भी नाम कमाया है। अभिनेत्री हाल ही में रणवीर सिंह के साथ फिल्म सर्कस के ट्रेलर में दिखाई दीं। इसी साल उन्होंने कान फिल्म फेस्टिवल में भारत को रिप्रिजेंट किया था। इस दौरान उनकी खूब तारीफ हुई थी। अब अभिनेत्री एक बार फिर देश का नाम रोशन करने जा रही हैं। खबर है कि दीपिका कतर में चल रहे फीफा वर्ल्ड कप में एक बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार हैं। फीफा वर्ल्ड कप के लिए इन दिनों पूरी दुनिया क्रेजी है। हर कोई अपनी पसंदीदा टीम का समर्थन कर रहा है। वहीं नोरा फतेही के बाद अब फीफा वर्ल्ड कप में नजर आने वाली हैं। दरअसल, दीपिका पादुकोण को कतर में चल रहे फीफा वर्ल्ड कप में ट्रॉफी का अनावरण करने की जिम्मेदारी दी गई है। बता दें कि फीफा वर्ल्ड कप का अनावरण 18 दिसंबर 2022 को होना है। इसके लिए अभिनेत्री बहुत जल्द करत रवाना होंगी। हालांकि अभी तक इस बारे में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

मीराबाई चानू ने रजत पदक जीता, कलाई की चोट के बावजूद 200 किलो वजन उठाया

कलाई की चोट के बावजूद विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक अपने नाम किया

नई दिल्ली। भारत की स्टार वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने कलाई की चोट के बावजूद विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक अपने नाम किया है। उन्होंने इस प्रतियोगिता में कुल 200 किलोग्राम भार उठाया। टोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता चानू ने 49 किग्रा वर्ग में स्नैच में 87 किग्रा और 'क्लीन एंड जर्क' में 113 किग्रा भार उठाया।

चीन की जियांग हुइहुआ ने कुल 206 किग्रा (93+113) भार उटाकर स्वर्ण पदक जीता, जबकि उनकी हमवतन और टोक्यो ओलंपिक चैंपियन होउ झिहुआ ने 198 किग्रा (89+109) भार उठाकर कांस्य पदक जीता। मुख्य कोच विजय शर्मा ने कहा, "हम इस टूनामेंट के लिए कोई दबाव नहीं ले रहे थे। यह वह वजन है जिसे मीरा नियमित रूप से उठाती हैं। अब से हम वजन बढ़ाना और सुधार करना शुरू करेंगे। हम (चोट के बारे में) ज्यादा कुछ नहीं कर सके क्योंकि हम विश्व चैंपियनशिप को छोड़ना नहीं चाहते थे। अब हम उनकी कलाई पर ध्यान देंगे क्योंकि हमारे पास अगले टूनामेंट से पहले काफी समय है।

2017 विश्व चैंपियन चानू को सितंबर में एक प्रशिक्षण सत्र के दौरान कलाई में चोट लग गई थी। इसके बाद उन्होंने चोट के साथ ही अक्तूबर में राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया था। प्रतियोगिता में कुल 11 खिलाड़ी शामिल थे, लेकिन अधिकतर खिलाड़ियों ने ज्यादा जोर नहीं लगाया और खुद को चोट से बचाने की कोशिश की। जिहुआ ने तो क्लीन एंड जर्क में अपना आखिरी प्रयास भी नहीं किया और उन्हें कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने के बाद अपने पहले अंतरराष्ट्रीय टूनामेंट में भाग ले रही चानू का प्रदर्शन स्नैच में काफी निराशाजनक रहा। उन्होंने 84 किग्रा भार उठाने के साथ शुरूआत की लेकिन 87 किग्रा भार उठाने के उनके दूसरे प्रयास को असफल माना गया। इसी वजह से उन्होंने 90 किग्रा भार उठाने की कोशिश नहीं की। 28 साल का चानू अपने अंतिम प्रयास में 87 किलोग्राम भार उठाते समय थोड़ा डगमगाईं, लेकिन अंत में वह सफल रहीं। इस वर्ग में उनका व्यक्तिगत स्कोर इससे एक किलोग्राम ज्यादा है।

रोहित शर्मा के चोट पर आया अपडेट फील्डिंग के दौरान घायल हो गए थे कप्तान

नई दिल्ली। बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा को उस वक्त मैदान से बाहर जाना पड़ा, जब वह फील्डिंग के दौरान घायल हो गए। उनकी उंगली से खून निकल रहा था और वह मैदान के बाहर चले गए। मैदान पर उनकी जगह फौरन रजत पाटीदार को लाया गया। रोहित को फौरन ढाका के एक अस्पताल में एक्स-रे के लिए भेजा गया। बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में दूसरे ओवर के दौरान उन्हें चोट लगी। सिराज की गेंद पर अनामुल हक के बल्ले से किनारा लेते हुए गेंद सेंकंड स्लिप पर खड़े रोहित शर्मा के अगूठे से जा लगी। चोट इतनी गंभीर थी, कि उन्हें मैदान छोड़कर बाहर जाना पड़ा। अब उनकी उस चोट को लेकर बीसीसीआइ ने जानकारी दी है। सोशल मीडिया के

माध्यम से बीसीसीआइ ने रोहित की चोट पर लिखा है कि भारतीय कप्तान को अंगूठे में फील्डिंग के दौरान चोट लग गई थी। बीसीसीआइ की मेडिकल टीम मूल्यांकण कर रही है। अब वह स्कैन के लिए गए हैं। टी20 वर्ल्ड कप में नाकामी के बाद टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा, न्यूजीलैंड दौरे पर टीम के साथ नहीं थे। उनकी अनुपस्थिति में वनडे में शिखर धवन और ळ20कमें हार्दिक ने कप्तानी की थी, लेकिन बांग्लादेश दौरे के द्वारा वह वनडे क्रिकेट में वापसी कर रहे थे।

स्विटजरलैंड के खिलाफ रोनाल्डो को मौका नहीं मिलने पर भड़कीं उनकी पार्टनर जॉर्जिना, कहा- यह शर्मनाक है

नई दिल्ली। पुर्तगाल की टीम फीफा वर्ल्ड कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई है। मंगलवार को राउंड ऑफ-16 के आखिरी मुकाबले में पुर्तगाल ने स्विटजरलैंड को 6-1 से करारी शिकस्त दी। इस मैच में पुर्तगाल के स्टार स्ट्राइकर और कप्तान क्रिस्टियानो रोनाल्डो को स्टार्टिंग प्लेइंग-11 में जगह नहीं दी गई थी। उनकी जगह गोंकालो रामोस मैदान पर उतरे थे। रामोस ने टीम मैनेजमेंट के फैसले को सही साबित करते हुए तीन गोल दागे और जीत में अहम भूमिका निभाई।

हालांकि, कोच फर्नांडो सांतोस के रोनाल्डो को प्लेइंग-11 से बाहर रखने के फैसले ने पूरी दुनिया को चौंका दिया था। पुर्तगाल की जीत के बाद भी रोनाल्डो के कई प्रशंसकों ने कोच सांतोस के इस फैसले की निंदा की। इसमें रोनाल्डो की पार्टनर जॉर्जिना रॉड्रिग्स भी शामिल हैं। पांच बार के बेलोन डी'ओर विजेता फुटबॉलर रोनाल्डो अब तक कुछ खास फॉर्म में नहीं दिखे हैं। घाना के खिलाफ पहले मैच में पेनल्टी स्ट्रोक पर गोल दागने के अलावा वह कुछ खास नहीं कर सके हैं। रोनाल्डो को ग्रुप-स्टेज के दौरान सभी मैचों में स्टार्टिंग लाइन अप में जगह मिली थी, लेकिन राउंड ऑफ-16 में बाहर किया गया। हालांकि, इस मैच में पुर्तगाल ने वर्ल्ड कप के अपने इतिहास में पहली बार नॉकआउट स्टेज में छह गोल दागे। पुर्तगाल के लिए छह खिलाड़ियों ने गोल किए। रोनाल्डो की पार्टनर जॉर्जिना भी यह मैच देखने कतर के एजुकेशन सिटी स्टेडियम पहुंची थीं। मैच के बाद जॉर्जिना ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट किया और टीम मैनेजमेंट के फैसले को शर्मनाक बताया।

जॉर्जिना ने लिखा- बधाई पुर्तगाल। जब टीम के 11 खिलाड़ी राष्ट्रगान के लिए मैदान पर उतरे तो सभी की निगाहें आप पर थीं। कितने शर्म की बात है कि मैं 90 मिनट तक दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी (रोनाल्डो) का लुत्फ नहीं उठा पाई।

प्रशंसकों ने आपके बारे में पूछना और आपका नाम चिल्लाना बंद नहीं किया। आप (रोनाल्डो) और आपके प्रिय मित्र फर्नांडो ऐसे ही साथ मिलकर हमें जश्न मनाने का और मौका देते रहें।

मोरक्को पहली बार विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंचा पेनल्टी शूटआउट में स्पेन को हराकर किया उलटफेर

मोरक्को ने विश्व कप इतिहास में पहली बार क्वार्टर फाइनल में अपना स्थान पक्का कर लिया है। उसने प्री-क्वार्टर फाइनल में 2010 की चैंपियन टीम स्पेन को पेनल्टी शूटआउट में हरा दिया। स्पेन की टीम लगातार दूसरी बार प्री-क्वार्टर फाइनल में हार गई।

पिछली बार उसे रूस ने पेनल्टी शूटआउट में ही हराया था। निर्धारित 90 मिनट तक एक भी गोल नहीं होने के बाद मैच एक्स्ट्रा टाइम में पहुंच गया। एक्स्ट्रा टाइम के समाप्त होने के बाद स्कोर 0-0 ही रहा। फिर मैच का नतीजा पेनल्टी शूटआउट से हुआ। मोरक्को के लिए पेनल्टी शूटआउट में अब्देलहमीद साबिरी, हाकिम जिएच और अशरफ हकीमी ने गेंद को गोलपोस्ट में भेजा। उसके लिए बद्र बेनउल गोल पेनल्टी शूटआउट में चूक गए। वहीं, स्पेन के लिए पाब्ले सराबिया, कार्लोस सोलर और सर्जियो बुस्केट्स चूक गए। तीनों गेंद को गोलपोस्ट में नहीं भेज सके। इस तरह मोरक्को ने पेनल्टी शूटआउट में स्पेन को 3-0 से हरा दिया। मोरक्को की टीम 1986 में इससे पहले प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंची थी। तब उसे वेस्ट जर्मनी ने हरा दिया था।

चोटिल पीवी सिंधु टूर्नामेंट से बाहर दिग्गजों को चुनौती देने उतरेंगे प्रणय

स्टार भारतीय शटलर एचएस प्रणय बुधवार से यहां शुरू हो रहे विश्व टूर फाइनल्स बैडमिंटन टूनामेंट में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को चुनौती देने के लिए तैयार हैं। पीवी सिंधू चोट की वजह से टूनामेंट में हिस्सा नहीं लेंगी। इसलिए भारतीय उम्मीदों का भार सिर्फ प्रणय के कंधों पर है। यह टूनामेंट पहले ग्वांग्झू, चीन में होना था, लेकिन कोविड-19 संक्रमण की वजह से यहां पर स्थानांतरित हुआ है। ग्रुप ए में प्रणय का सामना ओलंपिक चैंपियन डेनमार्क के विक्टर एक्सलसन, जापान के कोडाई नराओका और चीन के लू ग्वांग्झू से होगा। बुधवार को प्रणय का पहला मैच कोडाई के साथ है। हाल ही में अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित हुए प्रणय ने कहा, मैं वर्ष के अंतिम और अपने पहले विश्व टूर फाइनल्स टूनामेंट को लेकर उत्साहित हूं। प्रणय को कठिन ड्रॉ मिला है। इसलिए सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों को कड़ी चुनौती पेश करनी होगी। प्रणय के ग्रुप में शामिल खिलाड़ियों के खिलाफ उनका रिकॉर्ड अच्छा नहीं है। विश्व के नंबर एक एक्सलसन के खिलाफ प्रणय ने छह मैच खेले हैं। इनमें एक में जीत मिली और पांच हारे। प्रणय को कोडाई के खिलाफ इस वर्ष सिंगापुर ओपन और लू ग्वांग्झू के खिलाफ फ्रेंच ओपन में हार का सामना करना पड़ा था।

60 साल का इंतजार खत्म, क्यूबा सरकार ने महिला बॉक्सिंग से प्रतिबंध हटाया

बॉक्सिंग का दबदबा कहे जाने वाले क्यूबा की महिलाओं का बॉक्सिंग टूनामेंटों में हिस्सा लेने का लंबा इंतजार खत्म हो गया। 60 वर्षों में पहली बार क्यूबा की महिलाएं प्रतिस्पर्धी मुकाबलों में हिस्सा ले सकेंगी। क्यूबा के अधिकारियों ने महिला मुक्केबाजों को 60 वर्षों के प्रतिबंध के बाद प्रतिस्पर्धी मुकाबले खेलने की स्वीकृति देने की घोषणा की। क्यूबा के राष्ट्रीय खेल संस्थान (आईएनडीईआर) के उपाध्यक्ष एरियल सैंज ने कहा कि क्यूबा में महिलाएं भी बॉक्सिंग करेंगी। महिलाएं क्यूबा का नाम पदक तालिका में आगे लेकर जाएंगी। हमारा एक कानून है। अब पुरुष और महिला के बीच समानता रहेगी। आईएनडीईआर ने घोषणा की कि वे इस महीने 42 महिला मुक्केबाजों के बीच प्रतिस्पर्धा कराएंगे जिसके बाद 12 सदस्यीय महिला टीम का चयन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह टीम अल सल्वाडोर में मध्य अमेरिकी और कैरेबियाई खेलों के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदार्पण करेगी। अधिकारियों ने यह नहीं बताया कि क्यूबा में महिलाओं का बॉक्सिंग में प्रतिबंध क्यों लगा था, जबकि यहां महिलाओं को कुश्ती, भारोत्तोलन, कराटे, ताइकवांडो और जूडो में हिस्सा लेने की अनुमति है। प्रतिस्पर्धी मुक्केबाजी में शिरकत की स्वीकृति मिलने के बाद से लेगनिस काला मासो जैसी बॉक्सर बेहद खुश हैं जिन्हें सात साल पहले मुक्केबाजी शुरू करने के बाद से इस दिन का इंतजार था। काला मासो जैसी महिला मुक्केबाजों ने इस स्वीकृति को हासिल करने के लिए वर्षों से काफी संघर्ष किया है। काला मासो ने कहा, ह्यहमेशा से कहा जाता था कि मुक्केबाजी क्यूबा की महिलाओं के लिए नहीं है, यह हमेशा से समस्या रही थी। अब देखिए हम कहां हैं, हमने कभी नहीं सोचा था कि हम यहां पहुंचेंगे। क्यूबा को दुनिया भर में मुक्केबाजी के लिए जाना जाता है। उसने फेलिक्स सेवोन, टियोफिलो स्टीवसन और जूलियो सीजर ला क्रूज जैसे महान मुक्केबाज दुनिया को दिए और उसके पास ओलंपिक में दर्जनों पदक हैं। क्यूबा ने ओलंपिक में बॉक्सिंग में 41 स्वर्ण पदक जीते हैं। यह देश ओलंपिक में बॉक्सिंग में सर्वाधिक पदक जीतने के मामले में दूसरे नंबर पर है। शीर्ष पर अमेरिका है जिसने 50 स्वर्ण सहित कुल 117 पदक जीते हैं। क्यूबा के कुल पदक 78 हैं। ओलंपिक समिति (आईओसी) ने 2009 में घोषणा की थी कि महिलाएं भी बॉक्सिंग में हिस्सा लेंगी। इसके तीन साल बाद महिला बॉक्सरों ने 2012 लंदन, 2016 रियो डि जेनेरियो और 2020 में टोक्यो ओलंपिक में हिस्सा लिया था।

कमिंस वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट से बाहर हुए स्मिथ संभालेंगे कप्तानी

एडिलेड। ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम के कप्तान पैट कमिंस एडिलेड में गुरुवार से वेस्ट इंडीज के खिलाफ होने वाले दूसरे टेस्ट मैच से बाहर हो गए हैं। ऐसे में टीम की कप्तानी अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ करेंगे। वहीं एशेज सीरीज में अच्छा प्रदर्शन करने वाले स्कॉट बोलैंड को भी टीम में जगह मिली है। बोलैंड अब मिचेल स्टार्क जॉश हेजलवुड और कैमरन ग्रीन के साथ तेज गेंदबाजी की जिम्मेदारी संभालेंगे। कमिंस ने मंगलवार को गेंदबाजी नहीं की थी और बुधवार को ऑस्ट्रेलिया की ट्रेनिंग से पहले वह मैच से बाहर हो गए। स्मिथ मैच में कमिंस की जगह कप्तानी संभालेंगे। वहीं एक बयान के अनुसार मेडिकल स्टाफ ने एडिलेड में कमिंस की रिकवरी की बात कही थी पर चयनकताओं का मानना है कि कमिंस मैच के लिए पूरी तरह से फिट नहीं है। कमिंस अब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ब्रिसबेन में होने वाले पहले टेस्ट से ही वापसी करेंगे।

कतर में चल रहे फुटबॉल विश्वा कप के आखिरी प्री-क्वार्टर फाइनल मैच में पुर्तगाल ने स्विट्जरलैंड को 6-1 से हरा दिया। वह 16 साल के बाद क्वार्टर फाइनल में पहुंचा है। पिछली बार 2006 में पुर्तगाल की टीम सेमीफाइनल में पहुंची थी। वह क्रिस्टियानो रोनाल्डो का पहला विश्व कप था। अब वह संभवत: अपने आखिरी विश्व कप में खेल रहे हैं और उनकी टीम एक बार फिर से क्वार्टर फाइनल में पहुंच चुकी है। पुर्तगाल के लिए मैच के हीरो गोंजालो रामोस रहे। उन्होंने तीन गोल दागे।

राज बदलेगा या रिवाज : आज घोषित किए जाएंगे हिमाचल विधानसभा चुनाव के नतीजे

पर्वतीय राज्य में 68 निर्वाचन क्षेत्रों में 412 उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला होगा, जिनमें मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के पुत्र विक्रमादित्य सिंह और पूर्व भाजपा प्रमुख सतपाल सिंह सत्ती शामिल

शिमला। गुजरात के साथ ही सबकी निगाहें हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव पर भी टिकी गई हैं। सवाल किया जा रहा है कि पर्वतीय राज्य में हर पांच साल के बाद राज बदलने का रिवाज कायम रहेगा या फिर इस बार यह रिवाज बदल जाएगा। गत 12 नवंबर को संपन्न विधानसभा चुनाव में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जहां विकास के अपने एजेंडे की बदौलत चुनावी सफलता दोहराने की उम्मीद कर रही है वहीं मुख्य विपक्षी कांग्रेस मतदाताओं से निवर्तमान सरकार को सत्ता से बेदखल करने की चार दशक पुरानी परंपरा के बने रहने की आशा कर रही है। पर्वतीय राज्य में गुरुवार को 68 निर्वाचन क्षेत्रों में 412 उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला होगा जिनमें

मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के पुत्र विक्रमादित्य सिंह और पूर्व भाजपा प्रमुख सतपाल सिंह सत्ती शामिल हैं। भाजपा के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अग्रिम मोर्चे पर प्रचार अभियान की कमान संभाली थी और कहा था कि भाजपा के चिह्न कमल के लिए पड़ने वाला प्रत्येक वोट उनकी क्षमता बढ़ाएगा। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा गृहमंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कई चुनावी सभाएं कीं जबकि कांग्रेस के प्रचार अभियान की कमान मुख्यतः पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने संभाली थी। पिछले दो चुनावों में लचर प्रदर्शन करने वाली कांग्रेस के लिए भाजपा से हिमाचल प्रदेश छीनना अपने अस्तित्व का सवाल है। कांग्रेस के लिए यह और भी अहम है क्योंकि 24 साल बाद गांधी परिवार के बाहर के मल्लिकार्जुन खड़गे ने पार्टी की कमान संभाली है और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी प्रचार से पूरे तरह दूर रहे। कांग्रेस ने 2021 में पश्चिम बंगाल केरल असम पुडुचेरी और इस साल पंजाब उत्तर प्रदेश उत्तराखंड गोवा और मणिपुर समेत नौ राज्यों में हार झेली है। भाजपा के लिए हिमाचल प्रदेश में जीत प्रधानमंत्री मोदी की एक और उपलब्धि होगी जिन्होंने पार्टी के संदर्भ में सत्ता समर्थक लहर का नारा दिया है। हिमाचल प्रदेश का हर बार सत्ता बदलने का इतिहास रहा है। हिमाचल प्रदेश में जीत अगले साल नौ राज्यों में होने वाले चुनावों तथा 2024 के आम चुनाव में भी भाजपा की संभावनाओं को बल देगी। इसमें हिंदी पट्टी के प्रमुख राज्य राजस्थान छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश शामिल हैं। राज्य में नई-नई आई आम आदमी पार्टी (आप) का अभियान काफी शांत रहा क्योंकि मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच बनता दिख रहा था। भाजपा ने राज्य की महिला मतदाताओं की अच्छी-खासी तादाद होने के कारण उन्हें लुभाने के लिए सोच-समझकर कदम उठाए हैं। पार्टी ने उनके लिए एक अलग घोषणापत्र भी जारी किया। भाजपा ने समान नागरिक संहिता लागू करने और राज्य में आठ लाख नौकरियां पैदा करने का वादा किया जबकि कांग्रेस ने पुरानी पेंशन योजना बहाल करने 300 यूनिट निशुल्क बिजली देने और 680 करोड़ रुपये के स्टार्टअप की घोषणा की। कांग्रेस को उम्मीद है कि पुरानी पेंशन योजना और कई अन्य मुद्दों पर जनता ने उसे समर्थन दिया है और हिमाचल में उसकी सरकार बनेगी। कांग्रेस के एक नेता ने कहा अगर हम हिमाचल नहीं जीतते हैं तो मैं नहीं समझता कि हम कहां जीतेंगे। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को 44 और कांग्रेस को 21 सीटें हासिल हुई थीं।

बिहार इतना भी बुरा नहीं सिस्टम में बैठे नेताओं ने अपने लाभ के लिए इसे यह रूप दिया : प्रशांत किशोर

मोतिहारी। जन सुराज यात्रा के 66वें दिन सियासी रणनीतिकार प्रशांत किशोर पूर्वी चंपारण के चिरैया प्रखंड के गांवों में गए। यहां उन्होंने नेताओं पर तंज कसते हुए कहा कि बिहार इतना भी बुरा नहीं है। उन्होंने कहा सिस्टम में बैठे नेताओं ने इसे अपने फायदे के लिए बुरा बना रखा है। नेता ऐसा माहौल अपने निजी हित के लिए बनाए हुए हैं ताकि उनको बंदूक वाले सरकारी गनमैन मिल सकें। प्रशांत किशोर ने कहा मैं पिछले 65 दिनों से बिहार के हर गली-मुहल्ले घूम रहा हूं और मुझे किसी ने परेशान नहीं किया। सवाल है फिर जनता दूसरे नेताओं पर हमला क्यों कर रहे हैं? ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने आम जनता से जो बेरोजगारी शिक्षा स्वास्थ्य पर जो वादा किया था उसे अब तक पूरा नहीं किया। उन्होंने आम जनता से वोट तो लिया पर उनका भला न करके अपने और अपने परिवारवालों का भला किया है इससे ज्यादा कुछ नहीं। प्रशांत किशोर ने कहा कि 60 प्रतिशत लोगों के पास अपनी खुद की जमीन नहीं है।

जैकलीन फर्नांडीज ने कॉस्मेटिक सर्जरी को बताया अनफेयर एडवांटेज, यूजर्स बोले- देखो कौन बोल रहा

मुंबई। बॉलीवुड की पॉपुलर एक्ट्रेस जैकलीन फर्नांडीज इस समय ट्रोलर्स के निशाने पर हैं। दरअसल जैकलीन ने सालों पहले एक ब्यूटी पीजेंट में कॉस्मेटिक सर्जरी के बारे में विचार साझा करते हुए कहा था कि कॉस्मेटिक सर्जरी एक अनफेयर एडवांटेज है। अब ये देखने के बाद लोगों ने जैकलीन ने झूठा कहना शुरू कर दिया है। ट्रोलर्स का कहना है कि जैकलीन ने ये सब अपने फायदे के लिए कहा था। जैकलीन ने कॉस्मेटिक सर्जरी के बारे में बात करते हुए कहा था, 'मेरा मानना है कि कॉस्मेटिक सर्जरी एक अनफेयर एडवांटेज है, क्योंकि मुझे ये चीजें ब्यूटी पीजेंट के खिलाफ लगती हैं। महिलाओं की नेचुरल ब्यूटी को हमें सेलिब्रेट करना चाहिए। कॉस्मेटिक सर्जरी का, ये तरीका पूरे ब्यूटी पेजेंट के खिलाफ जाता है। वहीं कुछ लोग इसे सही बताते हैं, लेकिन ये बहुत महंगा है और हर कोई इसे अफोर्ड नहीं कर सकता है।' अब जैकलीन की ये वीडियो देखने के बाद यूजर्स इस पर रिएक्ट कर रहे हैं। उनका कहना है कि जैकलीन ने इसे अपने फायदे के लिए कहा था। जहां एक यूजर ने जैकलीन से सवाल पूछते हुए लिखा, 'अब तक कितनी सर्जरी कर चुकी हो?' वहीं दूसरे ने एक्ट्रेस पर तंज कसते हुए लिखा, 'हाहा...देखो तो जरा कौन बोल रहा है?'

खास खबर

सबरीमाला की हेलीकॉप्टर सेवा बंद, वीवीआईपी दर्शन पर पाबंदी

कोच्चि। केरल हाईकोर्ट ने सबरीमाला मंदिर के वीवीआईपी दर्शन पर रोक लगाने के आदेश जारी किए हैं। हाईकोर्ट ने मंदिर में आने वाले लोगों की हेलीकॉप्टर सेवा की पेशकश रोकने के आदेश जारी किए हैं। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति अनिल के नरेंद्र और न्यायमूर्ति पीजी अजीत कुमार की खंडपीठ ने स्वत संज्ञान लेते हुए उपरोक्त आदेश जारी किए हैं। हाई कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि देवस्य ओम बोर्ड आदेश को सुनिश्चित कराने के लिए कार्यवाही करे। सबरीमाला से ठीक पहले रुकने के स्थान पर हर कोई एक साधारण भक्त होता है। सबरीमाला के दर्शन करने से भक्तों के बीच किसी किस्म का कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

चेन्नई में वैन और ट्रक की टक्कर 6 की मौत

चेन्नई। एक वैन के एक बड़े ट्रक से टकराने से छह लोगों की मौत हो गई और चार अन्य घायल हुए। मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने प्रत्येक मृतक के परिजनों को एक-एक लाख रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया कि दुर्घटना के बारे में सुनने के बाद स्टालिन ने एमरसएमई मंत्री मो अनबरासन को घटना स्थल पर जाने और सभी प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिए नियुक्त किया।

तालिबान ने लड़कियों के लिए दी हाई स्कूल परीक्षा को मंजूरी

इस्लामाबाद। अफगानिस्तान में तालिबान के नेतृत्व वाली सरकार में एक अधिकारी और सामने आए कुछ दस्तावेजों से यह संकेत मिला कि अफगान लड़कियां इस सप्ताह हाई स्कूल परीक्षा में शामिल होंगी। हालांकि अफगानिस्तान में सत्ता संभालने के बाद तालिबान ने लड़कियों के कक्षाओं में जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था। तालिबान शिक्षा मंत्रालय से मिले दो दस्तावेजों के अनुसार यह फैसला अफगानिस्तान के 34 प्रांतों में से 31 पर लागू होगा।

पायलट का गद्दार कहने पर झलका दर्द मैं दुखी और आहत महसूस कर रहा था

हां मैं एक राजनीतिज्ञ हूं। लेकिन मैं भी एक इंसान हूं

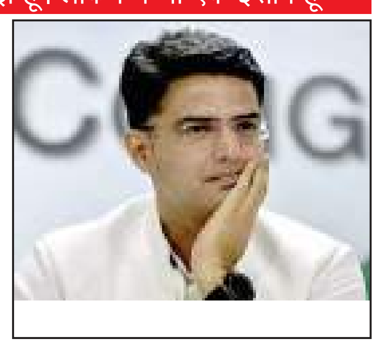

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा सार्वजनिक रूप से गद्दार कहने पर कांग्रेस नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट ने कहा कि वह इस टिप्पणी से दुखी और आहत हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि पार्टी के लिए और हम सभी को मिलकर काम करना है। पायलट ने कहा कि हां मैं एक राजनीतिज्ञ हूं। लेकिन मैं भी एक इंसान हूं। मैं दुखी और आहत महसूस कर रहा था। मैं अतीत में नहीं जाना चाहता। सार्वजनिक जीवन में मैं प्रवचन में एक गरिमा बनाए रखता हूं ... लेकिन आपको आगे बढ़ना होगा। और मेरे हाथ में एक काम और हाथ में एक मिशन है। हमें आगे बढ़ना है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के प्रवेश राजस्थान में कर चुका है। लेकिन इससे पहले ही फिर सीएम गहलोत और सचिन पायलट विवाद तेज हो गया। हालांकि संयुक्त मोर्चे की तत्काल आवश्यकता को देखकर गहलोत और पायलट ने एक संयुक्त उपस्थिति दर्ज कराई और घोषणा की कि पार्टी हमारे लिए सर्वोच्च है। गहलोत ने कहा था एक गद्दार (देशद्रोही) मुख्यमंत्री नहीं हो सकता। इस टिप्पणी ने कांग्रेस को सकते में डाल दिया था और पार्टी ने कहा था कि वह कड़े फैसले लेने में संकोच नहीं करेगी। कार्रवाई का वादा कोई नया नहीं था। हालांकि गहलोत के वफादारों द्वारा खुले विद्रोह के बाद इसी तरह के बयान दिए गए और जल्द ही ठंडे बस्ते में डाल दिए गए। विवाद के बीच यात्रा के साथ महाराष्ट्र से गुजरते हुए राहुल गांधी ने घोषणा की कि दोनों नेता कांग्रेस की संपत्ति हैं।

देश में पिछले 24 घंटों में सामने आए कोरोना संक्रमण के केवल 166 मरीज

नई दिल्ली। भारत में एक दिन में कोरोना वायरस संक्रमण के 166 नए मामले सामने आने के बाद देश में अब तक संक्रमित हुए लोगों की संख्या बढ़कर 44673949 हो गई जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 4255 रह गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बुधवार सुबह जारी अद्यतन आंकड़ों के अनुसार देश में संक्रमण से मौत के मामले बढ़कर 530638 हो गए हैं। पिछले 24 घंटे में कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में संक्रमण से मौत का एक-एक मामला सामने आया जबकि संक्रमण से मौत के आंकड़ों का पुनःमिलान करते हुए केरल ने वैश्विक महामारी से जान गंवाने वाले मरीजों की सूची में तीन नाम और जोड़े। अद्यतन आंकड़ों के मुताबिक देश में कोरोना वायरस संक्रमण के उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 4255 रह गई है जो कुल मामलों का 0.01 प्रतिशत है। पिछले 24 घंटे में उपचाराधीन मरीजों की संख्या में 90 की कमी दर्ज की गई है। मरीजों के ठीक होने की राष्ट्रीय दर 98.80 प्रतिशत है। देश में अभी तक कुल 44139056 लोग संक्रमण मुक्त हो चुके हैं जबकि कोविड-19 से मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत है।

विदेश मंत्री जयशंकर ने चीन को दी चेतावनी, कहा - एलएसी पर एकतरफा बदलाव की कोशिशों को नहीं करेंगे बर्दाश्त

संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन भारत के विदेश मंत्री ने दुश्मनों को घेरा

नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर ने बुधवार को कूटनीतिक तौर पर चीन के साथ हमारी नीति बेहद स्पष्ट है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) में एकतरफा बदलाव की कोशिशों को हम कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने चीन को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर चीन ऐसा करना जारी रखता है और सीमाई क्षेत्रों में गंभीर चिंता करने वाली ताकतों को बढ़ावा दिया जाता है, तो हमारे संबंध सामान्य नहीं रहेंगे और यह असामान्यता पिछले कुछ साल से जारी है। रूस से तेल खरीदना बाजार पर निर्भर इसके अलावा, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कतर में पूर्व नौसेना अधिकारियों के मसले पर राज्यसभा में कहा कि यह बेहद संवेदनशील मामला है। उनके हित हमारे दिमाग में सबसे ऊपर हैं। राजदूत और वरिष्ठ अधिकारी कतर की सरकार के लगातार संपर्क में हैं। हम विश्वास दिलाते हैं कि ये हमारी

प्राथमिकता में शामिल हैं। इसके साथ ही, उन्होंने विदेश नीति के मामले में रूस से कच्चे तेल की खरीद करने के मामले में कहा कि हम अपनी कंपनियों से रूसी तेल खरीदने के लिए नहीं कहते हैं। हम उनसे वह खरीदने के लिए कहते हैं, जो उनके लिए सबसे अच्छा विकल्प है। यह बाजार पर निर्भर करता है, यह एक समझदार नीति है कि भारतीय लोगों के हित में हमें सबसे अच्छा सौदा कहां मिलता है।

भारतीय कूटनीति में तेजी जारी

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को भारत की विदेश नीति में विकास पर राज्यसभा को सराहना करते हुए कहा कि देश के बढ़ते वैश्विक हितों, विस्तार के पदचिह्न और अधिक गहन साझेदारी के बीच भारत की कूटनीति जारी है। संसद में 'भारत की विदेश नीति में नवीनतम विकास' पर अपनी टिप्पणी देते हुए, जयशंकर ने कहा कि पिछले मानसून सत्र के बाद से भारत की कूटनीति में तेजी जारी रही, जब उन्होंने आखिरी बार भारतीय विदेश नीति पर अपडेट दिया था। उन्होंने कहा कि पिछले साल के मानसून सत्र के बाद से भारत की कूटनीति तेजी से जारी रही। माननीय राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने भारत और विदेशों में अपने कई विदेशी समकक्षों के साथ बातचीत की।

हमने संयुक्त राष्ट्र प्रमुख सहित भारत में कई गणमान्य व्यक्तियों की मेजबानी करते हुए जी20, एससीओ और आसियान से जुड़े कार्यक्रमों में भी भाग लिया। उन्होंने भारत द्वारा प्रमुख विदेश नीति पहलों के बारे में संसद को अवगत कराते हुए कहा कि इन गतिविधियों ने भारत की बढ़ती रुचि, विस्तार और अधिक गहन साझेदारी को दर्शाया है। इन प्रयासों के माध्यम से हम एक ऐसी दुनिया में अपने राष्ट्रीय उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में सक्षम थे, जो अनिश्चितताओं, व्यवधानों और प्रतिद्वंद्विता से घिरी हुई है। *एजेंसी*

मुंबई के प्रमुख स्टेशनों पर हमले की धमकी

पहले भी आ चुके हैं धमकी भरे कॉल

मुंबई। मुंबई के प्रमुख स्टेशनों कुर्ला सीएसएमटी और दादर रेलवे स्टेशनों पर हमला करने की धमकी नवी मुंबई में हेल्पलाइन नंबर 112 पर दिए जाने के बाद सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। हालांकि इस फोन कॉल की कोई सच्चाई अबतक नहीं निकली। प्राप्त जानकारी के अनुसार नवी मुंबई में हेल्पलाइन नंबर 112 से मुंबई पुलिस के कंट्रोल रूम पर कॉल आई। औरंगाबाद गंगाखेड से कॉल करने वाले व्यक्ति ने कहा कि गुजरात के पोरबंदर से आने वाला व्यक्ति मुंबई के कुर्ला सीएसएमटी और दादर रेलवे स्टेशनों पर हमला करेगा। नवी मुंबई हेल्पलाइन द्वारा मुंबई पुलिस को इसकी सूचना दी गई। उसके बाद इसकी जानकारी रेलवे पुलिस और संबंधित एजेंसियों को दी गई। इस संबंध में की गई जांच में इसमें कोई तथ्य नहीं मिला। इससे पहले मुंबई पुलिस के ट्रैफिक कंट्रोल रूम को पाकिस्तान के एक नंबर से 26/11 जैसा आतंकी हमला करने की धमकी वाला मैसेज मिला था। इस संबंध में वर्ली थाने में मामला दर्ज किया गया था। उसके बाद मुंबई ट्रैफिक पुलिस के कंट्रोल रूम को एक अनजान नंबर से मैसेज आया। संदेश सोमालिया से एक मोबाइल नंबर से भेजा गया था। इसमें अपने देश में घटी आतंकी घटनाओं के अनुरूप एहतियात बरतने के निर्देश दिए गए। सांताक्रूज में भी एक शख्स को वीडियो कॉल करके हमला करने की धमकी मिली थी। इस तरह की घटनाएं सुरक्षा व्यवस्था पर दबाव डाल रही हैं।

आजादी के अमृतकाल में जी20 की अध्यक्षता मिलना हमारे लिए गर्व का विषय : बिरला

संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन अध्यक्ष ने भारत के जी-20 समूह का अध्यक्ष बनने पर सरकार और देशवासियों को सदन की ओर से बधाई दी

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भारत के जी-20 देशों के समूह की अध्यक्षता ग्रहण करने एवं 2023 में शिखर सम्मेलन के भारत में प्रस्तावित आयोजन को देश के राजनयिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय बताया। उन्होंने उम्मीद जताई कि इससे देश समृद्ध बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत और जीवंत लोकतंत्र की शक्ति को विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर सकेगा। संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन एक बार के स्थगन के बाद दोपहर 12 बजे निचले सदन की कार्यवाही शुरू होने पर अध्यक्ष ने भारत के जी-20 समूह का अध्यक्ष बनने पर सरकार और देशवासियों को सदन की ओर से बधाई दी। उन्होंने कहा आजादी के अमृत महोत्सव काल में यह महत्वपूर्ण वैश्विक दायित्व मिलना गर्व का विषय है। बिरला ने कहा कि 2023 में जी-20

के राष्ट्राध्यक्षों का शिखर सम्मेलन भारत में होगा साथ ही जी-20 देशों की संसदों के पीठासीन अधिकारियों (पी20) का भी सम्मेलन होगा। उन्होंने कहा यह सम्मेलन भारत के राजनयिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय होगा।

लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि सम्मेलन का विषय एक पृथ्वी एक परिवार एक भविष्य हमारी वसुधैव कुटुम्बकम की आस्था के अनुरूप है। बिरला ने उम्मीद जताते हुए कहा कि जी-20 की अध्यक्षता के तहत एक वर्ष में देश में 200 कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे और इसमें हम अपनी समृद्ध बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत और जीवंत लोकतंत्र की शक्ति को विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने कहा सभी के सहयोग से जी-20 तथा पी-20 शिखर सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित होंगे और भारत संपूर्ण विश्व में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाएगा। गौरतलब है कि भारत ने एक दिसंबर को जी20 की अध्यक्षता ग्रहण की है। जी20 दुनिया की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर सरकारी मंच है। इसमें अर्जेंटीना ऑस्ट्रेलिया ब्राजील कनाडा चीन फ्रांस जर्मनी भारत इंडोनेशिया इटली जापान कोरिया गणराज्य मैक्सिको रूस सऊदी अरब दक्षिण अफ्रीका तुर्की ब्रिटेन अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं।

पीएम मोदी 11 दिसंबर को राष्ट्र को समर्पित करेंगे 3 राष्ट्रीय आयुष संस्थान

केंद्रीय आयुष मंत्री सबार्नंद सोनोवाल ने यह जानकारी दी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 11 दिसंबर को तीन राष्ट्रीय आयुष संस्थानों को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। इनमें गोवा स्थित अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) गाजियाबाद स्थित राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान और राजधानी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान शामिल हैं। केंद्रीय आयुष मंत्री सबार्नंद सोनोवाल ने यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि संस्थान अनुसंधान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को और मजबूत करेंगे और बड़ी आबादी के लिए किफायती आयुष सेवाओं की सुविधा प्रदान करेंगे। एक संवाददाता सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री सबार्नंद सोनोवाल ने नौवीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस (डब्ल्यूएसी) का विवरण भी दिया जिसका आयोजन गोवा के पंजिम में 8-11 दिसंबर के बीच किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इसमें आयुष प्रणाली में निहित वैज्ञानिकता प्रभावकारिता और क्षमता को सामने रखा जाएगा। केंद्रीय मंत्री सबार्नंद सोनोवाल ने कहा कि इन संस्थानों की स्थापना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में बुनियादी ढांचे और मानव संसाधन के विस्तार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण के अनुरूप है। इन संस्थानों के माध्यम से भारत सरकार देश के प्रत्येक नागरिक और क्षेत्र तक किफायती और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने की अपनी क्षमताओं को और मजबूत करेगी। उन्होंने कहा कि इन तीन राष्ट्रीय आयुष संस्थानों की स्थापना से आयुर्वेद होम्योपैथी और यूनानी में स्नातक-परास्नातक (यूजी-पीजी) और डॉक्टरेट करने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए 400 अतिरिक्त सीटें सृजित होंगी।

अरब में ए आर रहमान के संगीत का जादू

जेद्दा से अजित राय

सऊदी अरब के जेद्दा में आयोजित दूसरे रेड सी अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय संगीतकार ए आर रहमान का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है। करीब बीस हजार अरब स्त्री पुरुष आधी रात तक उनके गीतों पर थिरकते झूमते रहे। सऊदी अरब में ऐसा खुलापन पहले नहीं था। हजारों अरब लड़कियां ए आर रहमान के स्वर में स्वर मिलाते हुए स्लमडॉग मिलेनियर का वह आस्कर अवार्ड से सम्मानित मशहूर गीत गा रही थीं - जय हो जिससे यह कंसर्ट शुरू हुआ और छैंया छैंया जिससे यह कंसर्ट खत्म हुआ। इनमें कुछ ही लड़कियां बुर्के और हिजाब में थीं, बाकी ने आधुनिक ड्रेस पहन रखा था, और जाहिर है यहां ईरान की तरह कोई मोरल पुलिस नहीं थी जो उनके जुनून को रोक सके। सऊदी अरब जैसे इस्लामी देश में जिसके बारे में पश्चिमी और भारतीय मीडिया में बहुत कुछ असुविधा जनक छपता रहा है, वहां भारतीय फिल्म संगीत के प्रति ऐसी दीवानगी चकित करती है। उन हजारों नौजवानों की भीड़ में लड़के लड़कियां ने छोटे छोटे ग्रुप बना लिए थे और ए आर रहमान के साथ सामूहिक स्वर में गाते हुए झूम रही थी। सऊदी अरब में ए आर रहमान का यह पहला कंसर्ट था और यहां के लोगों के लिए भी अपनी तरह का यह पहला मौका था। अरब लोगों के साथ भी बड़ी संख्या में पाकिस्तानी लोग भी हिंदुस्तानी में उन्हें सुनने आए थे। लाल सागर के किनारे खुले में हजारों लाइटों के साथ विशाल मंच बनाया गया था जिसपर दर्जनों एलइडी स्क्रीन थी। वर्चुअल थ्री डी तकनीक के सहारे गाते हुए मंच पर ए आर रहमान की विशाल छवि दूर से भी दिखाई दे रही थी। कला और तकनीक का यह बेजोड़ संगम था। ए आर रहमान का उस चांदनी धुली रात में अरब के विशाल समुद्र तट पर हजारों नौजवानों के साथ गाते हुए सुनना सचमुच एक अविस्मरणीय अनुभव है। जिस इस्लामी सऊदी अरब के बारे में भी और पश्चिम में इतना कुछ लिखा पढ़ा जाता है, वहां संगीत के इस सूफी फकीर ने चमत्कार कर दिखाया। यहां न धर्म था, न देश - सबसे ऊपर बस संगीत था जो हमें आध्यात्मिक ऊंचाइयों तक ले जाता था, जैसे आसमान से ईश्वर अपना आशीर्वाद बरसा रहा हो। उनका संगीत मंच से उतरकर सीधे हमारी आत्मा को पवित्रता की खुशी से भर रहा था। समय खत्म होने के बाद भी अरबी लड़के लड़कियों की जमात रहमान को छोड़ नहीं रही थी और यह सिलसिला आधी रात के बाद तक जारी रहा। उन्होंने भारत के संगीत की शास्त्रीयता की बात की और राग यमन, भटियार, चारूकेशी, बिहाग, रीतिगवला, धरमावती, पूर्वा धनश्री, चलनाताई आदि पर आधारित अपनी फिल्मों के तमिल और हिंदी गाने सुनाए तो लगा कि शास्त्रीय संगीत में कितनी ताकत है। ' तू ही रे, आजा रे, चांद रे, तेरे बिना मैं कैसे जिऊं (बांबे) हो या राधा कैसे न जले (लगान) या फिर ' छैंया छैंया (दिल से) सभी का मूल शास्त्रीय संगीत ही है। बीच बीच में उनकी लाजवाब कमेंटरी और उनके साथ खुशी से स्वर मिलाते अरब नौजवान। यह एक ईश्वरीय दृश्य था जिसके हम साक्षी बने। ए आर रहमान के संगीत का जादू सदियों से बंद पड़े अरब समाज को न सिर्फ आजाद कर रहा था बल्कि उन्हें वैश्विक नागरिक बना रहा था। जिस सहजता से ए आर रहमान अरब लोगों से संवाद कर रहे थे, लग ही नहीं रहा था कि ये वही शख्स है जिन्हें दो दो बार आस्कर, ग्रैमी अवार्ड, गोल्डन ग्लोब और दुनिया भर के सम्मान मिल चुका है। वे इस समय दुनिया भर में भारत के सच्चे सांस्कृतिक राजदूत है। उन्होंने कहा भी कि कोरोना महामारी के बाद इतने सारे लोगों के बीच आकर गाते हुए विश्वास नहीं हो रहा है कि यह सच है। आपका शुक्रिया।

दिसंबर शुरू होने के साथ ही रात में तापमान गोता लगाने लगा है। खासकर, राज्य के पर्वतीय हिस्सों में हाड़ कंपाने वाली ठंड शुरू हो गई है। आने वाले दिनों में इसमें और इजाफा होगा। अगले कुछ दिनों में मैदानी क्षेत्रों में कोहरा तो पहाड़ों में पाला गिरने से मौसम विभाग ने न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्सियस की गिरावट की संभावना जताई है।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

आरबीआई के ब्याज दर बढ़ाने से बिकवाली हावी

मुंबई। मुम्बई शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नीतिगत ब्याज दर में 0.35 फीसदी वृद्धि करने की घोषणा के बाद आई है। इससे बाजार से निवेशक दूर हुए जिससे बिकवाली हावी हो गयी। कारोबार के दौरान दिग्गज कंपनियों रिलायंस इंडस्ट्रीज बजाज फिनसर्व एवं टाटा स्टील के शेयरों में बिकवाली हुई। विदेशी निवेशकों के भी बाजार से दूर होने से बाजारों में ये गिरावट आई। इसके अलावा एशियाई बाजारों के कमजोर प्रदर्शन से भी घरेलू बाजार पर विपरीत प्रभाव पड़ा है।

दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 215.68 अंक करीब 0.34 फीसदी नीचे आकर 62410.68 अंक पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला एनएसई सूचकांक निफ्टी भी 82.25 अंक तकरीबन 0.44 फीसदी नीचे आया और यह 18560.50 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में से एनटीपीसी को सबसे ज्यादा दो फीसदी का नुकसान हुआ। वहीं बजाज फिनसर्व इंडसइंड बैंक टाटा स्टील रिलायंस इंडस्ट्रीज और सन फार्मा के शेयर भी गिरे जबकि दूसरी ओर एशियन पेंट्स हिंदुस्तान यूनिलीवर एलएंडटी एक्सिस बैंक और आईटीसी के शेयरों में तेजी रही। आरबीआई के रेपो दर में 0.35 फीसदी की बढ़ोतरी से बाजार पर विपरीत प्रभाव पड़ा। मई से अब तक लगातार पांचवीं बार इस दर को बढ़ाने का कारण आरबीआई ने मुद्रास्फीति को नियंत्रण में करना बताया पर इससे निवेशकों में डर का माहौल बन गया। वहीं एशियाई बाजारों की बात करें तो शंघाई हांगकांग सोल और टोक्यो के सूचकांकों में भारी गिरावट रही। यूरोपीय शेयर बाजार दोपहर के सत्र में बढ़त के साथ कारोबार कर रहे थे जबकि अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1.56 फीसदी की गिरावट के साथ 78.11 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर आ गया। आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति की बैठक के परिणामों की घोषणा से पहले बुधवार को शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी कमजोर रुख के साथ खुले। सेंसेक्स की बड़ी कंपनियों विप्रो टीसीएस और मारुति के शेयरों में नुकसान से बाजार नीचे आ गया। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स शुरूआती कारोबार में 34.28 अंक के नुकसान से 62592.08 अंक पर आ गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 14.55 अंक के नुकसान से 18628.20 अंक पर कारोबार कर रहा था।

सोने चांदी में गिरावट

नई दिल्ली। घरेलू बाजार में बुधवार को सोने और चांदी की कीमतें में गिरावट आई है। दिल्ली सरार्फा बाजार में सोना 35 रुपये नीचे आकर 54054 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। वहीं इससे पहले के कारोबारी सत्र में सोना 54089 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था जबकि चांदी भी 251 रुपये फिसलकर 65928 रुपये प्रति किलोग्राम पहुंच गयी। बाजार जानकारों के अनुसार मंदी की आशंकाओं के कारण निवेशक जोखिम से बचने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे में सोने की कीमतें गिरी हैं। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना टूटकर 1772.8 डॉलर प्रति औंस पर था जबकि चांदी भी फिसलकर 22.30 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी। अब निवेशकों की नजरें अगले सप्ताह होने वाली अमेरिकी फेडरल रिजर्व की बैठक पर लगी हैं।

यस बैंक ने एफडी पर ब्याज दरों में किया बदलाव

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के यस बैंक ने 2 करोड़ रुपए से कम रकम की फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर ब्याज दरों में बदलाव किया है। बैंक की ऑफिशियल वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के मुताबिक ब्याज की नई दरें 5 दिसंबर से प्रभावी हो गई हैं। बदलाव के बाद बैंक वर्तमान में 7 दिनों से 120 महीनों में मैच्योर होने वाली जमा पर आम जनता के लिए 3.25 फीसदी से 6.75 फीसदी और वरिष्ठ नागरिकों के लिए 3.75 फीसदी से 7.50 फीसदी तक ब्याज दर दे रहा है। एक साल से 3 साल के बीच की मैच्योरिटी वाली जमा राशियों पर अब आम जनता को अधिकतम 7 फीसदी की ब्याज दर मिलेगी। ब्याज दरों में बदलाव के बाद यस बैंक 7 दिन से 14 दिन की एफडी पर 3.25 फीसदी 15 दिन से 45 दिन की एफडी पर 3.70 फीसदी 46 दिन से 90 दिन की एफडी पर 4.10 फीसदी 91 दिन से 180 दिन की एफडी पर 4.75 फीसदी और 181 दिन से 271 दिन की एफडी पर बैंक 5.50 फीसदी का ब्याज दे रहा है। अब यस बैंक 272 दिन से एक साल की एफडी पर 5.75 फीसदी एक साल से 36 महीने की एफडी पर अधिकतम 7 फीसदी और 36 महीने से 120 महीने की एफडी पर 6.75 फीसदी का ब्याज दे रहा है। बता दें कि हाल ही में आरबीएल बैंक एक्सिस बैंक सीएसबी बैंक लिमिटेड कोटक महिंद्रा बैंक केनरा बैंक इंडियन ओवरसीज बैंक आदि भी अपनी-अपनी एफडी दरों को बढ़ा चुके हैं।

एलन मस्क ने विकिपीडिया का उड़ाया मजाक

सैन फ्रांसिस्को। एलन मस्क का नाम बिजनेस वर्ल्ड में बेहद ही चर्चा में रहता आया है लेकिन इसके साथ ही वहां कई सारे विवादों में भी अक्सर घिरे दिखाते हैं। कभी वहां अपने प्रतिद्वंदी से भिड़ जाते हैं तब कभी अपने बयानों से लोगों को कन्फ्यूजन में डाल देते हैं। मस्क ने कई महीनों के चले नाटकीय घटनाक्रम के बाद आखिरकार नीली चिड़िया यानी ट्विटर पर अपना कब्जा जमा ही लिया। मस्क ने विकिपीडिया को निशाने पर लिया है। मस्क ने विकिपीडिया का उसके कट्टर वामपंथी पूर्वाग्रह के लिए मजाक उड़ाया। एक ट्वीट में उन्होंने कहा कि पृथ्वी के अधिकांश एमएसएम पक्षपाती है। विकिपीडिया इस दावे की पुष्टि करने के लिए एमएसएम स्रोत का हवाला दें। विकिपीडिया में एक गैर-तुच्छ वामपंथी पूर्वाग्रह है। मस्क की प्रतिक्रिया यूट्यूबर इयान माइल्स च्योंग द्वारा बताए जाने के बाद आई कि विकिपीडिया पर ट्विटर फाइल्स पेज को हटाने के लिए चर्चा चल रही है। ऑनलाइन विश्वकोश मंच विकिपीडिया द्वारा पेज की एडिटिंग को निलंबित करने के बाद टेक अरबपति ने सह-संस्थापक जिमी वेल्स को फटकार लगाते हुए कहा कि मंच अपनी निष्पक्षता खो रहा है।

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र में सोना की कीमतों से जुड़े जोखिम से बचाव की मंजूरी दी

आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने दी जानकारी

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने देश में स्थित निवासी इकाइयों को अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (आईएफएससी) में सोना की कीमतों से जुड़े जोखिम से बचाव की मंजूरी दे दी है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा की घोषणा कर फैसले की जानकारी दी। अभी तक भारत में मौजूद निवासी इकाइयों को विदेशी बाजारों में सोने में निवेश को लेकर कीमत जोखिम से बचाव की अनुमति नहीं मिली हुई थी।

दास ने कहा इन इकाइयों को सोने में निवेश को लेकर कीमत जोखिम से प्रभावी तरीके से बचाव के लिए अधिक लचीलापन देने के लिए यह तय किया गया है कि निवासी इकाइयों को आईएफएससी में मान्यता-प्राप्त एक्सचेंजों पर अपना स्वर्ण कीमत जोखिम से बचाव की मंजूरी हो। उन्होंने कहा कि इस बारे में विस्तृत निर्देश आरबीआई की तरफ से अलग से जारी किए जाएंगे। अहमदाबाद से सटे गिफ्ट सिटी में गठित आईएफएससी अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र के तौर पर काम करता है।

इस बीच आरबीआई ने सांविधिक तरलता अनुपात (एसएलआर) के अंतर्गत एचटीएम (हेल्ड टू मैच्योरिटी) श्रेणी की परिपक्वता अवधि को बढ़ाकर 31 मार्च 2024 तक करने का फैसला हुआ है। आरबीआई गवर्नर दास ने कहा कि 23 प्रतिशत की बढ़ी हुई एचटीएम सीमा में एक सितंबर 2020 से लेकर 31 मार्च 2024 तक प्रतिभूतियां लेने की अनुमति बैंकों को होगी। एचटीएम निवेश पोर्टफोलियो की श्रेणी है। इस श्रेणी की प्रतिभूतियों को बैंक उसकी परिपक्वता अवधि तक रखते हैं। आरबीआई ने पहले एचटीएम की सीमा को 19.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 23 प्रतिशत करने का फैसला किया था जिसके लिए मार्च 2023 तक की अवधि तय की गई थी। उन्होंने कहा कि जून 2024 की तिमाही से इस सीमा को चरणबद्ध ढंग से कम करते हुए फिर से 19.5 प्रतिशत पर लाया जाएगा।

पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस ने आवास ऋणों में अपनी पहुंच का विस्तार किया

नई दिल्ली। लोगों के अपने घर के सपने को पूरा करने में सक्षम बनाने और इसका समर्थन करने के पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस की दीर्घकालिक सोच के अनुरूप, कंपनी ने हाल ही में सस्ती गृह ऋण योजना झ रोशनी की शुरूआत की। इस पहल के तहत, व्यक्ति 5 लाख रुपये से लेकर 30 लाख रुपये तक के ऋण के लिए आवेदन कर सकते हैं। आज कंपनी ने चेन्नई, कोयम्बटूर, गाजियाबाद, हैदराबाद, इंदौर/उज्जैन, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, पुणे, राजकोट और वाराणसी में रोशनी केंद्रित शाखा स्थानों का उद्घाटन किया। यह योजना गृह संपत्ति की खरीद, स्व - निर्माण, गृह विस्तार/नवीकरण, भूखंड खरीद एवं निर्माण, संपत्ति पर ऋण आदि के लिए विभिन्न ऋण प्रदान करती है। इसलिए, चाहे ऋण आवेदक क्रेडिट के लिए नए हों, बिना औपचारिक आय वाले स्वरोजगारी हों और कम आय समूह के वेतनभोगी हों जिनकी घरेलू आय 10,000 रु. से कम हो या फिर मध्यम आय वर्ग श्रेणी वाले हों, सभी तरह के आवेदकों पर विचार किया जाएगा।

नीलाम होने जा रही रिलायंस कैपिटल

नई दिल्ली। भारी कर्ज संकट का सामना कर रहे उद्योगपति अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस कैपिटल नीलाम होने जा रही है। इसी महीने कंपनी की ई-नीलामी करने की तैयारी है। यह कंपनी इनसॉल्वेंसी प्रोसेस से गुजर रही है। सूत्रों के मुताबिक रिलायंस कैपिटल को खरीदने के लिए कई कंपनियों ने प्रस्ताव दिए हैं। अब कई दौर की बिडिंग होगी और सबसे ज्यादा बोली लगाने वाली कंपनी की झोली में रिलायंस कैपिटल गिरेगी। पीरामल एंटरप्राइजेज-कॉस्मी फाइनेंशियल होल्डिंग्स ने सबसे ज्यादा 5231 करोड़ रुपए की पेशकश की है और यह ई-नीलामी के लिए अच्छी कीमत होगी। पीरामल एंटरप्राइजेज-कॉस्मी फाइनेंशियल होल्डिंग्स के अलावा हिंदूजा ग्रुप टॉरेंट इनवेस्टमेंट्स और ओकट्री कैपिटल ने भी रिलायंस कैपिटल और इसकी सयहोगी कंपनियों को खरीदने के लिए बोली लगाई है। सूत्रों के मुताबिक बिडिंग की प्रक्रिया 19 दिसंबर से 22 दिसंबर तक होगी। पहले राउंड में बिडर्स को बेस प्राइस से कम से कम 1000 करोड़ रुपए अधिक की बोली लगानी होगी। दूसरे राउंड में बिडर्स को पहली राउंड की सबसे बड़ी बोली से कम से कम 750 करोड़ रुपए अधिक की बोली लगानी होगी। इसी तरह तीसरे राउंड में बिडर्स को दूसरे राउंड की सबसे बड़ी बोली से कम से कम 500 करोड़ रुपए ज्यादा की बोली लगानी होगी।

एक्सिस म्यूचुअल फंड ने लॉन्च किया 'एक्सिस लॉन्ग ड्यूरेशन फंड'

मुंबई। भारत में सबसे तेजी से बढ़ते फंड हाउसों में से एक एक्सिस म्यूचुअल फंड ने अपने नए फंड ऑफर -एक्सिस लॉन्ग ड्यूरेशन फंड के लॉन्च की घोषणा की। यह एक ओपन-एंडेड डेट स्कीम है, जो इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करती है जैसे कि पोर्टफोलियो की मैकेले ड्यूरेशन 7 वर्ष से अधिक है; अपेक्षाकृत उच्च ब्याज दर जोखिम और अपेक्षाकृत कम ऋण जोखिम। नया फंड निफ्टी लॉन्ग ड्यूरेशन डेट इंडेक्स ए-ट्रिपल को ट्रैक करेगा। एक्सिस लॉन्ग ड्यूरेशन फंड के लिए एनएफओ 7 दिसंबर, 2022 को खुलेगा और 21 दिसंबर, 2022 को बंद होगा। इसके अतिरिक्त, फंड का प्रबंधन श्री देवांग शाह, श्री कौस्तुभ सुले और श्री हार्दिक शाह द्वारा किया जाएगा और न्यूनतम निवेश राशि होगी 5,000 रुपए और उसके बाद 1 रुपए के गुणकों में निवेश किया जा सकता है।एक्सिस लॉन्ग ड्यूरेशन फंड का प्राथमिक निवेश उद्देश्य मध्यम स्तर के जोखिम के अनुरूप बेहतर रिटर्न उत्पन्न करना है।

श्रीराम सिटी यूनियन फाइनेंस के विलय के साथ श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड का गठन हुआ

नई दिल्ली। वाणिज्यिक वाहनों के लिए कर्ज देने वाली सबसे बड़ी कंपनी श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस कंपनी और दोपहिया वाहनों के लिए कर्ज देने वाली सबसे बड़ी कंपनी और सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्योगों को कर्ज देने के मामले में अग्रणी कंपनियों में शुमार श्रीराम सिटी यूनियन फाइनेंस के विलय के साथ श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड का गठन हुआ है। श्रीराम फाइनेंस एक डाइवर्सिफाइड कंपनी होगी जो 40,900 करोड़ रुपये के मजबूत नेटवर्थ और 1,71,000 करोड़ रुपये के एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) के साथ देश के 67 लाख ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करेगी। कंपनी की वृद्धि की रणनीति स्वरोजगार करने वालों और एमएसएमई इकोनॉमी को गति देने पर केंद्रित होगी। श्रीराम को लंबे समय से अपनी सेवाएं दे रहे उमेश रेवनकर विलय के बाद बनने वाली कंपनी के एग्जीक्यूटिव वाइस चेयरमैन होंगे। इस विलय पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा यह 43 साल की यात्रा की स्वाभाविक

परिणति है। विलय के जरिए बैलेंस शीट को मिलने वाली मजबूती के साथ हम मार्केट की जरूरतों को पहले से ज्यादा बेहतर तरीके से पूरा कर सकते हैं ग्राहकों पर ध्यान देने वाली कंपनी के तौर पर हम और प्रोडक्ट्स ला सकते हैं और जल्द-से-जल्द क्रेडिट हासिल करने में उनकी मदद कर सकते हैं। हमने दक्षता और ग्राहक सेवा के स्तर को बेहतर बनाने के लिए टेक्नोलॉजी में बहुत अधिक निवेश किया है हम लगातार दोहरे अंकों में ग्रोथ को लेकर आशान्वित हैं। श्रीराम फाइनेंस के एमडी और सीईओ वाईएस चक्रवर्ती ने कहा विलय के लिए जो समय चुना गया है, वो शानदार है. चूंकि भारत प्रगति कर रहा है और हम एमएसएमई के बीच कर्ज की मजबूत मांग दे रहे हैं।

रिजर्व बैंक ने कहा- मार्च तिमाही में छह प्रतिशत से नीचे आएगी मुद्रास्फीति

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कहा है कि चालू वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में मुद्रास्फीति छह प्रतिशत से नीचे आ जाएगी। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा की घोषणा करते हुए बुधवार को कहा कि केंद्रीय बैंक की मुद्रास्फीति पर अर्जुन की आंख की तरह नजर है। कीमतों की स्थिति से निपटने के लिए रिजर्व बैंक त्वरित और लचीला रुख अपनाएगा। हालांकि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल सहित जिंसों के दाम नीचे आए हैं लेकिन भू-राजनीतिक घटनाक्रमों की वजह से निकट अवधि का परिदृश्य अनिश्चित बना हुआ है। इसके अलावा घरेलू सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में तेजी का असर भी कीमतों पर दिखाई दिया है क्योंकि कंपनियां उत्पादन लागत का बोझ आगे बढ़ा रही हैं।

रिजर्व बैंक ने कहा कि इन कारकों को ध्यान में रखते हुए और कच्चे तेल की औसत कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल मानते हुए हमने अनुमान लगाया है कि 2022-23 में मुख्य मुद्रास्फीति छह प्रतिशत के संतोषजनक स्तर से ऊपर यानी 6.7 प्रतिशत पर बनी रहेगी। वहीं चालू वित्त वर्ष की तीसरी अक्टूबर-दिसंबर की तिमाही में यह 6.6 प्रतिशत रहेगी। चौथी जनवरी-मार्च की तिमाही में मुद्रास्फीति छह प्रतिशत से कम यानी 5.9 प्रतिशत रहेगी। रूस-यूक्रेन युद्ध की वजह से आपूर्ति श्रृंखला में अड़चनों के चलते पिछले 10 माह से खुदरा मुद्रास्फीति छह प्रतिशत से ऊपर बनी हुई है। सरकार ने रिजर्व बैंक को मुद्रास्फीति को चार प्रतिशत पर रखने का लक्ष्य दिया है। रिजर्व बैंक ने कहा कि मानसून सामान्य रहने की स्थिति में अगले वित्त वर्ष की पहली और दूसरी तिमाही में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति क्रमशः पांच प्रतिशत और 5.4 प्रतिशत रहेगी।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बुधवार को द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा में रेपो दर 0.35 और बढ़ा दी है। रेपो दर 0.35 प्रतिशत बढ़कर 6.25 प्रतिशत हुई। चालू वित्त वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान सात प्रतिशत से घटाकर 6.8 प्रतिशत किया गया। मुद्रास्फीति मार्च तिमाही में घटकर छह प्रतिशत से नीचे आएगी। चालू वित्त वर्ष में कुल मिलाकर 6.7 प्रतिशत रहने का अनुमान। अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। देश तीव्र आर्थिक वृद्धि दर हासिल करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था बना रहेगा। वैश्विक स्तर पर लंबे समय से जारी तनाव से परिदृश्य के समक्ष सबसे बड़ा जोखिम वैश्विक मंदी और वैश्विक वित्तीय स्थिति का कड़ा होना है। *एजेंसी*

ऑटो एक्सपो एमजी एयर ईवी के लिए बनेगा लॉन्च पैड लॉन्च हो सकती है सबसे छोटी लग्जरी इलेक्ट्रिक कार

नई दिल्ली। तीन साल के अंतराल के बाद वापसी करते हुए ऑटो एक्सपो के एमजी एयर ईवी के लिए लॉन्च पैड बनने की उम्मीद है। अगर एमजी एयर ईवीकेवल 2900 मिमी लंबाई वाली वूलिंग एयर ईवी के रीबैज वैरिएंट के रूप में आती है तो यह तीन दरवाजों वाला मॉडल भारत की सबसे छोटी इलेक्ट्रिक कार होगी। साथ ही यह देश में बिकने वाली सबसे छोटी फोर-व्हीलर भी होगी।

जनवरी में होने वाला ऑटो एक्सपो 2023 भारतीय ऑटो उद्योग का सबसे बड़ा ऑटोमोटिव इवेंट होगा। एमजी के लिए अपनी ईवी को पेश करने के लिए इस इवेंट से बेहतर मौका और क्या हो सकता है? मारुति सुजुकी ऑल्टो 800 और टाटा नैनो की लंबाई क्रमशः 3445 मिमी और 3099 मिमी है। यह साइज में छोटी हो सकती है लेकिन यह 200 से 300 किमी की रेंज के साथ आ सकती है। यह कार को टाटा टियागो ईवी और टाटा टिगोर ईवी जैसे प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बना देगा। आगामी एमजी झेडएसईवी को लगभग 68 एचपी के पावर आउटपुट के साथ सिंगल फ्रंट-एक्सल फिटेड इलेक्ट्रिक मोटर के साथ जोड़े गए 20-25 केडब्लूएच बैटरी पैक से पावर मिलने की उम्मीद है। साइज में बहुत कॉम्पैक्ट होने के बावजूद एमजी एयर ईवी के फीचर्स से लैस होने की उम्मीद है। कार में डुअल-डिस्प्ले टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम मिलेगा जो वॉयस कमांड से ओपरेट दो 10.25-इंच पैनल से बना है जो मर्सिडीज-बेंज जीएलए के समान है। इससे ईवी की प्रीमियमनेस बढ़ जाएगी। अपकमिंग एमजी एयर ईवी का साइज टाटा नैनो से छोटा होगा इसकी कीमत 10 लाख रुपये से कम होने की संभावना नहीं है। इसकी वजह इसमें इस्तेमाल होने वाली बड़ी बैटरी है। हालांकि ब्रिटिश कार ब्रांड की छोटी ईवी की कीमत प्रतिस्पर्धी और टाटा टियागो ईवी से कम होगी जो वर्तमान में भारत में सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक कार है।

संक्षेप

देश में 50 कस्बों में 5जी सेवाएं शुरू हो गई केंद्रीय संचार मंत्री ने लोकसभा में बताया

नई दिल्ली। केंद्र की मोदी सरकार ने बताया कि दूरसंचार सेवा प्रदाताओं ने 1 अक्टूबर 2022 से देश में 5जी सेवाएं देना शुरू कर दी हैं। पिछले महीने तक 50 कस्बों में 5जी सेवाएं शुरू हो गई हैं। लोकसभा में प्रो. सौगत राय के प्रश्न पर लिखित उत्तर में संचार इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इसकी जानकारी दी। वैष्णव ने बताया कि विभाग ने स्पेक्ट्रम की नीलामी के लिए आवेदन आमंत्रण सूचना (एनआईए) में अनुपालन दायित्व बताए हैं। उन्होंने कहा कि देश में 5जी सेवाओं की तैनाती के लिए किसी विशेष शहर/नगर का उल्लेख नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि दूरसंचार सेवा प्रदाताओं ने एक अक्टूबर 2022 से देश में 5जी सेवाएं उपलब्ध करानी शुरू कर दी है और 26 नवंबर तक 50 कस्बों में 5जी सेवाएं शुरू हो गई हैं। संचार इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने बताया कि भारत सरकार ने 72098 मेगाहट्र्ज (कुल स्पेक्ट्रम का 71 प्रतिशत) आवंटित किया था जिसकी बोली की राशि 150173.29 करोड़ रुपए थी।

केंद्र सरकार इस साल बढ़ा कर 2.5 लाख करोड़ दे सकती है उर्वरकों पर सब्सिडी

नई दिल्ली। देश के करोड़ों किसानों के लिए बड़ी खबर है। मोदी सरकार चालू वित्तवर्ष में उर्वरक पर सब्सिडी का दायरा बढ़ाकर 2.5 लाख करोड़ रुपए कर सकती है। फर्टिलाइजर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एफएआई) ने बताया है कि 2023-24 में ग?लोबल मार्केट में खाद की कीमतों में नरमी आने की वजह से सरकार की सब्सिडी भी कम हो सकती है। एफएआई ने कहा सरकार की सब्सिडी के बावजूद उद्योंगों को बहुत कम मार्जिन मिल रही है और ग्लोबल मार्केट में कीमतें बढ़ने की वजह से घरेलू बाजार में खाद के खुदरा दाम पर भी लगातार दबाव है। यही कारण है कि इस सेक्टर में निवेश भी तेजी से कम होता जा रहा है। हालांकि मौजूदा रबी सीजन के लिए देश में पर्याप्त मात्रा में खाद है और यूरिया डीएपी जैसे फर्टिलाइजर्स की कोई कमी नहीं है। एफएआई के अध्यक्ष केएस राजू ने बताया कि चालू वित्तवर्ष की खाद सब्सिडी 2.5 लाख करोड़ रुपए तक जा सकती है। सब्सिडी में बढ़ोतरी करने से किसानों को बढ़ी कीमतों से राहत मिलेगी और उन पर ग्लोबल मार्केट में फर्टिलाइजर्स व कच्चे माल की बढ़ी कीमतों का दबाव भी नहीं पड़ेगा। पिछले वित्तवर्ष में फर्टिलाइजर्स सब्सिडी महज 162 लाख करोड़ रुपये थी। एफएआई के बोर्ड सदस्य पीएस गहलोत ने कहा अगले साल फर्टिलाइजर्स सब्सिडी में 25 फीसदी की बड़ी गिरावट आ सकती है। यह मौजूदा सब्सिडी के लिहाज से करीब 65 हजार करोड़ रुपए होगा। इसकी वजह है ग्लोबल मार्केट में कच्चे माल और फर्टिलाइजर्स की कीमतों में आ रही नरमी। हालांकि यह वायदा बाजार में होने वाले ट्रेंड पर निर्भर करेगा।

बीपीसीएल के सेवानिवृत्त चेयरमैन अरूण कुमार सिंह को ओएनजीसी का प्रमुख बनाया गया

नई दिल्ली। तेल शोधन एवं विपणन कंपनी बीपीसीएल के पूर्व चेयरमैन अरुण कुमार सिंह को ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) का चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक नियुक्त किया गया। यह पहला मौका है जब किसी सेवानिवृत्त अधिकारी को किसी महारत्न पीएसयू का प्रमुख नियुक्त किया गया है। आधिकारिक आदेश के मुताबिक मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने अरुण कुमार सिंह को तीन वर्ष के लिए ओएनजीसी का चेयरमैन नियुक्त करने के पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस मंत्रालय के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। सिंह बीपीसीएल के पूर्व चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक हैं।

एचडीएफसी बैंक 9 दिसंबर, 2022 को, राष्ट्रीय रक्तदान अभियान का आयोजन करेगा

नई दिल्ली। भारत में प्राईवेट सेक्टर का सबसे बड़ा बैंक, एचडीएफसी बैंक शुक्रवार, 9 दिसंबर, 2022 को पूरे देश में रक्तदान शिविर का आयोजन करेगा। यह वार्षिक अभियान एचडीएफसी बैंक के फ्लैगशिप सीएसआर कार्यक्रम परिवर्तन के तहत इसका अग्रणी हैल्थकेयर अभियान है। अपने 14वें वर्ष में रक्तदान शिविर भारत के 1150 शहरों में 5500 से ज्यादा केंद्रों पर आयोजित किए जाएंगे। इनमें बड़े कॉर्पोरेट, कॉलेज और बैंक शाखाएं शामिल होंगी। इस साल रक्तदान शिविर में 4.5 लाख से ज्यादा रक्तदाताओं के भाग लेने की उम्मीद है। टेक्निकल और फंक्शनल सहायता के लिए इन शहरों में बैंक ने स्थानीय अस्पतालों, ब्लड बैंक्स और कॉलेजेस के साथ गठबंधन किया है। देश में 1200 से ज्यादा कॉलेजों को रक्तदान केंद्र बनाया गया है। भावेश जवेरी, ग्रुप हेड - ऑपरेशंस, एचडीएफसी बैंक ने कहा, यह ऑल इंडिया ब्लड डोनेशन अभियान का 14 वां साल है। यह अभियान 2007 से चल रहा है, और हमें इस पर गर्व है। उन्होंने कहा, मेडिकल इलाज रक्तदाता द्वारा खून की स्थिर आपूर्ति पर आश्रित होता है, क्योंकि अस्पताल में आने वाले हर सात में से एक मरीज के लिए खून की जरूरत पड़ती है। मेडिकल व्यवसायियों ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि यदि कोविड और अन्य सामान्य सावधानियों का पालन हो, तो रक्तदान करना सुरक्षित होता है। चलिए हम शुक्रवार, 9 दिसंबर को अपने नजदीकी रक्तदान शिविर में रक्तदान करके अपने आसपास के समुदायों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएं।

सन्मित इन्फ्रा लिमिटेड उड़ीसा में ड्रम पैकेजिंग में बिटुमेन की आपूर्ति करेगी

नई दिल्ली। बायोमेडिकल कचरे के निपटान, पेट्रोल उत्पादों की आपूर्ति, और रियल एस्टेट परियोजनाओं के निर्माण सहित बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में लगी बीएसई सूचीबद्ध, सन्मित इन्फ्रा लिमिटेड ने एक्सचेंज को सूचित किया है कि उसने थोक व्यापार के अलावा उड़ीसा में ड्रम पैकेजिंग में बिटुमेन की आपूर्ति शुरू कर दी है। बारिश का मौसम खत्म होते ही बिटुमेन का कारोबार भी पूरे जोरों पर शुरू हो गया है, हमें बिटुमेन का ऑर्डर मिलना शुरू हो गया है और 22 दिसंबर से 23 मार्च तक लगभग प्रति माह 4 करोड़ कारोबार करने की उम्मीद है। इसने हाल ही में भारत में विभिन्न श्मशान घाटों के लिए ईको फ्रेंडली लेस वुड/ग्रीन क्रीमेशन सिस्टम (जीएमएस) में कारोबार शुरू करने की भी योजना बनाई है। यह (जीएमएस) प्रणाली हिंदू परंपरा के अनुसार (दाह संस्कार) की पारंपरिक ओपन एयर वुड फायर सिस्टम की उन्नत तकनीक होगी। लकड़ी के धुएं के कारण पारंपरिक लकड़ी की चिता द्वारा अंतिम संस्कार प्रणाली का भारी पर्यावरणीय प्रभाव पड़ रहा है, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड, कण पदार्थ (पीएम) और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (वीओसी) का उत्सर्जन होता है, जिससे पर्यावरण में प्रमुख वायु प्रदूषण होता है। यह (जीएमएस) प्रणाली पारंपरिक लकड़ी को रबैंबू प्लेट्सर से बदल देगी, जिसमें उच्च कैलोरी मान, उच्च घनत्व, जलने पर कम राख पैदा होती है और इसलिए, प्रदूषण का स्तर न्यूनतम या नगण्य होगा।

वीवो वाई02 स्टाइलिश डिजाइन और 5000 एमएएच की बैटरी के साथ भारत में लॉन्च हुआ

नई दिल्ली। इनोवेटिव ग्लोबल स्मार्टफोन ब्रांड वीवो ने आज भारत में वाई02 के लॉन्च के साथ वाई सीरीज पोर्टफोलियो का और विस्तार किया। वाई02 का लक्ष्य अपने स्टाइलिश यूथफुल डिजाइन, मीडियाटेक ऑक्टा-कोर प्रोसेसर के साथ लंबे समय तक चलने वाली 5000 एमएएच बैटरी से यूजर को कंप्लीट एक्सपीरियंस देना है। 8,999 रुपए की कीमत में नया वीवो वाई02 दो वाइब्रेंट रंगों - आर्केड ब्लू और कॉस्मिक ग्रे में वीवो इंडिया ई-स्टोर और सभी पार्टनर रिटेल स्टोर्स पर उपलब्ध होगा। फ्लैट फ्रेम और स्लिम 8.49 मिमी बॉडी के साथ यूनिबॉडी डिजाइन वीवो वाई02 को आकर्षक बॉडी डिजाइन और आरामदायक पकड़ प्रदान करता है। यह 16.55 सेमी (6.51-इंच) हालो फुल व्यू डिस्प्ले के साथ एचडी+ रेजोल्यूशन के साथ आता है जो देखने के अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए आई प्रोटेक्शन मोड के साथ आता है। वीवो वाई02 भी मीडियाटेक ऑक्टा-कोर प्रोसेसर द्वारा संचालित है जो हर समय विश्वसनीय और कुशल परफॉर्मेंस प्रदान करता है। यह स्मार्टफोन फनटच ओएस 12 पर चलता है और 3जीबी रैम और 32जीबी स्टोरेज के साथ आता है, स्टोरेज को 1टीबी तक और बढ़ाया जा सकता है।

सैनिकों के कल्याण हेतु सशस्त्र सेना झंडा दिवस समर्पित: डीएम

जनसंदेश न्यूज

ज्ञानपुर। सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर कर्नल विनोद गुप्ता जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी द्वारा जिलाधिकारी गौरांग राठी, पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार सहित कलेक्ट्रेट परिसर में स्थित अन्य विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रतीकात्मक झण्डे लगाकर अंशदान प्राप्त किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने स्मारिका पुस्तक का विमोचन किया।

जिलाधिकारी गौरांग राठी ने कहा कि यह दिवस भारतीय सशस्त्र बलों के सैनिको के कल्याण हेतु भारत की जनता की ओर से आर्थिक योगदान के लिए समर्पित दिन है। इस धनराशि से कार्यरत, सेवानिवृत्त, शहीद सैनिकों के आश्रितों के कल्याण पर व्यय की जाती है। पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि हमारे सशस्त्र सेनाओं के बहादुर जवान देश की सीमाओं की रक्षा में लगे हुए हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर देश के गौरव के लिए अपने प्राणों की आहूति दी है। इसके अतिरिक्त शांति कालीन विपदाओं जैसे बाढ़, भूकम्प आदि के समय जवानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

कर्नल विनोद गुप्ता (अ.प्रा.) जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी ने बताया कि गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी 07 दिसम्बर को सैनिक झण्डा दिवस मनाया गया। झंडा दिवस,भारतीय सशस्त्र सेना के सेवानिवृत्त सैनिकों के कल्याण हेतु जनता से धन संग्रह के प्रति समर्पित वर्ष 1949 से 7 दिसंबर को भारत में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह,अपर जिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार मिश्र, अपर पुलिस अधीक्षक राजेश भारती सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

आयोजन

जनपद में मनाया गया सशस्त्र सेना झंडा दिवस

कृतज्ञ राष्ट्र ने बहादुर सैनिकों की सेवाओं को स्मरण कर किया नमन

प्रतीकात्मक झंडा लगाकर अंशदान करते डीएम गौरांग राठी

दो दिवसीय जनपदीय स्काउट गाइड रैली के पहले दिन प्रतियोगिताओं का आयोजन

जनसंदेश न्यूज

भदोही। नगर के भदोही गर्ल्स इंटर मीडिएट कालेज में बुधवार दो दिवसीय 27वीं जनपदीय स्काउट गाइड रैली के प्रथम दिन रोवर्स रेंजर की 6 अलग अलग टीमो के बीच मार्च पास्ट, वर्दी प्रतियोगिता, कलर पार्टी, प्राथमिक चिकित्सा, गांठ बंधन आदि प्रतियोगिता हुआ। बृहस्पतिवार को टेंट पुल बीपी 6 आदि प्रतियोगिता के पश्चात अच्छा प्रदर्शन करने वाले रोवर्स रेंजर्स को पुरस्कृत किया जायेगा। प्रथम दिन स्काउट गाइड रैली में जिले के 21 विद्यालय के रोवर्स रेंजर्स भाग लिये थे। जिन्हें 6 संवर्ग में बाटा गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक नंद लाल गुप्ता द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर हुआ। छात्रों द्वारा मुख्य अतिथि के समक्ष स्वागत गीत विशेष प्रदर्शन व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि ने भव्य व सुंदर आयोजन के लिए स्कूल के प्रबंधक व प्रिंसिपल नीलम सिंह के प्रति आभार जताते हुए अपने सम्बोधन में स्काउट गाइड से सम्बंधित विस्तार से चर्चा किया। उन्होंने बताया कि स्काउटिंग गाइडिंग युवाओं के व्यक्तित्व विकास का अनुपम आंदोलन है जो एक सैन्य अधिकारी लॉर्ड रॉबर्ट स्टीफेन्सन स्मिथ बेडन पॉवेल द्वारा 1907 में प्रारंभ किया गया। जिला प्रशिक्षण आयुक्त चंद्रेश राय, रियासत अली, डा. अनुराग मिश्र, शुचि तिवारी, डा. अजय पाण्डेय, ऋतुराज श्रीवास्तव, सलाम अंसारी, रामनरायण, राधा त्रिपाठी, सकलेन, सरवर, रोहित गुप्ता, अंजलि मौर्य आदि उपस्थित रहे।

संक्षेप

बड़े बकायेदारो से वसूली अभियान जारी: तहसीलदार

ज्ञानपुर। बड़े बकायेदारो से वसूली अभियान जारी रहेगा। उक्त बाते तहसीलदार सदर एक वार्ता के दौरान कही। उन्होने कहा कि तहसील ज्ञानपुर अंतर्गत जितने भी बकायेदार हैं उन्हे किसी भी कीमत पर बक्शा नही जायेगा। भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति पर कार्यरत जिलाधिकारी गौरांग राठी के निर्देश के क्रम में गठित तहसील ज्ञानपुर की राजस्व टीम द्वारा बुधवार को समय लगभग 1 बजे नायब तहसीलदार ज्ञानपुर और क्षेत्रीय संग्रह अमीन के साथ वसूली अभियान के दौरान संयुक्त रूप से जांच करते हुए 1.67 करोड़ के बकायेदार प्रदीप शुक्ला को गिरफ्तार कर राजस्व नियमों के अंतर्गत 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया। इस कार्यवाही के दौरान धक्का मुक्की में संग्रह अमीन लवकेश तिवारी को हल्की चोट आई उपचार के दौरान सकुशल है। जिलाधिकारी गौरांग राठी ने उपर्युक्त राजस्व टीम के कार्यों की सराहना करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना किया।

अपहृता किशोरी के साथ आरोपी युवक गिरफ्तार

सुरियावां। स्थानीय थाना अंतर्गत एक गांव निवासी एक युवक ने पिछले दिनों सुरियावां थाने में तहरीर देकर गांव के ही एक युवक के खिलाफ नाबालिग पुत्री को भगा ले जाने का मुकदमा पंजीकृत कराया था। सुरियावां पुलिस द्वारा मामले को संज्ञान में लेकर आवश्यक कार्यवाही की जा रही थी कि बुधवार को मुखबीर की सूचना पर आरोपी युवक को किशोरी के साथ रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार कर लड़की को सकुशल बरामद कर आवश्यक कार्यवाही करने के बाद युवक राहुल बिंद पुत्र राम नरेश बिंद उम्र 19 वर्ष निवासी वारी नैपुरवा को न्यायालय और किशोरी को नारी निकेतन भेज दिया।

सुरियावां ब्लॉक में सामूहिक विवाह का आयोजन नौ को

सुरियावां। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत नौ दिसंबर को सुरियावां खंड विकास कार्यालय में सामूहिक विवाह का आयोजन शासन के निदेर्शानुसार किया जाएगा। खंड विकास अधिकारी सुरियावां कमलजीत सिंह ने बताया कि सुरियावां खंड विकास कार्यालय से संबंध ग्राम पंचायत के 47 व नगर पंचायत सुरियावां से 10 जोड़ों द्वारा रजिस्ट्रेशन कराया गया है। सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायत और नगर पंचायत के पात्र व्यक्ति इस सामूहिक योजना का लाभ ले सकते हैं।

कीचड़ युक्त सड़क से परेशान ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

ज्ञानपुर। डीघ विकासखंड के बड़ागांव ग्राम सभा में भरतपुर से होकर जंगीगंज जाने वाली सड़क पर विनोद सिंह के घर के पास नाला ना बनने से सड़क पर पानी जमा हो जाता है, जिससे आने जाने वाले मोटरसाइकिल व साइकिल सवार आए दिन गिरते रहते हैं। जिससे कुछ लोगों को गंभीर चोटें भी आई हैं और गाड़ी की में भी नुकसान हुआ है। इस बदहाल सड़क को लेकर बुधवार को ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। जिसमें प्रमुख रुप से पूर्व ग्राम प्रधान, राधेश्याम मिश्र, मोहन, मकोई मिश्र, रविशंकर मिश्रा, रोशन मिश्रा, लेखन सरोज, सुख सरोज, कर्म राज सिंह आदि मौजूद लोग रहे।

21 शीशी देशी नाजायज शराब के साथ तस्कर गिरफ्तार

ज्ञानपुर। अवैध शराब तस्करी के रोकथाम व तस्करों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अवैध शराब तस्करी के रोकथाम व तस्करों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना गोपीगंज पुलिस टीम द्वारा चेकिंग के दौरान गेराई से शराब तस्कर निवासी पुरेझम्मन थाना गोपीगंज जनपद भदोही को 21 शीशी देशी नाजायज शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त गिरफतारी बरामदगी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मुअसं.355/2022 धारा. 60 आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत करते हुए आवश्यक विधिक कार्यवाही किया गया।

सीटी स्कैन कराने गई विवाहिता प्रयागराज से लापता

सुरियावां। थाना क्षेत्र के मऊ राम शाला निवासिनी बेबी बेगम उम्र 32 सीटी स्कैन कराने रविवार को प्रयागराज गयी थी। सीटी स्कैन सेंटर से ही लापता हो गयी। पति ने स्थानीय पुलिस को सूचना देकर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराया। लोदी उर्फ इम्तियाज ने चार दिसंबर को अपनी पत्नी बेबी बेगम का सीटी स्कैन कराने लाऊदर रोड प्रयागराज स्थित कृति स्कैनिंग सेंटर ले गया। सीटी स्कैन कराने के बाद अपनी पत्नी बेबी बेगम को गेट के बाहर बैठा कर रिपोर्ट लेने के लिए काउंटर पर गया, जब रिपोर्ट लेकर गेट पर लौटा तो देखा वहां पर उसकी पत्नी बेबी बेगम नहीं थी तो आसपास काफी खोजबीन किया, किंतु कुछ पता न चलने पर तब थाना जार्जटाउन जिला प्रयागराज में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है।

मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना का करें व्यापक प्रचार-प्रसार

जनसंदेश न्यूज

ज्ञानपुर। मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) के व्यापक प्रचार-प्रसार करने के क्रम में जिलाधिकारी गौरांग राठी ने समस्त उप जिलाधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि अपने तहसील व विकास खण्ड क्षेत्र में मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (कोविड-19) एवं मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) के अन्तर्गत पात्र लाभार्थियों का आवेदन अग्रसारित करते हुए जिला प्रोबेशन कार्यालय को उपलब्ध कराए। जिसमें अब तक मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) के 294 लाभार्थियों का खण्ड विकास अधिकारी द्वारा सत्यापन करते हुए प्रोबेशन कार्यालय में प्रेषित किया गया है। मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड व सामान्य के बच्चें व किशोर के चिन्हॉकन के क्रम में जिलाधिकारी ने जिला विद्यालय निरीक्षक व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि जनपद के सभी प्रधानाचार्य, अध्यापक अपने विद्यालय में पढ़ने वाले ऐसे बच्चों को चिन्हित करते हुए जिला प्रोबेशन कार्यालय में सूचित करते हुए आवेदन फार्म भरवाना सुनिश्चित करें।

जनपद भदोही में अब तक 187 बच्चों को इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित किया गया है। केन्द्र अथवा राज्य सरकार द्वारा संचालित किसी अन्य समरूपी योजना यथा- बाल श्रमिक विद्या योजना आदि का लाभ प्राप्त कर रहे परिवारों को उक्त योजना का लाभ नहीं दिया जा सकेगा। वित्तीय मानक-पात्रता की श्रेणी में आने वाले परिवार के अधिकतम दो बच्चों को प्रतिमाह प्रति बालक व बालिका रू. 2500/- की सहायता धनराशि प्रदान की जायेगी।

गौवंश लेकर जा रही पिकअप अनियंत्रित होकर पलटी

गोपीगंज। कोतवाली क्षेत्र के झिलिया पुल के पास ओवर ब्रिज से उतरते समय गोवंश लेकर जा रही पिकअप अनियंत्रित होकर पलट गई। घटना मे पिकअप मे लदे गोवंश मामूली रुप से घायल हो गये। वृंदावन सोनभद्र निवासी रामप्रवेश ने बताया कि कोइरौना से वह चार गाय व एक बछड़ा अपने वाहन से लेकर मेवरपुर आश्रम रेणुकूट जा रहा था। और जैसे ही गोपीगंज ओवर ब्रिज के नीचे उतरा इस दौरान एक बाइक सवार को बचाने के चक्कर में पिकअप अनियंत्रित हो गया और राष्ट्रीय राजमार्ग पर पलट गया। घटना मे सभी गौवंश मामूली रूप से घायल हो गये। सूचना पर पहुची गोपीगंज पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर वापस लौट गई। वही मौजूद लोगों में तरह तरह की चर्चा भी व्याप्त रही। प्रभारी निरीक्षक सदानंन्द सिंह ने बताया व्यापारी है गाय को कोइरौना से ले जा रहे थे।

नगर निकाय चुनाव, पार्टी सिम्बल पर चुनाव लड़ने की ठोक रहे दावेदारी

जनसंदेश न्यूज

भदोही। नगर निकाय चुनाव का नशा विभिन्न राजनीतिक दलों के महत्वाकांक्षी कार्यकताओं व राजनीतिक दल के लोगों के सर चढ़ कर बोल रहा है। नगर पालिका परिषद अध्यक्ष व वार्ड सभासद का आरक्षण आ जाने से जिनका गणित गड़बड़ हो गया है वे जहां आपत्ति दाखिल कर शासन की मंशा भाप रहे हैं वहीं दावेदार पार्टी सिम्बल के लिए पदाधिकारीयों के दरबार में हाजिरी लगा कर टिकट पक्का होने का जुगत लगा रहे हैं। दावेदारों की जहां टिकट को लेकर दौड़ तेज हो गई हैं वही टिकट देने वाले सक्रिय हो गये है। बात करें नगर पालिका परिषद भदोही की तो अध्यक्ष पद अनारक्षित हो जाने से तेज गति से चल रहे लोगो की गति मंद पड़ गई है वही कुछ राजनैतिक दल के सक्रिय लोग मजबूती से चुनाव लड? की दावेदारी कर रहै है। अध्यक्ष पद के दावेदार सदन मे बैठने के लिए तो सक्रिय लोग सभासद बनने को लेकर गंभीर हो गये है और अपने लिए सुरक्षित वार्ड की तलाश कर रहे हैं। वार्ड नम्बर 25 महिला के लिए आरक्षित हो जाने पर समाजसेवी टोनी मंसूरी पत्नी को चुनाव मैदान में उतारने की तैयारी के साथ ही सपा का टिकट हथियाने की हर जुगत में लग गए हैं। कमोबेश यही स्थिति सभी वार्डों के प्रत्याशियों की है। आरक्षण बदलने की आस को लेकर जहां कुछ लोगों की नजर प्रसाशन पर लगी है वही बाकी बचे दावेदार चुनाव की तारीख का इंतजार करते हुए पार्टी सिम्बल पर चुनाव लड़ने के लिए अपनी हर जुगत लगाने में जुट गए हैं।

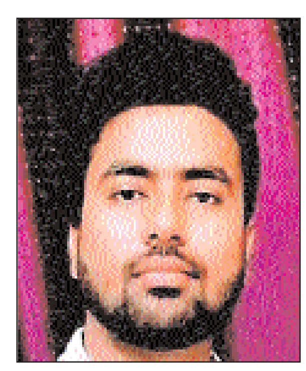
समाजसेवी टोनी मंसूरी

भाजपा नेता को मातृ शोक

सुजानगंज। स्थानीय थाना क्षेत्र के फरीदाबाद गांव निवासी भाजपा नेता चंदन त्रिपाठी की मां सियावती त्रिपाठी उम्र 60 वर्ष की हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया।

जानकारी होने पर क्षेत्रीय गणमान्य लोगों का उनके घर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त किया जा रहा है जिसमें राज्यसभा सांसद सीमा द्विवेदी, अभय सिंह, विनय सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता अजय शंकर दुबे सहित तमाम लोग घर पहुंच कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

डीएम को प्रार्थना पत्र सौंप लगायी मदद की गुहार

डीएम को प्रार्थना पत्र सौंपने जाते पीड़ित

जनसंदेश न्यूज

जौनपुर। मुहल्ला मण्डी अहमद खां के निवासी प्रकाश चन्द गुप्ता पुत्र स्व. मदन लाल गुप्ता ने जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर कहा है कि हम सभी का आवास एवं दुकान मिजार्पुर-भदोही मार्ग पर स्थित है जो राष्ट्रीय राजमार्ग सं.-135 ए भूमि में निर्मित भवन, दुकान एवं आवास को अतिक्रमण के दायरे में लाया गया है। हम सभी का आवास लगभग सैकड़ों वर्ष पुराना है जिस पर वे आबाद चले आ रहे हैं और उक्त निर्मित दुकान के सहारे उनकी रोजी-रोटी चल रही है। उनके पास न तो अन्य कोई रिहायशी एवं रोजमर्रा की आमदनी के लिए न कोई भवन है और न ही जमीन। दुकान ही एकमात्र जीविका का सहारा है। दुकान और आवास को तोड़ देने पर उनके पास अन्य कोई सहारा नहीं है। प्रकाश व अन्य सभी ने जिलाधिकारी से गुहार लगाते हुए कहाकि इस ठण्ड के मौसम में अपना एवं अपने बच्चों की देखभाल कैसे कर पायेंगे। मानवीय दृष्टिकोण से वैकल्पिक व्यवस्था करने हेतु आदेशित करें तथा राजकीय कोष से आर्थिक सहायता दिलायी जाय।

निकाय चुनाव के मद्देनजर सुरियावां में आप ने की बैठक

सुरियावां। नगर निकाय चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी की जिला कार्यकारिणी की बैठक सुरियावां नगर में सम्पन्न हुई। कार्यकताओं को संबोधित करते हुए निकाय चुनाव प्रभारी मनोज गुप्ता ने कहा कि निकाय चुनाव में कार्यकर्ताओ की लापरवाही आम आदमी पार्टी हरगिज बर्दाश्त नहीं करेगी और हर सीट पर आम आदमी पार्टी मजबूती से चुनाव लड़ेगी। उन्होंने कहा कि पार्टी का उद्देश्य नगर निगम, नगर पालिका और नगर पंचायत में फैले भ्रष्टाचार को समाप्त कर नगरीय व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करना है। बैठक में उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब में अच्छी शिक्षा, बेहतर चिकित्सा व्यवस्था, बिजली, पानी, महिला सुरक्षा, स्वास्थ, यातायात व्यवस्था पर शानदार काम किया है इस दौरान कई लोगों को आवदेन फार्म भी वितरण किया गाय। कार्यकर्ता सम्मेलन में प्रमुख रूप से, कालाधार दुबे, पंकज कुमार एडवोकेट, इजहार अहमद, राजेश बिंद, विनय बिंद, रोशन अली, श्यामसुंदर मौर्या, अशोक यादव, आशुतोश सिंह, राजकुमार सिंह, महेन्द्र नाथ पाल, बेजनाथ सरोज, बालकृष्ण, नईम भाई, आजम सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

ईंट भट्ठों का निरीक्षण कर अधिकारी देखें प्रदूषण की एनओसी : डीएम

जौनपुर। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा द्वारा जनपद के ईट भट्ठों को मानक के अनुरूप चलाए जाने के संबंध में बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि सम्बन्धित उप जिलाधिकारी, एएमए जिला पंचायत एवं प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी की संयुक्त टीम ईट-भट्ठों का औचक निरीक्षण करें और देखे कि सभी ईट-भट्ठे प्रदूषण की एनओसी ले लिए हों, जीएसटी में पंजीकरण करा लिए हो और रॉयल्टी जमा कर रहे व अन्य जो कमियां पायी जायें उन्हे दूर कराने की कार्यवाही की जाय। उन्होंने स्पष्ट रूप से निर्देश दिया है कि ऐसे ईट भट्ठे जो मानक के अनुरूप कार्य नहीं कर रहे हैं उनके ध्वस्तीकरण करने की कार्यवाही की जाए। बैठक में सहायक श्रम आयुक्त गौतम गिरी, खनन निरीक्षक जिला पंचायत उपायुक्त प्रशासन राज्य कर एवं महामंत्री ईट भट्ठा समिति अनिल सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे।

बैठक को सम्बोधित करते डीएम

महिलाओं के खिलाफ हिंसा व भेदभाव को लेकर किया गया जागरूक

बलिया। जिला प्रोबेशन अधिकारी के निदेर्शानुसार राष्ट्रीय जेंडर अभियान व महिलाओं के खिलाफ हिंसा और भेदभाव के उन्मूलन के बारे में जागरूकता बढ़ाने हेतु जागरूकता कार्यक्रम केसरी देवी बालिका इण्टर कॉलेज नफरेपुर रसड़ा बलिया में महिला शक्ति केंद्र के द्वारा किया गया। जिसमें महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित समस्त योजनाओं का प्रचार-प्रसार व समस्त हेल्पलाइन नम्बरों 112, 1090, 1098, 1930 आदि के बारे में जानकारी दी गइ। छात्राओं को बताया कि महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष समझा जाए बेटा बेटी में किसी प्रकार का भेदभाव न किया जाए और बालिकाओं को अधिक से अधिक शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया गया व लिंग भेदभाव और कुरीतियों को समाप्त करने व महिलाओं के विरुद्ध हो रही हिंसा तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए सभी छात्राओं को जागरूक किया गया। विद्यालय का प्रधानाचार्य दिलीप कुमार के द्वारा छात्राओं को बताया गया की जरूरत पड़ने पर या कोई भी समस्या होने पर हेल्पलाइन नंबर का प्रयोग करें।

उप राजस्व अधिकारी को दी गयी विदाई

जनसंदेश न्यूज

जौनपुर। उप राजस्व अधिकारी /विशेष न्यायिक दण्डाधिकारी सिंचाई खण्ड अरविंद कुमार के सेवानिवृत्त होने पर विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों ने विदाई समारोह का आयोजन किया। इस दौरान काव्य गोष्ठी भी हुई। विदाई समारोह की अध्यक्षता रामबचन राम सहायक अभियन्ता तथा संचालन अश्विनी कुमार सिंह अध्यापक ने किया। वहीं काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता कवि डा. प्रमोद वाचस्पति एवं संचालन सभाजीत द्विवेदी प्रखर प्रसिद्ध व्यंगकार ने किया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने माल्यार्पण कर सम्मान किया। मंगल स्वस्तिवाचन पं. अखिलेश तिवारी ने किया। उपस्थित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा देवी शीतला माता का स्मृति चिन्ह, वस्त्र अंगवस्त, शॉल, श्रीफल, श्री शंख, श्री रामायण स्वयं का फोटो व मिष्ठान आदि उपहार स्वरुप दिया गया। तत्पश्चात अजय कुमार सिंह, इश्तेयाक अहमद, रामसूरत सरोज, रविन्द्र कुमार, देवनारायण शर्मा, ओमप्रकाश तिवारी, रामबचन राम आदि ने अरविंद कुमार स्वभाव की सराहना किये। काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ माता सरस्वती की वंदना से किया गया। तत्पश्चात शायर अन्सार जौनपुरी, शोहरत जौनपुरी, ई. आरपी सोनकर, आशुतोष पाल वरिष्ठ कवि आलोक द्विवेदी 'शास्त्री' चन्द्रमणि पाण्डेय, वरिष्ठ अधिवक्ता कवि शकुन्तला शुक्ला इत्यादि ने अपनी श्रेष्ठतम रचनाओं की प्रस्तुति से उपस्थित जन समूह का मन मोहने में सफल रहे। श्रोताजन तालियां बजाकर रचनाकारों का उत्साहवर्धन करते रहे। इस कार्यक्रम में सुरेन्द्र सिंह, श्याम बहादुर यादव, बृजेश तिवारी, जीशान हैदर, रविकान्त माय, सुनील गौड़, आशीष श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार पाठक, राजेश गुप्ता कैशियर, शिव कुमार यादव, दीपा यादव, अनुपमा यादव, रागिनी श्रीवास्तव, राकेश कुमार, अब्बास अली, शंकर दयाल सिंह आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम

विदाई समारोह पर हुई काव्य गोष्ठी

उप राजस्व अधिकारी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते अतिथि

जनसंदेश टाइम्स प्रा.लि.के लिए **प्रवीण कुमार कुशवाहा,** सी 28 /121, तेलियाबाग, प्रथम तल, वाराणसी से प्रकाशित एवं मीडिया टेक्स्ट (Media Text) प्रा.लि. प्रेस, रोहनिया, वाराणसी से मुद्रित।
प्रधान सम्पादक - सुभाष राय
स्थानीय सम्पादक -प्रवीण कुमार कुशवाहा
पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बन्धित विवादों का न्याय क्षेत्र वाराणसी होगा।
फोन नं. 8177008889
आरएनआई नं. **UPHIN/2012/46221**
डाक पंजीयन सं.: जीपीओएलडब्ल्यू / एनपी - 78/2011-13।

जिलाधिकारी ने की सुरहा ताल की तैयारियों की समीक्षा

बलिया। जिलाधिकारी सौम्या अग्रवाल ने अपने आवास पर स्थित सभागार में सुरहा ताल पक्षी महोत्सव 2022 की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव दस, ग्यारह और बारह दिसंबर 2022 तक चलेगा। उन्होंने डीएफओ वी0के0 आनंद को निर्देश दिया कि अभी से सारी तैयारियां पूरी कर ली जाए। जिलाधिकारी 8 दिसंबर 2022 को दोपहर एक बजे जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर पक्षी महोत्सव के लोगों का अनावरण करेंगी। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि क्योंकि महोत्सव में भारी संख्या में सैलानी और बच्चे आएंगे अतः सुरक्षा का पूरा ख्याल रखा जाए। उन्होंने इसके लिए एसडीएम सदर को निर्देश दिया कि नौकायन कराते समय सुरक्षा गार्डों की तैनाती कर ली जाए और पहले से ही उनकी ट्रेनिंग करा ली जाए, ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके। नौकायन करते समय लोगों को सुरक्षा के लिए सेफ्टी गार्ड अवश्य पहनाए जाए और सीमित संख्या में ही लोगों को नावों पर बैठाया जाए। साथ ही बच्चों के मनोरंजन और उनके जलपान के लिए पहले से व्यवस्था कर ली जाए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत नृत्य, रंगोली, वाद-विवाद, फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन भी महोत्सव में किया जाएगा।

28वीं पुण्यतिथि पर याद किये गये कैप्टन गिरजाशंकर

पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते लोग

केराकत। सैनिक गिरजाशंकर बीटीसी महाविद्यालय के प्रांगण में कैप्टन गिरजाशंकर की 28वीं पुण्यतिथि तथा सशस्त्र सेना झंडा दिवस का आयोजन पुष्पांजलि समारोह के रुप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्था के संस्थापक डा. राजेश सिंह 'मुन्ना' द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का आरंभ किया गया। साथ ही सिक्योरिटी एण्ड इंटेलीजेंस सर्विस के प्रशिक्षण प्रभारी राजेश प्रसाद द्वारा श्रद्धांजलि दी गई। इसी क्रम में इंटेलिजेंस के जवानों द्वारा गाड आफ आनर देकर पुष्पांजलि सभा में श्रद्धांजलि अर्पित कर कैप्टन गिरजाशंकर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। भारतीय सेना में उनके द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्यों को याद किया गया। भारतीय सेना में रहे कैप्टन गिरजाशंकर विशिष्ट सेवा मेडल चक्र विजेता रहे। वक्ताओं ने उनके बलिदान को याद करते हुए कहा कि कैप्टन गिरजाशंकर की शौर्य गाथाओं से आने वाली पीढ़ियों को बहुत कुछ सीखने में मदद मिलेगी तथा उनके मन राष्ट्र के प्रति प्रेम, आदर और सम्मान बढ़ेगा। कार्यक्रम में सुमन गिरि, रमाकांत यादव, स्वरुप कन्नौजिया, जय सिंह, शिवाचन्द, सुनील कुमार यादव, आशुतोष तिवारी, सोने लाल सक्सेना, अनिल कुमार सरोज, धीरज पाल सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों के जवानों ने कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दी तथा संस्थान के प्रबंध समिति के सदस्य विनय कुमार राय ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

गोदौलिया चौराहे पर गूंजा कैमरा, ऐक्शन और कट...

बाउंसरों ने राहगीरों के साथ की अमानवीय हरकतें

अजय देवगन की भोला फिल्म की शूटिंग के दौरान उनके साथ के बाउसंरों ने उधर से गुजरने वाले राहगीरों के साथ दुर्व्यवहार किया। इस दौरान उधर से किसी को जाने नहीं दिया जा रहा था। जब कि बहुत सारे लोग नित्य की तरह घाट पर गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। छोटे छोटे बच्चे स्कूल जाने के लिए निकले थे। लेकिन हर किसी को उस मार्ग पर जाने से रोक दिया गया था।

अल सुबह हिंदी फिल्म भोला की हुई शूटिंग

अजय देवगन ने खुली जीप से चौराहे का लगाया तीन चक्कर

एक्टर को देखने के लिए प्रशंसकों का लगा रहा जमावड़ा

राधेश्याम कमल

बनारस की हृदयस्थली कहा जाने वाला गौदौलिया चौराहा बुधवार को सुबह कैमरा, एक्शन, कट व रिटेक से गूंजता रहा। अल सुबह गोदौलिया चौराहे पर एक्टर अजय देवगन की फिल्म भोला की शूटिंग को देखने के लिए हजारों प्रशंसकों की भीड़ जमा थी। हालांकि इसकी जानकारी फिल्म यूनिट वालों ने किसी को नहीं थी लेकिन सुबह होते-होते गोदौलिया चौराहे के चारों तरफ देखते ही देखते हजारों लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। इनमें महिला, पुरुष के अलावा बच्चे भी रहे। सुबह छह बजे जिस गोदौलिया चौराहे की ओर से होते हुए लोग गंगा स्नान के लिए दशाश्वमेधघाट जाते थे। आज उस मार्ग पर भारी संख्या में पुलिस फोर्स खड़ी नजर आयी। इसके अलावा चौराहे के इर्दगिर्द फिल्म यूनिट के लोग जमा थे। फिल्म यूनिट के

अलावा पुलिस भी एक्टर अजय देवगन का इंतजार कर रही थी। आखिरकार सुबह 6.30 बजे एक्टर अजय देवगन कार से गोदौलिया चौराहे पहुंचे। कार से उतर कर अजय देवगन फिल्म यूनिट के लोगों के साथ पैदल ही गोदौलिया चौराहे पर आये। एक-दो चक्कर लगाने के बाद चौराहे पर ही स्थित एक होटल में चले गये। होटल में मेकअप कराने के बाद अजय देवगन व उनकी फिल्म की टीम बाहर निकली। होटल के बाहर पहले से ही एक काले रंग की खुली जीप खड़ी थी। अजय देवगन काले रंग की पैंट, शर्ट व काले रंग का चश्मा पहने जीप पर सवार हुए। खुली जीप पर तीन दबंग किस्म के लोग पहले ही सवार थे। जीप चौराहे से मारवाड़ी अस्पताल तक आती है। यहां से अजय देवगन ड्राइवर के बगल की सीट पर मुंह में सिगरेट सुलगाये कुछ अलग ही अंदाज में बैठे थे। जीप जैसे ही स्टार्ट हुई कैमरा, एक्शन से गोदौलिया चौराहा गूंज उठा।

जीप वहां से स्टार्ट होकर गोदौलिया चौराहे के पास पहुंचती है। तभी कहा जाता है कि रिटेक। इसके बाद इसी सीन को तीन बार रिटेक किया गया। हर बार अजय देवगन उसी अंदाज में सिगरेट सुलगाये हुए जीप पर बैठे रहे। अंत में फिर उसी होटल में आये और कुछ देर ठहरने के बाद कार पर सवार होकर होटल के लिए निकल गये। गौरतलब हो कि अजय देवगन अपनी फिल्म भोला की शूटिंग के लिए बनारस आये हुए हैं। वह अभी बनारस में एक हफ्ते तक रह कर फिल्म की जगह-जगह शूटिंग करेंगे। गौदौलिया चौराहे पर अजय देवगन की झलक पाने के लिए उनके प्रशंसकों के बीच काफी अच्छा खासा उत्साह दिखा।

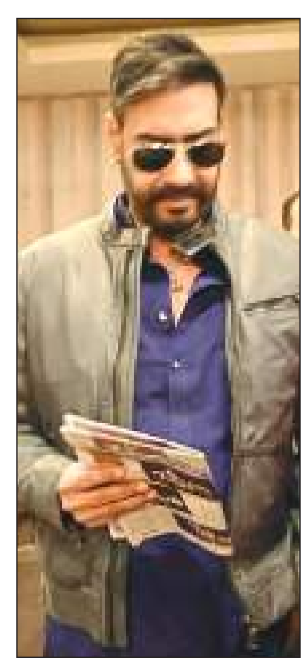

बाबा का अभिषेक बच्चन ने किया दर्शन

अभिनेता अभिषेक बच्चन फिल्म भोला की शूटिंग के लिए बुधवार को पहुंचे। सफेद कुर्ता-पायजामा साथ में सदरी के साथ कंधे पर शॉल लिए अभिषेक बच्चन काशी विश्वनाथ धाम में पहुंचे। उनके काशी विश्वनाथ धाम पहुंचते ही उनके फैंस उनके साथ सेल्फी खिंचवाने के लिए बेताब दिखे। काशी विश्वनाथ मंदिर के कर्मचारियों ने भी जब उनके साथ फोटो खींचवानी चाही तो उन्होंने उनके निराश नहीं किया। मंदिर के कर्मचारियों के साथ अभिषेक बच्चन ने सेल्फी खिंचवाई। उनके साथ शहर के ज्योतिषविद् पं. चन्द्रमौलि उपाध्याय भी रहे।

'कहत भिखारी' के मंचन से नायक जीवंत

राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव

भिखारी ठाकुर के जीवन के घटनाक्रम को एक सूत्र में पिरोया

वाराणसी। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज तथा नाट्य प्रोत्साहन योजना के तहत नागरी नाटक मंडली प्रेक्षागृह में आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव के तीसरे दिन रुपांतर नाट्य मंच गोरखपुर की प्रस्तुति कहत भिखारी का मंचन किया गया। इसके निर्देशक सुनील जायसवाल रहे। प्रस्तुत नाटक कहत भिखारी, भिखारी ठाकुर की ही कृतियों पर आधारित थी। उनके रचित बिहार बहार, कलयुगी प्रेम, बेटी-वियोग, गबरघिचोर, के पात्रों व घटनाओं को विकास क्रम में प्रयोग किया गया है। साथ ही उनके द्वारा रचित गीतों का प्रयोग है। इस नाट्य लेख में भिखारी की मूल कहानियों व शैली से छेड़छाड़ नहीं की गई है। इसे मूल स्वरूप को यथावत रखने के लिए व भिखारी ठाकुर पर न्यायसंगत कार्य के लिए भोजपुरी भषा में ही नाट्य लेख तैयार करना आवश्यक था। यद्यपि इस रचना की बोली भिखारी के मूल स्थान कुतुबपुर, जिला-आरा, बिहार की भोजपुरी न होकर हमारे क्षेत्र विशेष, गोरखपुर परिक्षेत्र की भोजपुरी है। केवल यही दुस्साहस इस रचना में किया गया है अन्थया भिखारी की मूल भावना व आत्मा को यथावत रखने का प्रयास है। भिखारी के जीवन के घटनाक्रम को एक सूत्र में पिरोने में संजीव की पुस्तक सूत्रधार का विशेष योगदान था। निर्देशक बताते हैं कि पूर्वांचल व बिहार की धरती भोजपुरी भाषा के अपनेपन की डोर में बंधी है। बोलियां तो जिला वार बदलती रहती है किंतु आत्मा सब

की एक ही है-भोजपुरी। भोजपुरी में प्रकाशन कम होने के बावजूद कृतियों की कमी कभी महसूस नहीं हुई। चाहे गीत हो, नृत्य हो या कथा साहित्य आदिकाल से जन-जन में लोकोक्तयां, किस्सा कहानियां, संस्कार गीत, नाट्य प्रदर्शन, रामायण कथा आदि लोक कलाओं के रूप में सदी जीवित रही। 19वीं सदी के मध्य में भोजपुरी का एक सिपाही महानायक बन कर उभरा जिसका नाम है भिखारी ठाकुर। अपनी सरल व लोक लुभावनी भाषा में उन्होंने लोक के मर्म को प्रस्तुत किया। उनके गीत व कथा आज भी प्रासंगिक है। भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व का यह पहलू जो एक कलाकार का है। एक रचयिता का है। एक सृजनकर्ता का है। लेखक ने इसी पक्ष को क्रमबद्ध एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया है। इस नाटक का नाम दिया कहत भिखारी। कलाकारों में अपणेश मिश्र, आदित्य राजन, पवन कुमार, सत्यशील खुल्लर, स्वास्तिक गुप्ता, हरिकेश पांडेय, कु. सुरभि अग्रवाल, आदि की भूमिकाएं रही। संयोजन अतुल सिंह ने किया।

जीत तो मिली, पर 'आप' के लिए कुछ 'चीजों' पर मंथन जरूरी

आतिशी, निर्मला या शालिनी बन सकती हैं दिल्ली की मेयरः आप की जीत से सिसोदिया का कद बढ़ा, मुस्लिम वोट छिटकने से चिंता

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली नगर निगम के चुनाव में बहुमत हासिल कर लिया है। लेकिन यह जीत वैसी नहीं थी जैसी तमाम सर्वे में बताई गई थी। अरविंद केजरीवाल के तीन बार दिल्ली का सीएम बनने के बाद ये पहला मौका है जब एमसीडी भी आप के कब्जे में आ गई है। निगम की 250 सीटों में आप ने 134 और बीजेपी ने 104 सीटों पर जीत हासिल की है। कांग्रेस के लिए ये चुनाव भी बेहद खराब रहा और उसे सिर्फ 9 सीटों पर जीत हासिल हुई। इस जीत के साथ ही आप ने बीजेपी की 15 साल की बादशाहत खत्म कर दी। जानकार कहते हैं कि अरविंद केजरीवाल अब 2024 के लोकसभा चुनाव के मद्देनजर राष्ट्रीय राजनीति में ज्यादा एक्टिव नजर आने वाले हैं। गुजरात और हिमाचल विधानसभा चुनाव के नतीजों से एक दिन पहले आप की ये जीत राष्ट्रीय राजनीति के लिए भी कई संदेश लेकर आई है। आप के कई बड़े नेता शराब घोटाले और हवाला कारोबार के आरोपों से घिरे हैं। स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन जेल में हैं और डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया पर भी लगातार सवाल उठ रहे हैं। ऐसे में इस जीत ने पार्टी में मनीष सिसोदिया के कद को और मजबूत किया है। हालांकि मंत्री सत्येंद्र जैन के विधानसभा क्षेत्र शकूरबस्ती में बीजेपी ने तीनों सीटें सरस्वती विहार, पश्चिम विहार और रानी बाग जीत ली हैं। मनीष सिसोदिया के विधानसभा क्षेत्र के 4 में से 3 वार्डों में आप की हार चौंकाने वाली रही है। उधर आतिशी मर्लेना की सीट कालकाजी के भी तीनों वार्डों में बीजेपी ने जीत दर्ज की है।

सिसोदिया को दिल्ली की बागडोर संभव

एमसीडी का चुनाव आम आदमी पार्टी के लिए इस मायने में भी चुनौती भरा था, क्योंकि गुजरात के ठीक साथ ही ये चुनाव हो रहे थे। अरविंद केजरीवाल पूरी तरह गुजरात में प्रचार में जुटे रहे। इस जीत का श्रेय मनीष सिसोदिया को भी है क्योंकि वे दिल्ली में चुनाव की रणनीति संचालित कर रहे थे। आम आदमी पार्टी के सूत्रों के मुताबिक इस जीत के बाद मनीष सिसोदिया को दिल्ली में बड़ी भूमिका मिल सकती है और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ने के लिए मुक्त हो सकते हैं। सिसोदिया के लिए ये भूमिका सीएम की भी हो सकती है। मनीष सिसोदिया शराब घोटाले के आरोप में फंसे हैं। सेंट्रल एजेंसी उनके घर दबिश दे चुकी है। एमसीडी की जीत से उनका पक्ष मजबूत हुआ है। चुनाव की तैयारी मनीष सिसोदिया के अलावा राघव चड्ढा, आतिशी, संजय सिंह, सौरभ भारद्वाज व दुर्गेश पाठक जैसे नेताओं के कंधों पर थी। एमसीडी की जीत ने इन नेताओं को पहली श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। पार्टी के लिए इन नेताओं के रूप में नया नेतृत्व खड़ा होगा और देशभर में पार्टी के प्रसार में ये फायदा पहुंचाएगा। आने वाले दिनों में हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ में भी विधानसभा चुनाव हैं।

मुस्लिम आबादी वाले इलाकों में हारी 'आप'

एमसीडी में बहुमत पाने के बावजूद आप के लिए चिंता की बात है। पार्टी को मुस्लिम आबादी वाले इलाकों में हार मिली है। दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष और विधायक अमानतुल्लाह खान के विधानसभा क्षेत्र ओखला में आप पांच में से एक वार्ड ही जीत पाई। कांग्रेस और बीजेपी को दो-दो वार्ड में जीत मिली है। इसी इलाके में शाहीन बाग आता है, जहां सीएए-एनआरसी के खिलाफ आंदोलन चला था। दिल्ली दंगों के आरोपी पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन के वार्ड नेहरू विहार में आम आदमी पार्टी तीसरे नंबर पर रही। दंगों के बाद ताहिर को पार्टी से निकाल दिया गया था। फरवरी 2020 में सीएए के खिलाफ आंदोलन के दौरान दंगे भड़क गए थे। दंगे में 53 लोगों की मौत हो गई थी। हिंसा का सबसे ज्यादा असर शिव विहार, मुस्तफाबाद, सीलमपुर, भजनपुरा, विजय पार्क, यमुना विहार और मौजपुर में था। यहां आप की बड़ी हार हुई है। इसी तरह सीलमपुर में निर्दलीय उम्मीदवार हज्जन शकीला ने जीत दर्ज की है। इस सीट पर आप कैंडिडेट ने नाम वापस लेकर शकीला को समर्थन दिया था। बीजेपी ने भी चार पसमांदा उम्मीदवारों को उतारा था, लेकिन सभी हार गए। बीजेपी ने मुस्तफाबाद से शबनम मलिक, चांदनी महल से इरफान मलिक, कुरैशी नगर वेस्ट से शमीन रजा कुरैशी और चौहान बांगर से सबा गाजी को टिकट दिया था।

आतिशी, निर्मला और शालिनी मेयर की रेस में

आप के एमसीडी में बहुमत पाते ही सबसे पहला सवाल उठ रहा है कि अब मेयर कौन होगा? आप के विश्वस्त सूत्रों के मुताबिक, इसके लिए भी पार्टी ने पहले ही तैयारी कर रखी है। आतिशी मर्लेना का नाम इस रेस में फिलहाल सबसे आगे है। हालांकि उन्हें इसके लिए विधायक का पद छोड़ना पड़ेगा। आतिशी के अलावा आप नेता निर्मला देवी को भी मेयर बनाया जा सकता है। निर्मला देवी पार्टी की महिला इकाई की प्रदेश संयोजक हैं। इसके अलावा काउंसलर कैप्टन शालिनी सिंह का नाम भी चर्चा में है। आतिशी साउथ दिल्ली की कालकाजी सीट से विधायक हैं। लोकसभा चुनाव हारने के बाद साल 2020 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने 11,422 वोट से जीत हासिल की थी। एमसीडी चुनाव जीते पार्षदों का कार्यकाल 5 साल के लिए होता है, लेकिन मेयर सिर्फ एक साल के लिए चुने जाते हैं। टउऊमें कुल 250 वार्ड हैं। इन वार्डों से जीते पार्षद ही मेयर का चुनाव करते हैं। दिल्ली की जनता सीधे तौर पर मेयर नहीं चुन सकती। जनता पार्षदों को चुनती है और पार्षद मेयर को। एमसीडी की सरकार का कार्यकाल 5 साल का होता है। इन 5 साल में पहले साल किसी महिला पार्षद को ही मेयर बनाया जा सकता है। ये एक तरह का रिजर्वेशन है। तीसरे साल किसी अनुसूचित जाति के पार्षद को मेयर बनाया जाएगा।

क्या हैं मुद्दे अब सुलझाने को

पहला है कचरा, जिस पर मनीष सिसोदिया कहते हैं कि निगम का मुख्य काम कूड़े की साफ-सफाई है। फिलहाल हालात ये हैं कि दिल्ली में हर जगह कूड़ा दिखता है। हमारी प्राथमिकता सबसे पहले इसी से निपटना होगी। लैंडफिल साइट 15 साल में नहीं हटाई गई तो इसका कारण भ्रष्टाचार है। पांच साल खत्म होने से पहले ही कूड़े के पहाड़ गायब करने का वादा है। पार्किंग की समस्या कुप्रबंधन से उपजी है। ठेकेदार इलाका बढ़ा लेता है, इससे दिक्कत होती है, इसे सही करेंगे। अतिक्रमण को लेकर पीडब्ल्यूडी की सड़कों पर मुहिम पहले से ही जारी है। अतिक्रमण पर सिसोदिया का कहना था कि अवैध निर्माण बड़ी समस्या है। करीब 40% निर्माण एमसीडी के कागजों में है ही नहीं। इसे कानूनी रूप देना होगा। कॉलोनी के हिसाब से मैप बनाए जाएंगे। सिस्टम बनाएंगे कि अगर पहले से कुछ नमूने वाले नक्शे डाल दें तो लोग अपने प्लॉट साइज के हिसाब से नक्शा चुन लेंगे और नक्शा पास हो जाएगा।केंद्र से पैसा नहीं आ रहा है। हालांकि ईमानदारी से कलेक्शन करने से दिल्ली का बजट बेहतर हुआ है, वैसे ही निगम में भी कलेक्शन बेहतर करेंगे। भ्रष्टाचार खत्म होगा तो आर्थिक स्थिति अपने आप सुधर जाएगी। निगम में सफाईकर्मियों को स्थायी करने का मुद्दा भी हमारे एजेंडे में है। कर्मचारियों को समय पर वेतन देने के अलावा सफाई करने वालों को पक्का करने का वादा किया गया है। लीडर पैसा खाना बंद कर दें, नीचे कोई भ्रष्टाचार करे तो उस पर कार्रवाई हो। दिल्ली में भी यही हुआ कि ऊपर के स्तर पर भ्रष्टाचार बंद हो गया तो नीचे भी डर पैदा हो गया। दिल्ली डेवलपमेंट अथॉरिटी और नगर निगम की नाकामी है कि आधी दिल्ली के लिए कागजों पर कोई बाजार नहीं है। हर कॉलोनी में बाजार हैं, लेकिन उन्हें कागज पर स्वीकार नहीं किया गया। एमसीडी इन्हें मंजूर नहीं करेगी।

एक-एक करते बीजेपी ने कार्ड खेले, लेकिन चला कोई नहीं

नतीजों से साफ है कि निगम चुनाव में इस बार साफ-सफाई और कूड़े के ढेर का मुद्दा ही हावी रहा। बीजेपी की तरफ से बहुत कोशिश की गई कि कथित शराब घोटाले के लिए मनीष सिसोदिया और हवाला कांड में फंसे सत्येंद्र जैन के जेल के वीडियो रिलीज कर आप के भ्रष्टाचार का मुद्दा बनाया जाए। चुनाव के पहले दोनों ओर से तरह-तरह के आरोप-प्रत्यारोप लगाए गए। लेकिन अंत में केजरीवाल का कूड़े को लेकर लगाया गया आरोप ही चला। फिर एमसीडी में भ्रष्टाचार को लेकर जनता का आक्रोश भी उभरा।

दिल्ली बीजेपी में नेतृत्व का संकट

जिस बीजेपी का पूरे देश में सिक्का चलता है, उसीको देश की राजधानी दिल्ली में एक बार फिर आम आदमी पार्टी से करारी शिकस्त मिली है। विधानसभा चुनावों में बीजेपी 24 साल से सत्ता से बाहर है, वहीं 15 साल की सत्ता के बाद निगम से भी पार्टी एग्जिट हो गई है। बीजेपी का सारे प्रयोग असफल हो रहे हैं। दिल्ली में पुरानी पीढ़ी के नेताओं में साहिब सिंह वर्मा, विजय गोयल, हर्षवर्धन रहे हैं। अपने उभार के बाद से ही केजरीवाल दिल्ली के सबसे बड़े चेहरे बने हुए हैं। 2020 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने पूर्वांचल से आने वाले सांसद मनोज तिवारी को जिम्मेदारी दी, उन्हें अध्यक्ष भी बनाया गया। पार्टी की कोशिश थी कि पूर्वांचल से आने वाले प्रवासियों के जरिए उस वोट बैंक को साधकर चुनावी नैया पार लगाई जाए, लेकिन ये कवायद नाकाम रही थी।

कांग्रेस के सामने अस्तित्व बचाने की लड़ाई

शीला दीक्षित के 2013 में चुनाव हारने के साथ कांग्रेस जो गिरना शुरू हुई, वह अब अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करती दिखाई दे रही है। 2020 से लेकर अब तक अनिल चौधरी दिल्ली कांग्रेस की कमान संभाल रहे हैं। जब से उन्हें कमान दी गई है, तब से दिल्ली कांग्रेस के दूसरे बड़े नेता अजय माकन, अरविंद सिंह लवली, सुभाष चोपड़ा, संदीप दीक्षित नाराज चल रहे हैं। 2020 का विधानसभा चुनाव हो या फिर अभी का निगम चुनाव, दिल्ली कांग्रेस न तो कोई मुद्दा गढ़ पाई है, न ही कोई ऐसा चेहरा है, जो दिल्ली की जनता के दिल में जगह बना पाया।